इटली की लोक कथाऐं–1

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title : Italy Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Italy-1)
Cover Page picture: Pisa's Leaning Tower, Italy
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2014
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

इटली की लोक कथाऐं–1 7

1 छोटा निडर जौन 9

2 तीन डैक का जहाज 16

3 एक आदमी जो केवल रात को बाहर निकलता था 34

4 और सात 41

5 बिना आत्मा का शरीर 54

6 पैसा परमेश्वर है 66

7 एक छोटा चरवाहा 73

8 एक छोटी लड़की जो नाशपाती के साथ बेची गयी 84

9 सॉप 92

10 तीन किले 104

11 एक राजकुमार जिसने मेंढकी से शादी की 115

12 तोता 123

13 बारह बैल 136

14 एक पागल और एक चालाक 145

15 कैनेरी राजकुमार 152

16 राजा किन 169

17 जिद्दी आत्माऐं 183

18 मरजोरम का बर्तन 185

19 बिलियर्ड खेलने वाला 194

20 जानवरों की भाषा 203

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाऐं–2

इटली देश यूरोप महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम की तरफ भूमध्य सागर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराने समय में यह एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। रोमन साम्राज्य अपने समय का एक बहुत ही मशहूर राज्य रहा है। उसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है – करीब **3000** साल पुरानी। इसका रोम शहर **753** बीसी में बसाया हुआ बताया जाता है पर यह इटली की राजधानी **1871** में बना था। इटली में कुछ शहर बहुत मशहूर हैं – रोम, पिसा, फ्लोरैन्स, वेनिस आदि। यहॉ की टाइबर नदी बहुत मशहूर है। यूरोप में लोग केवल लन्दन, पेरिस और रोम शहर ही घूमने जाते हैं।

रोम में रोम का कोलोज़ियम और वैटिकन सिटी में वहॉ का अजायबघर सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं। पिसा में पिसा की झुकती हुई मीनार संसार के आदमी द्वारा बनाये गये आठ आश्चर्यो में से एक है। इटली का वेनिस शहर नहरों में बसा हुआ एक शहर[1] है। इस शहर में अधिकतर लोग इधर से उधर केवल नावों से ही आते जाते हैं। यहॉ कोई कार नहीं है कोई सड़क पर चलने वाला यातायात का साधन नहीं है, केवल नावें हैं और नहरें हैं। शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि असल में वेनिस शहर कोई शहर नहीं है बल्कि एक सौ अठारह द्वीपों को पुलों से जोड़ कर बनाया गया जमीन का एक टुकड़ा है इसलिये ये नहरें भी नहरें नहीं हैं बल्कि समुद्र का पानी है और वह समुद्र का पानी नहर में बहता जैसा लगता है।

इटली का रोम कैसे बसा? कहते हैं कि रोम को बसाने वाला वहॉ का पहला राजा रोमुलस था। रोमुलस और रेमस दो जुड़वॉ भाई थे जो एक मादा भेड़िया का दूध पी कर बड़े हुए थे। दोनों ने मिल कर एक शहर बसाने का विचार किया पर बाद में एक बहस में रोमुलस ने रेमस को मार दिया और उसने खुद राजा बन कर **7** अप्रैल **753** बीसी को रोम की स्थापना की। इटली के रोम शहर में संसार का मशहूर सबसे बड़ा कोलोज़ियम[2] है जहॉ पॉच हजार लोग बैठ सकते हैं। पुराने समय में यहॉ लोगों को सजाऐं दी जाती थीं।

इटली के अन्दर वैटीकन सिटी है जो ईसाई धर्म के कैथोलिक लोगों का घर है पर यह एक अपना अलग ही देश है। वहॉ इसके अपने सिक्के और नोट हैं। इसकी अपनी सेना है। पोप इस देश का राजा है। इसका अजायबघर बहुत मशहूर है। यह संसार का सबसे छोटा देश है क्षेत्र में भी और जनसंख्या में भी – केवल आठ सौ बयालीस आदमी केवल चार वर्ग मील के क्षेत्र में बसे हुए।

इटली की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं। इटली की सबसे पहली लोक कथाऐं **1353** में लिखी गयी थीं दूसरी **1550** में और तीसरी **1634** में लिखी गयी थी।[3] इतालो कैलवीनो[4] का लोक कथाओं का यह संग्रह जिसमें से हमने ये लोक कथाऐं ली हैं इटैलियन भाषा में **1956** में संकलित कर के प्रकाशित किया गया था। इनका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद **1962** में छापा गया। उसके बाद सिलविया मल्कही[5] ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1975** में प्रकाशित किया। फिर मार्टिन ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1980** में किया। ये लोक कथाऍ हम मार्टिन की पुस्तक से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये यहॉ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] City of Canals

[2] Colosseum

[3] There are three the earliest, main and very famous books from Italy – Decamerone (1353 – first translation by John Payne published in 1886), Nights of Straparola (1550), Pentamerone (1634),

[4] "Italian Folktales" by Italo Calvino, 1965. This book was translated by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 300 p.

[5] Sylvia Mulcahy

इतालो ने इस पुस्तक में दो सौ लोक कथाऐं संकलित की हैं। हमने उन दो सौ लोक कथाओं में से एक सौ पच्चीस लोक कथाऐं चुनी हैं। फिर भी क्योंकि वे बहुत सारी लोक कथाऐं हैं इसलिये वे सब पढ़ने की आसानी के लिये एक ही पुस्तक में नहीं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पुस्तक में लिखी हुए कम से ही यहॉ दी गयीं हैं। इस पुस्तक के पहले संकलन यानी "इटली की लोक कथाऐं–**1**" में इतालो की पुस्तक की **1–23** नम्बर की **20** कथाऐं दी जा रही हैं।

1 छोटा निडर जौन[6]

एक बार की बात है कि इटली के एक शहर में एक बहुत ही निडर लड़का रहता था। उसका नाम था जौन। वह किसी से डरता नहीं था इसलिये सब उसको छोटा निडर जौन कह कर बुलाते थे।

एक बार उसको दुनियॉ देखने की बहुत इच्छा हुई तो उसने कुछ पैसे लिये और दुनियॉ देखने निकल पड़ा। चलते चलते वह एक सराय में आया और वहॉ आ कर उसने सराय के मालिक से खाना और रात भर रहने के लिये की जगह मॉगी।

सराय का मालिक बोला — "आज तो पूरी सराय भरी हुई है। कोई जगह खाली नहीं है पर अगर तुमको डर न लगे तो मैं तुम्हें एक जगह ऐसी बता सकता हूॅ जहॉ तुम आराम से ठहर सकते हो।"

छोटा निडर जौन बोला — "नहीं नहीं, मुझे डर नहीं लगता। मैं क्यों डरूॅगा? तुम मुझे जगह बताओ।"

सराय का मालिक बोला — "लोग तो उस महल के बारे में सुन कर ही कॉप जाते हैं क्योंकि वहॉ अभी तक जो भी गया वहॉ से ज़िन्दा वापस लौट कर नहीं आया। जो वहॉ बड़ी बहादुरी से रात

[6] Dauntless Little John. Tale No 1.

गुजारने जाते हैं सुबह को वहॉ फ्रायर्स[7] केवल उस आदमी की लाश लाने के लिये ही जाते हैं।"

जौन बोला — "कोई बात नहीं, मैं वहॉ जाऊँगा। तुम मुझे बस वह जगह बता दो कि वह जगह है कहॉ।"

सराय के मालिक ने उसको वह जगह बता दी और उसको एक लैम्प दे दिया। जौन ने उससे लैम्प लिया, पीने के लिये एक बोतल शराब ली और खाने के लिये एक सौसेज[8] लिया और सीधा उस महल की तरफ चल दिया।

आधी रात को वह अपना खाना खाने के लिये खाने की मेज पर बैठा कि तभी उसने चिमनी से आती हुई एक आवाज सुनी — "क्या मैं इसे नीचे फेंक दूँ?"

जौन लापरवाही से बोला — "हॉ हॉ फेंक दो।"

तभी चिमनी में से अँगीठी के ऊपर एक आदमी की टॉग आ गिरी। जौन ने एक गिलास शराब पी।

कुछ पल बाद वही आवाज फिर बोली — "क्या मैं इसे नीचे फेंक दूँ?"

---

[7] Friars are the men of mendicant Christian religious order. They are different from monks as they take vow to live in poverty, chastity and obedience in service to society, rather for ascetism and devotion whereas monks live in self-sufficient community and work in a small area. Friars work among lay people of larger areas and subsist on donations and charity thus they roam around."

[8] Sausage is usually made from ground meat with a skin around it – traditionally made in a casing of intestine. See its picture above.

जौन ने फिर उसी लापरवाही से जवाब दिया — "हॉ हॉ फेंक दो।" और फिर एक और टॉग चिमनी में से अॅगीठी के ऊपर आ गिरी।

इसी तरह से वह आवाज पूछती रही और जौन उसको उसी लापरवाही से कहता रहा — "हॉ हॉ फेंक दो।"

आखिर वहॉ दो टॉगें और दो हाथ आ कर गिर गये और फिर एक धड़। जैसे ही वह धड़ नीचे आ कर गिरा दोनों बॉहें और दोनों टॉगें उस धड़ से जुड़ गयीं और वहॉ एक बिना सिर वाला आदमी उठ कर खड़ा हो गया।

फिर एक और आवाज आयी — "क्या मैं इसे भी नीचे फेंक दूँ?" और जौन ने उसको फिर उसी लापरवाही से जवाब दिया — "हॉ हॉ इसे भी फेंक दो, तुमसे कहा न।"

फिर एक सिर नीचे आ गिरा। नीचे गिर कर वह सिर कूदा और उस बिना सिर वाले धड़ पर जा कर लग गया। वह तो अब सचमुच में ही एक बहुत बड़े साइज़ का आदमी[9] बन गया था।

जौन ने उसकी तरफ अपना शराब का गिलास उठा कर कहा — "तुम्हारी तन्दुरुस्ती के लिये।" और वह गिलास उसने एक ही सॉस में खाली कर दिया।

वह बड़े साइज़ का आदमी बोला — "अपना लैम्प उठाओ और मेरे साथ आओ।"

[9] Translated for the word "Giant"

जौन ने अपना लैम्प तो उठाया पर वह वहॉ से हिला नहीं। इस पर वह आदमी बोला — "तुम आगे चलो।"

जौन बोला — "नहीं तुम आगे चलो।"

आदमी चिल्लाया — "मैं कहता हूँ कि तुम आगे चलो।"

जौन भी चिल्ला पड़ा — "तुम आगे चल कर मुझे रास्ता दिखाओ तभी तो मैं चलूँगा। मुझे क्या पता तुम मुझे किधर ले जाना चाहते हो।"

इस पर वह बड़े साइज़ का आदमी आगे आगे चल दिया और जौन रास्ते पर रोशनी दिखाता हुआ उसके पीछे पीछे चल दिया।

वे लोग उस महल के कमरों पर कमरे पार करते चले गये। इस तरह उन दोनों ने करीब करीब पूरा महल पार कर लिया। आखीर में जा कर उनको नीचे जाने के लिये एक सीढ़ी मिली। वे लोग उस सीढ़ी से नीचे उतर गये। सीढ़ी के आखीर में एक दरवाजा था।

आदमी ने जौन से कहा — "इसे खोलो।"

जौन बोला — "तुम खोलो।"

सो उस आदमी ने अपने कन्धे के धक्के से वह दरवाजा खोला तो उसके अन्दर भी नीचे जाने के लिये एक घुमावदार सीढ़ियॉ थीं। वह आदमी बोला — "चलो नीचे चलो।"

जौन फिर बोला — "तुम आगे चलो।"

सो वह आदमी फिर आगे आगे चला और जौन उसके पीछे पीछे चला।

सीढ़ियॉ उतर कर वे दोनों एक तहखाने में आ गये। उस तहखाने में पत्थर का एक टुकड़ा रखा था। आदमी ने कहा — "इसे उठाओ।"

जौन बोला — "यह कोई छोटा सा पत्थर नहीं है जिसको मैं उठा सकूँ। तुम उठाओ।"

उस आदमी ने उस बड़े से पत्थर को ऐसे उठा लिया जैसे वह कोई बड़ा सा पत्थर न हो कर पत्थर की गोली हो। उस पत्थर के नीचे सोने से भरे तीन बर्तन रखे थे।

वह आदमी बोला — "इन बर्तनों को ऊपर ले चलो।"

जौन बोला — "तुम ले कर चलो।"

उस आदमी ने एक एक कर के वे तीनों बर्तन उठाये और उनको ऊपर ले गया। फिर वे दोनों उन तीनों बर्तनों को ले कर उसी कमरे में आ गये जिसमें जौन पहले बैठा हुआ था और जिसमें अँगीठी लगी हुई थी।

वह आदमी बोला — "ओ छोटे जौन, अब इसका जादू टूट गया।" यह कहने के बाद उस आदमी की पहले एक टॉग निकली और चिमनी से उड़ कर बाहर चली गयी।

वह बोला — "इसमें से एक बर्तन तुम्हारा है।" फिर उसकी एक बॉह निकली और वह भी चिमनी से हो कर ऊपर चली गयी।

वह फिर बोला — "यह दूसरा बर्तन उन फ़ायर्स का है जो यह सोचते हुए कल सुबह तुम्हारे मरे हुए शरीर को लेने आयेंगे कि तुम

मर गये हो।" यह कहने के बाद उसकी दूसरी बॉह भी चिमनी से उड़ कर ऊपर चली गयी।

वह फिर बोला — "यह तीसरा बर्तन उस गरीब आदमी का है जो सबसे पहले यहॉ आयेगा।" इतना कहने के बाद उसकी दूसरी टॉग भी उड़ गयी और अब वह आदमी अपने धड़ पर बैठा रह गया।

वह फिर बोला — "यह महल तुम्हारा है तुम इसमें आराम से रहो।" यह कहने के बाद उसका धड़ भी उसके सिर से अलग हो कर चला गया।

अब केवल उसका सिर ही वहॉ रह गया। वह फिर बोला — "इस महल के मालिक और उनके बच्चे यहॉ से हमेशा के लिये चले गये हैं।" यह कह कर वह सिर भी चिमनी से हो कर बाहर निकल गया।

जब सुबह हुई तो बाहर शोर मचा। फ़ायर लोग यह सोच कर कि जौन तो अब तक मर गया होगा उसके मरे हुए शरीर को रखने के लिये एक ताबूत[10] ले कर आये थे पर वहॉ तो उन्होंने जौन को खिड़की पर

खड़े हो कर अपना पाइप पीते देखा तो वे तो आश्चर्य में पड़ गये।

[10] Translated for the word "Coffin". See its picture above

जौन ने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी और उनको उनका सोने से भरा बर्तन दे दिया। इस तरह जो फ़ायर्स जौन की लाश ले जाने आये थे वे सोने से भरा बर्तन पा कर बहुत खुश हुए।

सोने से भरा वह तीसरा बर्तन उस गरीब आदमी को दे दिया गया जो वहॉ सबसे पहले आया।

जौन उस महल में बहुत साल तक रहा और उस सोने को इस्तेमाल करता रहा। पर एक दिन उसने अपने पीछे देख लिया तो उसको अपनी परछॉई दिखायी दे गयी। उसको देख कर वह इतना डर गया कि वहीं मर गया।

2 तीन डैक का जहाज[11]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब पति पत्नी थे जो देश की बस्ती से काफी बाहर की तरफ रहते थे। उनके एक बच्चा हुआ पर वहॉ आस पास में कोई ऐसा आदमी नहीं रहता था जो उस बच्चे के बैप्टाइज़ेशन के समय उसका गौडफादर[12] बन सकता।

वे लोग शहर भी गये पर वहॉ भी वे किसी को नहीं जानते थे। और बिना गौडफादर के वे अपने बच्चे को बैप्टाइज़ भी नहीं करा सकते थे।[13] वे शहर से नाउम्मीद हो कर लौटने ही वाले थे कि उन्होंने चर्च के दरवाजे पर एक आदमी बैठा देखा जिसने एक काला शाल ओढ़ रखा था।

उन्होंने उससे भी पूछा — "जनाब, क्या आप मेरे इस बेटे के गौडफादर बनेंगे?" वह आदमी राजी हो गया और इस तरह उनके बच्चे का बैप्टाइज़ेशन हो गया।

बैप्टाइज़ेशन करा कर जब वे चर्च से बाहर निकले तो उस अजनबी ने कहा — "मुझे अब अपने गौडसन को कोई भेंट भी तो देनी चाहिये न, तो लो यह बटुआ लो। इस बटुए के पैसे को तुम इसका पालन पोषण करने में और इसको पढ़ाने लिखाने में खर्च

[11] The Ship With Three Decks. Tale No 3. A folktale from Ligure di Ponente, Italy, Europe.
[12] A godfather is a male godparent in many Christian traditions or a man arranged to be the legal guardian of a child in case the parents die before adulthood or the age of maturity.
[13] Baptization is a religious ceremony for a Christian child to be a Christian, and in this ceremony a Godfather has to be there. This ceremony is performed normally in a church.

करना और जब यह पढ़ना सीख जाये तो इसको यह चिट्ठी दे देना।"

बच्चे के माता पिता बच्चे के गौडफादर की यह भेंट देख कर बड़े आश्चर्यचकित हुए। इससे पहले कि वे उसको धन्यवाद देते या उसका नाम पूछते वह आदमी तो वहॉ से गायब ही हो गया।

उसके जाने के बाद उन्होंने वह बटुआ खोल कर देखा तो वह तो सोने के क्राउन[14] से भरा हुआ था। उनको उस पैसे को उस बच्चे की पढ़ायी लिखायी पर खर्च करना था।

जब उसने पढ़ना लिखना सीख लिया तो उसके पिता ने उसे उसके गौडफादर की दी हुई चिट्ठी दे दी।

उस चिट्ठी में लिखा था — "प्रिय गौडसन, मैं अपने देश से निकाले जाने के बाद अपनी राजगद्दी फिर से वापस लेने जा रहा हूॅ। मुझे एक ऐसे आदमी की जरूरत है जो मेरे बाद मेरा राज्य सॅभाल सके। जब तुम यह चिट्ठी पढ़ लो तो तुम अपने गौडफादर के पास आ जाना।" – इंगलैंड का राजा।

बाद में – जब तुम मेरे पास आ रहे हो तो रास्ते में एक भेंगे आदमी से बचना, एक लंगड़े आदमी से बचना और किसी भी बाल और खाल के रोगी से बचना।[15]

[14] Gold Crowns – currency in use in those times

[15] Beware from a person who has squint in his eyes, who is lame and who has a mangy character – means any kind of skin disease in which hair on head is lost.

उस नौजवान ने अपने माता पिता से कहा — "पिता जी मैं चलता हूँ। अब मुझे अपने गौडफादर के पास जाना है। उन्होंने मुझे बुलाया है।"

कुछ दिनों तक चलने के बाद उसको एक यात्री मिला तो उस यात्री ने उस नौजवान से पूछा — "ओ छोटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

"इंगलैंड।"

"अच्छा? मैं भी वहीं जा रहा हूँ। तो चलो हम लोग साथ साथ ही चलते हैं।"

तभी उस नौजवान ने उस यात्री की आँखें देखीं तो उसने देखा कि उसकी एक आँख पूर्व की तरफ देख रही थी और दूसरी आँख पश्चिम की तरफ।

उसको लगा कि यह वही भेंगा आदमी था जिसके बारे में राजा ने उसको रास्ते में सावधान रहने के लिये कहा था इसलिये उसे इस आदमी के साथ नहीं रहना चाहिये। रुकने की पहली जगह आते ही उसने बहाना बना कर दूसरी सड़क ले ली।

कुछ और आगे जाने पर उसे एक और यात्री मिला। वह एक पत्थर पर बैठा था। इस यात्री ने भी इस नौजवान से पूछा — "क्या तुम इंगलैंड जा रहे हो? अगर ऐसा है तो हम लोग साथ साथ चलते हैं क्योंकि मैं भी उधर ही जा रहा हूँ।"

इतना कह कर वह अपने पत्थर से उठा और एक छड़ी के सहारे लँगड़ा कर चलने लगा। नौजवान ने सोचा — "अरे यह तो

लंगड़ा है। मुझे इसका भी साथ छोड़ देना चाहिये। मेरे गौडफादर ने मुझे ऐसे आदमी से भी बचने के लिये कहा है।"

सो उसने वहॉ से भी अपनी सड़क बदल ली और उसको वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गया।

कुछ दूर चलने के बाद उसको एक और यात्री मिला। उसकी ऑखें उसकी टॉगों की तरह बिल्कुल ठीक थीं। उसको उसके कोई सिर की खाल की बीमारी भी नजर नहीं आ रही थी। उसके सिर पर तो अच्छे घने काले बाल थे।

पर क्योंकि वह अजनबी भी इंगलैंड जा रहा था सो वे दोनों साथ साथ चल दिये। फिर भी वह उससे कुछ डरा डरा सा ही रहा।

रास्ते में वे सोने के लिये एक सराय में रुके। अपने साथी से डर कर उस नौजवान ने अपना बटुआ और राजा की दी हुई चिट्ठी निकाली और सॅभाल कर रखने के लिये सराय के मालिक को दे दी।

रात को जब सब सो रहे थे तो वह अजनबी उठा और सराय के मालिक के पास बटुआ, चिट्ठी और घोड़ा मॉगने गया। सराय के मालिक ने समझा कि वे दोनों साथ साथ थे सो उसने उसको तीनों चीज़ें दे दीं।

सुबह को जब वह नौजवान उठा तो वह वहॉ अकेला था। उसके पास पैसे भी नहीं थे, चिट्ठी भी नहीं थी और उसका घोड़ा भी नहीं था। वह पैदल था।

पूछने पर सराय के मालिक ने सफाई दी कि तुम्हारा नौकर रात को मेरे पास आया था और वह तुम्हारा सब सामान माँग कर ले गया और चला गया।

सो अब वह नौजवान पैदल ही चल दिया। कुछ दूर आगे चल कर सड़क के एक मोड़ पर एक खेत में लगे एक पेड़ से बँधा उसको अपना घोड़ा दिखायी दे गया।

वह उस घोड़े को वहाँ से खोलने ही वाला था कि पेड़ के पीछे से उसका वह रात वाला साथी निकल आया। उसके हाथ में एक पिस्तौल थी।

वह बोला — "अगर तुम यहीं इसी वक्त मरना नहीं चाहते तो तुम मेरे नौकर बन जाओ और तुम्हारी बजाय मैं इंगलैंड के राजा के गौडसन बनने का नाटक करूँगा।"

यह कहने के बाद ही उसने अपने काले बालों की विग अपने सिर से हटा दी तो उस नौजवान को उसका खुजली की बीमारी से ढका सिर दिखायी दे गया।

उस नौजवान के पास उसकी बात मानने के अलावा अब और कोई चारा नहीं था सो वह उसकी बात मान कर उसके साथ उसका नौकर बन कर चल दिया। वह आदमी घोड़े पर सवार था और वह नौजवान उसके पीछे पीछे पैदल जा रहा था।

आखिर वे इंगलैंड पहुँचे। राजा ने उस खुजली वाले आदमी का खुले दिल से स्वागत किया। उसको लगा कि वही उसका गौडसन

था सो उसको उसने अपने गौडसन की तरह से रखा और असली गौडसन को घुड़साल में अपने घोड़ों की देखभाल के लिये नौकर रख लिया गया।

पर उस खुजली वाले यात्री को तो उस नौकर को भगाना था। उसको यह मौका भी जल्दी ही मिल गया।

एक दिन राजा ने अपने नकली गौडसन से कहा — "अगर तुम मेरी बेटी को एक जादूगर से छुड़ा दो तो मैं उसकी शादी तुमसे कर दूँगा।

किसी ने उसके ऊपर जादू कर के उसको एक टापू पर रखा हुआ है। इस काम में बस एक मुश्किल है कि जो कोई भी उसको आजाद कराने गया है वह फिर ज़िन्दा वापस नहीं आया।"

उस खुजली वाले यात्री ने तुरन्त ही जवाब दिया — "आप मेरे नौकर को भेज कर देखें वह जरूर ही उसको आजाद करा कर ले आयेगा।"

राजा ने तुरन्त ही उसके नौकर को यानी अपने असली गौडसन को बुलवाया और उससे पूछा — "क्या तुम मेरी बेटी को उस टापू पर से जादूगर से आजाद करा कर ला सकते हो?"

"आपकी बेटी? कहाँ है आपकी बेटी राजा साहब?"

राजा ने फिर कहा — "वह एक टापू पर है। एक जादूगर उसको उठा कर ले गया था। पर मैं तुमको सावधान कर दूँ कि

अगर तुम उसके बिना यहॉ वापस लौट कर आये तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूँगा।"

यह सुन कर वह नौजवान वहॉ से चला गया और बन्दरगाह पर आ कर जहाज़ों को आते जाते देखता रहा। उसको यह ही पता नहीं था कि वह राजकुमारी के टापू पर जाये कैसे।

वह यह सब सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि एक बूढ़ा नाविक जिसकी सफेद दाढ़ी नीचे तक लटक रही थी उसके पास आ कर बोला — "मैं देख रहा हूँ कि तुम बहुत देर से यहॉ बैठे बैठे आते जाते जहाज़ों को देख रहे हो। क्या बात है कुछ परेशान हो?"

उस नौजवान ने उसको अपनी परेशानी बतायी तो वह बोला — "तुम राजा से तीन डैक का एक जहाज़ मॉग लो।"

वह नौजवान राजा के पास गया और उससे एक तीन डैक का जहाज़ मॉगा। राजा को यह सुन कर आश्चर्य तो हुआ कि उसने उससे तीन डैक का जहाज़ ही क्यों मॉगा पर फिर उसने उसे एक तीन डैक का जहाज़ दे दिया।

जब वह नौजवान बन्दरगाह पर जहाज़ का लंगर उठाने के लिये तैयार हो गया तो वह बूढ़ा नाविक वहॉ फिर से प्रगट हुआ और उससे बोला — "अब तुम इस जहाज़ का एक डैक चीज़ से, दूसरा डैक डबल रोटी के चूरे से और तीसरा डैक मरे हुए जानवरों के सड़े हुए मॉस से भर लो।" उस नौजवान ने ऐसा ही किया।

वह बूढ़ा फिर बोला — "जब राजा तुमसे यह कहे कि तुम अपने लिये कोई नाविक चुन लो तो तुम उससे कहना कि तुमको केवल एक ही नाविक चाहिये और फिर तुम मुझे चुन लेना।"

उस नौजवान ने फिर वैसा ही किया जैसा उस बूढ़े ने उससे करने के लिये कहा था। उसने उस बूढ़े की बतायी चीज़ों से अपना जहाज़ भर लिया और उस बूढ़े को अपना नाविक चुन लिया।

जब उसने बन्दरगाह छोड़ा तो सारा शहर उसको विदा करने के लिये किनारे पर खड़ा था। वे सब इस अजीब से सामान और केवल एक नाविक के जहाज़ को देखने के लिये खड़े थे।

वे लोग समुद्र में तीन महीने तक चलते रहे। आखिर एक रात को उन दोनों को एक लाइटहाउस दिखायी दिया। उन्होंने उस बन्दरगाह पर पहुँच कर अपना लंगर डाल दिया।

वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि वहाँ तो बहुत नीचे नीचे घर बने हुए हैं और बड़ा धीमा धीमा सा कुछ चल रहा था।

एक बारीक सी आवाज ने पूछा — "तुम्हारे जहाज़ पर क्या सामान है?"

बूढ़े नाविक ने जवाब दिया — "चीज़ के टुकड़े।"

तो किनारे से लोग बोले — "बहुत अच्छे, हमें इसी की तो जरूरत थी।"

असल में यह चूहों का टापू था। यहाँ सब चूहे ही चूहे रहते थे। उन्होंने कहा — "हम तुम्हारा सारा सामान खरीद तो लेंगे पर हमारे पास पैसे नहीं हैं ताकि हम तुम्हें उसकी कीमत दे सकें।

पर हाँ अगर तुमको कभी भी कुछ भी चाहिये तो बस तुम एक बार कह देना — "चूहो, ओ बढ़िया चूहो, आओ हमारी सहायता करो।" तो हम तुम्हारी सहायता के लिये आ जायेंगे।"

उस नौजवान और नाविक ने उस जहाज़ का तख्ता गिरा दिया और चूहों ने तुरन्त ही सारी चीज़ के टुकड़े जहाज़ से उतार लिये।

वहाँ से फिर वे लोग एक दूसरे टापू की तरफ चले। इत्तफाक से वहाँ पर भी वे रात को ही पहुँचे तो वहाँ भी उनको यह पता नहीं चला कि उस टापू पर क्या हो रहा है।

यह जगह पहली जगह से भी ज़्यादा खराब थी क्योंकि यहाँ न तो कोई घर था और न ही कोई पेड़। अँधेरे में से एक आवाज आयी — "तुम क्या सामान लाये हो?"

नाविक ने जवाब दिया — "हमारे पास डबल रोटी का चूरा है।"

"बहुत बढ़िया। बहुत बढ़िया। हमको भी यही चाहिये था।"

यह टापू चींटियों का था और यहाँ केवल चींटियाँ ही चींटियाँ रहती थीं। इनके पास भी डबल रोटी के

चूरे को खरीदने के लिये पैसे नहीं थे पर इन्होंने भी वही कहा — "हमारे पास डबल रोटी खरीदने के लिये पैसे तो नहीं हैं जो हम तुमको उसकी कीमत दे सकें।

पर हॉ अगर तुमको कभी भी कुछ भी चाहिये तो बस तुम एक बार कह देना — "चींटियो, ओ अच्छी चींटियो, आओ हमारी सहायता करो।" तो हम तुम्हारी सहायता के लिये आ जायेंगे।"

नाविक ने जहाज़ का तख्ता गिरा दिया और उन चींटियों ने जहाज़ में से डबल रोटी का चूरा उठाना शुरू कर दिया। वे सारी सुबह और सारी शाम उस डबल रोटी के चूरे को उतारने में लगी रहीं। और जहाज़ वहॉ से फिर आगे चल दिया।

इस बार वह जहाज़ एक ऐसे टापू पर रुका जो पहाड़ी था। वहॉ सब जगह ऊॅची ऊॅची पहाड़ियॉ थीं। ऊपर से एक आवाज आयी — "तुम क्या सामान ले कर आये हो?"

"मरे हुए जानवरों का सड़ा हुआ मॉस।"

"बहुत अच्छे बहुत अच्छे। हमको यही चाहिये था।"

कह कर एक बड़ा सा साया नीचे उतरा और जहाज़ के ऊपर आ कर बैठ गया। यह टापू गिद्धों[16] का था और यहॉ पर केवल लालची गिद्ध रहते थे। वे सारा का सारा मॉस जहाज़ से उठा कर अपने टापू पर ले गये। इनके पास भी देने के

[16] Translated for the word "Vulture". See its picture above.

लिये पैसे नहीं थे सो इन्होंने भी इन दोनों की सहायता करने का वायदा किया।

इन्होंने भी यही कहा — "हमारे पास पैसे तो नहीं हैं तुमको देने के लिये पर अगर तुमको कभी भी कुछ भी चाहिये तो बस तुम एक बार कह देना — "गिद्धो, ओ अच्छे गिद्धो, आओ हमारी सहायता करो।" तो हम तुम्हारी सहायता के लिये आ जायेंगे।"

गिद्धों से सहायता का वायदा ले कर वह नौजवान और बूढ़ा नाविक वहॉ से भी चल दिये। कई महीने तक चलते रहने के बाद वे अब उस टापू पर पहुँच गये जहॉ इंगलैंड के राजा की बेटी कैद थी। वे वहॉ उतर गये और एक लम्बी सी गुफा से हो कर एक बड़े महल के सामने के बागीचे में निकल आये।

उनको देख कर एक बौना उनके पास आया तो नौजवान ने उससे पूछा — "क्या इंगलैंड के राजा की बेटी यहीं कैद है?"

बौना बोला — "आइये और आ कर परी सबियाना[17] से पूछ लीजिये।" यह कह कर वह उनको महल में ले गया।

उस महल के फर्श सोने के थे और दीवारें क्रिस्टल की थीं। परी सबियाना सोने और क्रिस्टल के एक सिंहासन पर बैठी थी।

पूछने पर परी बोली — "यहॉ तो बहुत सारे राजा और राजकुमार अपनी सारी सेना ले कर इंगलैंड की राजकुमारी को छुड़ाने के लिये आये पर सब मारे गये।"

[17] Fairy Sabiana

इस पर वह नौजवान बोला — "मेरे पास तो केवल मेरी इच्छा और साहस है।"

परी बोली — "तब तुमको तीन इम्तिहान देने होंगे। अगर तुम उनमें फेल हुए तो तुम यहाँ से ज़िन्दा बच कर नहीं जा पाओगे।

पहला इम्तिहान – क्या तुम वह पहाड़ देख रहे हो? उसने मेरा सूरज का देखना रोक रखा है। कल सुबह तक तुम्हें उसे हटाना है। मैं जब कल सुबह उठूँ तो मुझे सूरज की किरनें अपने कमरे में आती दिखायी देनी चाहिये।"

इतने में ही एक बौना एक कुल्हाड़ी ले कर आ गया और उस नौजवान को उस पहाड़ के नीचे तक ले गया। उस नौजवान ने वह कुल्हाड़ी उठा कर एक बार उस पहाड़ में मारी तो उसका लोहे वाला टुकड़ा दो हिस्सों में टूट गया।

वह सोचने लगा कि अब वह उस पहाड़ को कैसे खोदे तभी उसको पहले टापू वाले चूहे याद आये। बस वह तुरन्त बोला — "चूहो, ओ बढ़िया चूहो, आओ हमारी सहायता करो।"

उसके मुँह से अभी ये शब्द पूरी तरीके से निकले भी नहीं थे कि उसके सामने के पूरे पहाड़ पर ऊपर से नीचे तक चूहे ही चूहे दिखायी दे रहे थे। बस वे उस पहाड़ को खोदते रहे और खोदते रहे और उसको चौरस बनाते रहे। आखिर वह सारा का सारा पहाड़ टूट कर नीचे बिखर गया।

अगली सुबह जब परी सबियाना सो कर उठी तो उसका सारा कमरा सूरज की किरनों से भरा हुआ था। उसने उस नौजवान को बधाई दी और बोली — "पर अभी तुम्हारा काम खत्म नहीं हुआ है।"

कह कर वह उसको महल के तहखाने में ले गयी जिसके बीच में एक कमरा था जिसकी छत किसी चर्च की छत जितनी ऊँची थी। उसमें मटर और मसूर के मिले जुले दानों का एक इतना बड़ा ढेर लगा था कि वह तहखाने की छत तक पहुँच रहा था।

परी सबियाना ने कहा — "तुम्हारे पास एक पूरी रात है उसमें तुम इन मटर और मसूर के दानों को दो अलग अलग ढेरों में लगा दो। भगवान तुम्हारी सहायता करे। अगर तुम्हारी मसूर का एक भी दाना मटर में रह गया या मटर का एक भी दाना मसूर में रह गया तो बस...।"

एक बौना उसको एक जलती हुई मोमबत्ती दे कर छोड़ गया और उसके साथ साथ परी भी चली गयी। मोमबत्ती धीरे धीरे जल कर खत्म हो गयी और वह नौजवान वहाँ बैठा यही सोचता रह गया कि वह यह काम कैसे करे। यह काम तो किसी भी इन्सान के लिये एक रात में करना नामुमकिन था।

तभी उसको दूसरे टापू पर रहने वाली चीटियों की याद आयी और वह बोला — "चींटियो, ओ अच्छी चींटियो, आओ हमारी सहायता करो।"

बस जैसे ही उसके मुँह से ये शब्द निकले कि सारा कमरा उन छोटी छोटी चींटियों से भर गया। वे उस ढेर पर चढ़ गयीं और अपने धीरज और मेहनत से उन्होंने मटर और मसूर दोनों को अलग अलग कर के उनके दो ढेर बना दिये।

अगले दिन जब परी ने देखा कि इस नौजवान ने तो यह काम भी कर दिया तो बोली — "पर मैंने भी अभी तक हार नहीं मानी है। अभी इससे भी ज़्यादा मुश्किल काम तुम्हारे इन्तजार में है।"

फिर वह उस नौजवान से बोली — "तुमको रात भर में मेरे लिये एक बैरल[18] लम्बी ज़िन्दगी का पानी[19] लाना पड़ेगा।"

लम्बी ज़िन्दगी के पानी का सोता एक बड़े ऊँचे पहाड़ की चोटी पर था जहाँ बहुत सारे जंगली जानवर रहते थे। उस पहाड़ पर चढ़ जाने का ही सवाल पैदा नहीं उठता था तो वहाँ से पानी लाना तो बहुत दूर की बात थी।

तभी उसको गिद्धों का ध्यान आया और उसने गिद्धों को याद किया — "गिद्धो, ओ अच्छे गिद्धो, आओ हमारी सहायता करो।" उसके मुँह से इन शब्दों के निकलने की देर थी कि सारा आसमान गिद्धों से भर गया।

---

[18] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter.

[19] Translated for the words "Water of Long Life".

उस नौजवान ने एक एक शीशी सब गिद्धों के गले में बॉध दी। वे सारे गिद्ध उन शीशियों को ले कर उस पहाड़ी की चोटी पर उड़ गये और उस लम्बी ज़िन्दगी के पानी के सोते के पानी से अपनी अपनी शीशियॉ भर लीं।

वे उन शीशियों को ले कर नीचे आ गये। नौजवान ने सारी शीशियों का पानी अपने पास रखे एक बैरल में उॅडेल दिया।

जब वह बैरल भर गया तो उसको भागते हुए पैरों की आवाज सुनायी पड़ी। उसने देखा कि परी सबियाना तो अपनी जान बचा कर भाग रही थी। उसके पीछे पीछे उसके बौने भी भाग रहे थे।

उधर इंगलैंड के राजा की बेटी महल से खुशी से चिल्लाती हुई भागी आ रही थी — "ओह, आखिर मैं सुरक्षित हूॅ। तुमने मुझे आजाद कर दिया राजकुमार। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

राजा की बेटी और लम्बी ज़िन्दगी का पानी दोनों को साथ ले कर वह नौजवान वापस जहाज़ पर लौटा। वहॉ वह बूढ़ा नाविक लंगर उठा कर वापस जहाज़ खेने के लिये तैयार था।

उधर इंगलैंड का राजा अपनी दूरबीन से रोज समुद्र की तरफ देखता था कि कब वह नौजवान उसकी बेटी को ले कर आयेगा।

कि एक दिन उसने एक जहाज़ समुद्र में आता देखा जिसके ऊपर इंगलैंड का झंडा लगा हुआ था। उसको देख कर वह बहुत खुश हुआ और तुरन्त बन्दरगाह की तरफ दौड़ गया।

पर जब उस खाल की बीमारी वाले ने उस नौजवान को राजा की बेटी के साथ सुरक्षित आते देखा तो उसने सोच लिया कि अब तो वह उसको मरवा कर ही दम लेगा।

राजा अपनी बेटी को देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उसके सुरक्षित वापस लौट कर आने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया।

जब राजा की वह दावत चल रही थी तो दो लोग उस नौजवान को लेने के लिये आये और उससे कहा कि तुम हमारे साथ अभी अभी चलो क्योंकि यह तुम्हारी ज़िन्दगी और मौत का मामला है।

वह बेचारा नौजवान उनके पीछे पीछे चल दिया। वे दोनों उसको एक जंगल में ले गये। वे दोनों आदमी उस खुजली की बीमारी वाले आदमी के किराये पर लिये गये आदमी थे। उन दोनों आदमियों ने अपने अपने चाकू निकाले और उसका गला काट दिया।

इस बीच दावत में राजा की बेटी उस नौजवान के बारे में बहुत चिन्तित थी क्योंकि जबसे वह नौजवान उन दो अजीब से दिखने वाले आदमियों के साथ गया था वापस ही नहीं लौटा था। उसे गये हुए काफी देर हो गयी थी।

उसको ढूँढने के लिये वह बाहर निकली तो उनका पीछा पीछा करते करते वह भी जंगल में पहुँच गयी। वहाँ उसने उस नौजवान का घावों से भरा शरीर देखा।

उधर राजकुमारी को बाहर जाता देख कर वह बूढ़ा नाविक भी उसके पीछे पीछे हो लिया। उसको कुछ खतरा लगा तो उसने वह लम्बी ज़िन्दगी के पानी का बैरल भी साथ रख लिया।

उस नौजवान को वहॉ उस हालत में पड़ा देख कर बूढ़े नाविक ने तुरन्त ही उसका शरीर उठा कर उस बैरल में डुबो दिया।

वह नौजवान तो तुरन्त ही पानी में से उछल कर बाहर आ गया। वह बिल्कुल ठीक था और ठीक ही नहीं बल्कि वह इतना सुन्दर भी हो गया था कि राजकुमारी ने उसके गले में अपनी बॉहें डाल दीं।

खुजली वाले आदमी को यह सब देख कर बहुत गुस्सा आया। उसने पूछा — "इस बैरल में क्या है?"

बूढ़े नाविक ने कहा — "उबलता हुआ तेल।"

बूढ़ नाविक ने एक और बैरल जिसमें तेल भरा था उस खुजली वाले आदमी को दे दिया। उस खुजली वाले आदमी ने उस तेल को उबलने के लिये उस बैरल को आग पर रखवा दिया और राजकुमारी से बोला — "अगर तुम मुझे प्यार नहीं करोगी तो मैं मर जाऊॅगा।"

कह कर उसने एक चाकू अपने आपको मार लिया और फिर उस उबलते तेल में गिर पड़ा। वह तुरन्त ही मर गया। जब वह तेल में कूदा तो उसके सिर की विग निकल गयी और उसका खुजली वाला सिर दिखायी दे गया।

उसको देखते ही राजा चिल्लाया — "अरे यह तो खुजली के सिर वाला आदमी है, मेरे दुश्मनों में से सबसे ज़्यादा बेरहम दुश्मन। आखिर इसको अपने कामों का फल मिल ही गया।"

फिर वह उस नौजवान से बोला — "इसका मतलब है कि तुम मेरे असली गौडसन हो वह नहीं। अब तुम ही मेरी बेटी से शादी करोगे और मेरे बाद इस देश के राजा बनोगे।"

3 एक आदमी जो केवल रात को बाहर निकलता था[20]

एक बार की बात है कि एक मछियारा था जिसकी तीन सुन्दर बेटियॉ थीं। उसकी तीनों बेटियॉ शादी के लायक थीं।

एक नौजवान ने उसकी तीनों बेटियों में से एक का हाथ शादी के लिये मॉगा। वह नौजवान क्योंकि केवल रात को ही बाहर निकलता था इसलिये लोग उसको शक की निगाहों से देखते थे।

इसी लिये उसकी सबसे बड़ी और बीच वाली बेटियों ने उससे शादी करने से साफ मना कर दिया पर उसकी तीसरी और सबसे छोटी बेटी उससे शादी करने के लिये तैयार हो गयी।

दोनों की शादी रात को ही हुई। जैसे ही वे दोनों अकेले रह गये तो पति ने पत्नी से कहा — "मैं तुमको एक भेद बताना चाहता हूॅ। मेरे ऊपर एक बहुत बुरा जादू पड़ा हुआ है जिससे मैं दिन में कछुआ बन जाता हूॅ और रात में मैं एक आदमी बन जाता हूॅ।

इस जादू को तोड़ने का केवल एक ही तरीका है। और वह यह कि पहले मैं शादी करूॅ, फिर मैं अपनी पत्नी को छोड़ कर

[20] The Man Who Came Out Only at Night. Tale No 4. A folktale from Italy from its Riviera de Ponente area, Italy.

दुनियॉ घूमूँ – रात में एक आदमी तरह और दिन में एक कछुए की तरह।

अगर मैं वापस आऊँ और पाऊँ कि मेरी पत्नी मेरे लिये इस सारा समय वफादार रही है और उसने मेरे लिये सारी मुश्किलों को सहा है तो फिर मैं हमेशा के लिये आदमी बन जाऊँगा।"

पत्नी बोली — "मैं आपको आपके ऊपर पड़ा जादू तोड़ने के लिये और फिर हमेशा आदमी के रूप में देखने के लिये जो भी आप कहेंगे वही करूँगी।"

इसके बाद पति तो दुनियॉ घूमने निकल पड़ा और उसकी पत्नी शहर में काम खोजने के लिये निकल पड़ी। रास्ते में उसको एक रोता हुआ बच्चा मिला तो उसने उस बच्चे की मॉ से कहा — "लाइये इसको मुझे दे दीजिये मैं इसको चुप करा देती हूँ।"

मॉ बोली — "बेटी तुम वह पहली आदमी हो जिसने मुझसे ऐसा कहा है। आज यह सुबह से ही रो रहा है चुप ही नहीं हो रहा।"

लड़की ने उसके कान में फुसफुसाया — "हीरे की ताकत से यह बच्चा हॅस जाये, नाचे और कूदे।" बस उसका यह कहना था कि बच्चे ने उसी समय से हॅसना, नाचना और कूदना शुरू कर दिया।

बच्चे की मॉ तो अपने बच्चे को हॅसता नाचता देख कर बहुत खुश हो गयी और उस लड़की को बहुत आशीर्वाद दे कर अपने हॅसते खेलते बच्चे को ले कर चली गयी।

वह लड़की और आगे चली तो एक बेकरी[21] की दूकान पर पहुँची। वहाँ जा कर वह उसकी मालकिन से मिली और बोली — "अगर आप मुझे अपनी बेकरी की दूकान में किसी काम पर रख लेंगी तो आप मुझसे बहुत खुश रहेंगी।"

यह सुन कर उस बेकरी की दूकान की मालकिन ने उसको अपनी दूकान में काम दे दिया और वह वहाँ डबल रोटियाँ बनाने लगी।

जब वह डबल रोटियाँ बनाती तो फुसफुसाते हुए बोलती — "हीरों की ताकत से जब तक मैं यहाँ काम करती हूँ तब तक सारा शहर केवल इसी बेकरी से डबल रोटी खरीदे।"

बस उस दिन से उसकी दूकान पर भीड़ लगी रहती और उसको पल भर का समय भी खाली नहीं मिलता। सारे लोग उसी दूकान से अपनी डबल रोटी खरीदते।

उस दूकान पर तीन नौजवान भी डबल रोटी लेने के लिये आते थे। उन तीनों ने उस लड़की को देखा तो वे तीनों ही उससे प्यार करने लगे।

उनमें से एक नौजवान ने एक दिन उससे कहा अगर तुम मुझे अपने साथ एक रात गुजारने दो तो मैं तुमको एक हजार फ्रैंक[22]

[21] Bakery shops normally bake the bread, biscuits, cake, bun etc. Most western households use baked goods in their staple food.

[22] Franc is the currency of France

दूँगा। दूसरे नौजवान ने कहा कि मैं दो हजार फेंक दूँगा और तीसरा नौजवान बोला कि मैं तीन हजार फेंक दूँगा।

लड़की ने तीसरे नौजवान से तीन हजार फेंक लिये और उसको रात को बेकरी की दूकान में बुलाया। जब वह आया तो उससे बोली — "मैं अभी आती हूँ एक मिनट में। ज़रा मैं आटे में खमीर[23] डाल आऊँ। जब तक तुम यहाँ खाली बैठे हो तब तक मेरे लिये यह आटा ही मल दो।"

उस नौजवान ने उसका आटा मलना शुरू किया तो वह तो मलता ही रहा, मलता ही रहा, मलता ही रहा। हीरे की ताकत से वह अपने हाथ आटा मलने से हटा ही नहीं सका और वह अगले दिन सुबह तक आटा ही मलता रहा।

सुबह को लड़की बोली — "सो आखिर तुमने अपना आटा मलने का काम खत्म कर ही लिया। मुझे अफसोस है कि तुमको आटा मलने में इतनी देर लग गयी।" और उस समय क्योंकि सुबह हो गयी थी इसलिये उसने उसको वहाँ से वापस भेज दिया।

फिर उसने दो हजार फेंक वाले नौजवान को रात को बुलाया और उससे उसने आग में धौंकनी चलाने के लिये कहा ताकि ओवन[24] की आग बुझ न जाये। वह बेचारा भी हीरे की ताकत से

[23] Translated for the word "Yeast"

[24] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance and most commonly used for cooking.

रात भर धौंकनी चलाता रह गया। उसके हाथ उस धौंकनी पर से हट ही नहीं पा रहे थे।

सुबह को वह लड़की कुछ अफसोस दिखाते हुए उससे बोली — "उॅह भला यह भी कोई तरीका है किसी से बर्ताव करने का? तुम तो मुझसे यहॉ मिलने आये थे और तुम तो यहॉ रात भर आग फूॅकते ही रह गये। मुझे बहुत अफसोस है।"

सुबह हो गयी थी सो उसने उसको भी घर वापस भेज दिया।

अगली रात उस लड़की ने एक हजार फेंक वाले नौजवान को बुलाया। जब वह आ गया तो उसने उससे कहा — "मुझे ज़रा आटे में खमीर मिलाना है तुम ज़रा दूकान का दरवाजा बन्द कर दो।"

वह नौजवान दरवाजा बन्द करने गया तो हीरे की ताकत से तो वह दरवाजा ही बन्द करता रह गया। वह दरवाजा रात भर बन्द ही नहीं हुआ।

वह जैसे ही उसको बन्द करने की कोशिश करता वह बार बार खुल जाता था। वह सारी रात दरवाजा बन्द ही नहीं कर सका। जब दिन निकल आया तब कहीं जा कर वह दरवाजा बन्द हुआ।

जब वह दरवाजा बन्द कर के लड़की के पास लौटा तो उसने पूछा — "तुमने ठीक से देख लिया है न कि दरवाजा बन्द हो गया या नहीं?"

नौजवान ने पलट कर देखा कि वाकई दरवाजा बन्द हुआ कि नहीं फिर कुछ सोच कर बोला — "हॉ हो गया।"

लड़की बोली — "तो अब तुम दरवाजा खोल कर बाहर जा सकते हो।"

लड़की के ऐसे बर्ताव से उन तीनों नौजवानों को बहुत गुस्सा आया। वे थाने में उसकी शिकायत करने गये।

उस दिन कुछ स्त्री पुलिस उस स्त्री की दूकान पर आयीं और उस लड़की के बारे में पूछा जिसने यह सब किया था। उन्होंने उस लड़की को पकड़ लिया और उसको थाने ले जाने लगीं।

तभी वह लड़की फिर फुसफुसायी — "हीरे की ताकत से ये स्त्रियॉ आपस में एक दूसरे को मारती ही रहें – सुबह सवेरे तक।"

वहॉ पर चार स्त्री पुलिस थीं। उस लड़की के यह फुसफुसाते ही वे चारों आपस में एक दूसरे को कान पर मारने लगीं और फिर सुबह तक मारती ही रहीं।

सुबह को उन सबके कान पिटते पिटते काशीफल की तरह से सूजे पड़े थे फिर भी वे एक दूसरे को मारे जा रही थीं। उनके हाथ ही नहीं रुक पा रहे थे।

जब वे स्त्री पुलिस उस लड़की को पकड़ कर थाने नहीं ला सकीं तो चार आदमी पुलिस उनको देखने के लिये भेजे गये। उस लड़की ने जब उन आदमी पुलिस को आते देखा तो वह फिर फुसफुसायी — "हीरे की ताकत से ये चारों पुलिस वाले मेंढक की तरह से कूदते रहें।"

उनमें से एक औफीसर तो उसी समय दूसरे तीन औफीसरों के सामने गिर पड़ा। दूसरा उसके ऊपर से हो कर थोड़ा आगे की तरफ चला तो तीसरे ने उसकी कमर पर हाथ रखा और उसके ऊपर कूद गया। चौथे ने भी वैसे ही किया और इस तरह से वे बहुत देर तक मेंढक की कूद का खेल[25] खेलते रहे।

इसी समय एक कछुआ वहॉ रेंगता हुआ आ गया। यह उस लड़की का पति था जो अपनी दुनियॉ की यात्रा पूरी कर के वापस आ गया था। जैसे ही उसने अपनी पत्नी को देखा तो वह आदमी बन गया।

लड़की की खुशी का वारापार न रहा। वे दोनों फिर पति पत्नी बन कर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

[25] Leap Frog game

4 और सात[26]

एक बार एक स्त्री थी जिसके एक बेटी थी। उसकी वह बेटी बहुत बड़ी और मोटी थी। जब उसकी मॉ उसके लिये मेज पर सूप लाती थी तो वह उसका पहला कटोरा पीती, फिर दूसरा, फिर तीसरा और फिर भी वह मॉगती ही रहती।

उसकी मॉ भी उसका कटोरा भरती ही रहती और गिनती रहती – "यह तीसरा", "यह चौथा"। जब वह लड़की सूप का सातवॉ कटोरा मॉगती तो उसकी मॉ बजाय उसका कटोरा भरने के उसके खाली कटोरे को उसके सिर पर मारती, चिल्लाती और कहती "और यह सात"।

एक बार एक बहुत ही अच्छे कपड़े पहने एक नौजवान उधर से गुजर रहा था कि उसने उस लड़की की मॉ को खिड़की से देखा कि वह सूप का कटोरा उस लड़की के सिर पर उलटा कर के मार रही थी और उससे कह रही थी "और यह सात"।

उस नौजवान को उस मोटी लड़की से प्यार हो गया। वह अन्दर चला गया और उसने पूछा — "सात क्या मॉ जी?"

[26] And Seven. Tale No 5. A folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe.

अपनी बेटी की इतनी भूख से शर्मिन्दा मॉ बोली — "सात ऊन कातने की तकली[27] बेटा। यह मेरी बेटी है जो ऊन कातने के पीछे इतनी पागल है कि उसने आज सुबह से भेड़ के ऊपर के बालों से सात तकली ऊन कात ली हैं।

क्या तुम सोच सकते हो कि उसने इस सुबह से सात तकली ऊन कात दी है और अभी और भी कातना चाहती है। उसी को रोकने के लिये मुझे उसे मारना पड़ा।"

वह नौजवान बोला — "अगर यह इतनी ही मेहनत करने वाली लड़की है तो आप इसे मुझे दे दें। मैं कोशिश करूँगा कि अगर आप सच बोल रही हैं तो मैं इससे शादी कर लूँ।"

मॉ ने अपनी उस बेटी को उस नौजवान को दे दिया और वह नौजवान उसको अपने घर ले गया। घर ले जा कर उसने उसको एक कमरे में बन्द कर दिया।

उस कमरे में बहुत सारी ऊन पड़ी थी कातने के लिये। उसको वहॉ ले जा कर वह नौजवान उससे बोला — "मैं समुद्री जहाज का कप्तान हूँ और अभी मैं एक समुद्री यात्रा पर जा रहा हूँ। अगर तुम यह सारी ऊन मेरे वापस आने तक कात दोगी तो मैं अपनी यात्रा पर से आ कर तुमसे शादी कर लूँगा।"

[27] Translated for the word "Spindle" – a round rod on a spinning wheel by which the thread is twisted and at the same time it is wounded upon. "Takalee" is for small work, while "Takuaa" is fixed in a Charakhaa. It is bigger in size and can contain much longer thread.

इस कमरे में बहुत सुन्दर सुन्दर कपड़े और जवाहरात भी रखे थे क्योंकि वह कप्तान बहुत अमीर था। उसने उससे यह भी कहा — "जब तुम मेरी पत्नी बन जाओगी तब ये सारी चीज़ें तुम्हारी हो जायेंगी।"

यह कह कर वह उसको उस ऊन के साथ वहीं छोड़ कर अपनी यात्रा पर चला गया।

अब क्या था। अब तो वह लड़की थी और वह कमरा था। वह रोज नयी नयी पोशाकें पहनती नये नये जवाहरात पहनती। उसके दिन तो बस ऐसे ही गुजरने लगे। वह उन कपड़ों और गहनों को पहन कर अपने को शीशे में देखती और अपनी तारीफ करती।

बाकी समय वह यह सोचने में गुजारती कि वह क्या खायेगी और फिर घर के नौकर उसके लिये वही बनाते जो वह उनसे बनाने के लिये कहती।

अभी तक उसने उस ऊन को हाथ तक नहीं लगाया था जो उसको कातनी थी और अब कप्तान के आने में केवल एक दिन ही बाकी रह गया था। लड़की ने उस कप्तान से शादी की सारी उम्मीदें छोड़ दीं और रो पड़ी।

वह अभी रो ही रही थी कि खिड़की से चिथड़ों का एक थैला उसके पैरों के पास आ कर गिर पड़ा।

उसने उस थैले की तरफ देखा तो वह कोई चिथड़ों का थैला नहीं था बल्कि वह तो एक बुढ़िया थी जिसकी लम्बी लम्बी पलकें

थीं। उसने लड़की से कहा — "डरो मत। मैं तुम्हारी सहायता करने आयी हूँ। मैं यह ऊन कातती हूँ और तुम इस ऊन की लच्छी बनाती जाओ।"

बच्चो, तुमने कहीं भी कोई भी इतनी तेज़ ऊन कातता नहीं देखा होगा जितनी तेज़ वह बुढ़िया ऊन कात रही थी। पन्द्रह मिनट के अन्दर अन्दर उसने वह सारी ऊन कात दी।

वह जितना ज़्यादा ऊन कातती गयी उसकी पलकें उतनी ही ज़्यादा लम्बी होती गयीं। पहले वे उसकी नाक से लम्बी हुईं, फिर उसकी ठोड़ी से लम्बी हुईं और फिर वे एक फुट लम्बी हो गयीं। फिर भी वह लम्बी होती ही जा रही थीं।

जब उसका काम खत्म हो गया तो लड़की ने पूछा — "मैम, मैं इसके बदले में आपको क्या दूँ?"

वह बुढ़िया बोली — "तुम्हें मुझे इसके बदले में कुछ देने की जरूरत नहीं है। बस जब तुम्हारी शादी की दावत हो तब मुझे उस दावत में बुला लेना।"

"पर मैं आपको बुलाऊँगी कैसे?"

बुढ़िया बोली — "बस तुम कोलम्बिया[28] बोल देना और मैं आ जाऊँगी। पर भगवान तुम्हारी सहायता करें अगर तुम मेरा नाम भूल गयीं तो इसका मतलब यह होगा कि जैसे मैंने कभी तुम्हारी सहायता की ही नहीं थी और तुम्हारा यह सब काम बेकार हो जायेगा।"

[28] Columbia – the name of the first old woman

अगले दिन कप्तान जब घर वापस आया तो उसने देखा कि उसकी तो सारी ऊन कती पड़ी है। कती हुई ऊन देखते ही वह तो बहुत खुश हो गया और उसके मुँह से निकला "वाह, बहुत बढ़िया। मुझे लगता है कि तुम ही वह लड़की हो जिसको मैं अपनी शादी के लिये ढूँढ रहा था।

लो ये कपड़े और जवाहरात लो। ये मैंने तुम्हारे लिये ही खरीदे थे। पर अभी मुझे एक और समुद्री यात्रा पर जाना है। तब तक तुम एक इम्तिहान और दे दो।

यह उस ऊन से दोगुनी ऊन है जो मैंने तुमको पहले दी थी। अगर जब तक मैं अपनी यात्रा से वापस आऊँ तब तक तुम इसको कात दो तो मैं तुमसे वहाँ से आ कर शादी कर लूँगा।" इतना कह कर वह नौजवान वहाँ से फिर चला गया।

उसके जाते ही जैसे उस लड़की ने पहले किया था वैसे ही वह अबकी बार भी करती रही। कप्तान के वापस आने तक वह कपड़ों और गहनों को पहन पहन कर देखती रही और अच्छे अच्छे खाने खाती रही जब तक कि कप्तान के आने का आखिरी दिन नहीं आ गया। और वह सारी ऊन कातने के लिये वहीं पड़ी रही।

जब कप्तान के आने का आखिरी दिन आया तो वह फिर रोने बैठ गयी। तभी कमरे की चिमनी के रास्ते से एक पोटली आ गिरी और उसके पैरों तक लुढ़कती चली आयी।

पहले की तरह से उस पोटली में से भी एक बुढ़िया निकल आयी। इस बुढ़िया के होठ नीचे तक लटक रहे थे।

इस बुढ़िया ने भी इस लड़की से कहा कि वह उसकी सहायता करने के लिये वहॉ आयी थी। उसने इससे पहले वाली बुढ़िया से भी ज़्यादा मेहनत और तेज़ी से काम किया।

जितना ज़्यादा वह ऊन कातती जाती थी उसके होठ उतने ही ज़्यादा नीचे को लटकते जाते थे। इस बुढ़िया ने वह सारी ऊन आधा घंटे में कात कर रख दी।

जब इस लड़की ने उस बुढ़िया से पूछा कि वह उसको इसके बदले में क्या दे तो इसने भी यही कहा कि उसको इसके बदले में कुछ देने की जरूरत नहीं है। बस जब उसकी शादी कप्तान से हो तब वह उसको अपनी शादी की दावत में बुला ले।

लड़की ने पूछा कि वह उसको कैसे बुलाये।

तो उस बुढ़िया ने भी वही जवाब दिया — "बस तुम मुझे कोलम्बरा[29] कह कर पुकार लेना मैं आ जाऊॅगी। पर मेरा नाम मत भूल जाना क्योंकि अगर तुम मेरा नाम भूल गयीं तो मेरा यह सब किया धरा बेकार हो जायेगा। और फिर तुमको इसका फल भुगतना पड़ेगा।" यह कह कर वह वहॉ से चली गयी।

अगले दिन कप्तान अपनी यात्रा से वापस आ गया। उस सारी ऊन को कता हुआ देख कर वह तो आश्चर्य में पड़ गया पर ऊन

[29] Columbara – the name of the second old woman

तो कत चुकी थी सो इसमें अब शक की तो कहीं कोई गुंजायश ही नहीं थी।

पर फिर भी उससे रहा नहीं गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "यह सब ऊन तुमने काती है?"

"हॉ मैंने अभी अभी अपना काम खत्म किया है।"

"तुम ये कपड़े और जवाहरात लो। मैंने ये भी तुम्हारे लिये ही लिये थे। अब अगर तुम यह तीसरा ढेर भी मेरे वापस आने तक कात दो तो मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि अबकी बार मैं तुमसे शादी जरूर कर लूँगा। यह ढेर उन दोनों ढेरों से कहीं ज़्यादा बड़ा है।"

इतना कह कर वह नौजवान अपनी तीसरी समुद्री यात्रा पर चला गया। इस लड़की ने इस बार भी वही किया जो पहली दो बार किया था। उसने अपना सारा समय नये नये कपड़े और गहने पहनने में और अपने आपको शीशे में देखने में और अच्छा अच्छा खाना खाने में बिता दिया और वह ऊन वहॉ ऐसे ही पड़ी रही।

कप्तान के आने से पहले दिन वह फिर रोने बैठ गयी। तभी कमरे की छत की नाली के छेद से फिर से एक फटे कपड़ों की पोटली उसके पैरों के पास आ गिरी और पहले की तरह से उस पोटली में से भी एक बुढ़िया निकल आयी।

इस बुढ़िया के आगे के दॉत बहुत आगे की तरफ निकले हुए थे। इस बुढ़िया ने भी आते ही ऊन कातनी शुरू कर दी। पर यह

बुढ़िया तो उन दोनों बुढ़ियों से भी ज़्यादा तेज़ी से ऊन कात रही थी जो उससे पहले उसकी ऊन कात कर गयी थीं।

जितनी ज़्यादा ऊन वह कातती जाती थी उसके दॉत उतने ही और ज़्यादा आगे की तरफ निकलते जाते थे। उसने वह सारी ऊन बहुत जल्दी ही खत्म कर दी।

जब बुढ़िया का काम खत्म हो गया तो इस लड़की ने इस बुढ़िया से भी पूछा कि वह उसको इस काम के बदले में क्या दे।

इस बुढ़िया ने भी वही कहा जो पहली दो बुढ़ियों ने कहा था कि अभी उसको कुछ भी देने की जरूरत नहीं है। बस केवल जब उसकी शादी कप्तान से हो तो वह उसको अपनी शादी की दावत में बुला ले।

पूछने पर कि वह लड़की उस बुढ़िया को अपनी शादी की दावत में कैसे बुलाये वह बुढ़िया बोली "बस तुम मुझे कोलम्बन[30] कह कर बुला लेना मैं आ जाऊॅगी। पर अगर तुम मेरा नाम भूल जाओगी तो बस समझ लेना कि जैसे तुमने मुझे पहले कभी देखा ही नहीं था।" यह कह कर वह बुढ़िया वहॉ से तुरन्त ही गायब हो गयी।

अगले दिन कप्तान अपनी समुद्री यात्रा से लौट आया और इतनी सारी ऊन कती देख कर तो उसने आश्चर्य से अपने दॉतों तले

[30] Columban – the name of the third old woman.

उँगली दबा ली। पर क्योंकि अब ऊन तो कती पड़ी थी इसलिये आज भी शक की कोई गुंजायश नहीं थी।

यह सब देख कर वह बोला — "अब हमारी तुम्हारी शादी होगी।" और उसने शादी की तैयारियाँ शुरू कर दीं। उसने अपनी शादी में शहर के सभी कुलीन लोगों को बुलाया था। शादी की तैयारियों में वह लड़की उन बुढ़ियों को बिल्कुल ही भूल गयी।

जिस दिन उसकी शादी होने वाली थी उस दिन सुबह उसको याद आया कि उसको तो उन तीनों बुढ़ियों को भी बुलाना था ज्न्हिोंने उसको ऊन कातने में सहायता की थी। पर जब वह उनके नाम याद करने लगी ता उनमें से तो उसको एक का भी नाम याद नहीं आया। वे उसके दिमाग से बिल्कुल ही निकल गये थे।

उसने अपने दिमाग पर बहुत ज़ोर डाला कि वे नाम उसको किसी तरह से याद आ जायें पर उसको तो उन तीनों में से एक का नाम भी याद नहीं आया।

वह हमेशा खुश रहने वाली लड़की दुख के सागर में डूब गयी। कप्तान ने यह भाँप लिया कि वह लड़की बहुत परेशान है तो उसने उससे पूछा — "क्या बात है तुम इतनी परेशान क्यों हो?"

पर वह उसको क्या बताती। जब कप्तान को उसके दुखी होने का कुछ पता न चल सका तो उसने सोचा कि शायद शादी का यह दिन ही ठीक नहीं है सो उसने अपनी शादी की तारीख उस दिन से बदल कर उसके अगले वाले दिन के लिये तय कर दी।

पर उसका अगला दिन तो और भी ख़राब था। और उसका अगला दिन, यानी शादी का दिन, कैसा था यह तो बताने की जरूरत ही नहीं है। कप्तान को अपनी शादी की तारीख़ फिर से बदलनी पड़ी।

पर जैसे जैसे दिन बीतते जाते थे वह लड़की और ज़्यादा दुखी और चुप सी होती जाती थी। उसके माथे पर सिकुड़नें पड़ी रहतीं जैसे वह कुछ सोच रही हो और उसको उसकी परेशानी का हल न मिल रहा हो।

कप्तान ने उसको हॅसाने की बहुत कोशिश की – उसको चुटकुले सुनाये, हॅसी की कहानियॉ सुनायीं पर उसकी कोई भी कोशिश उस लड़की को खुश न कर सकी।

अब क्योंकि वह उसको खुश नहीं कर सका तो एक दिन उसने शिकार पर जाने का प्रोग्राम बनाया। जब वह शिकार के लिये जंगल गया तो इत्तफाक से बीच जंगल में काफी ज़ोर का तूफान आ गया और वह उस तूफान में घिर गया। पास ही में उसको एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी सो उस तूफान से बचने के लिये वह उस झोंपड़ी में चला गया।

वह वहॉ पर अॅधेरे में खड़ा था कि उसने वहॉ कुछ आवाजें सुनी — "ओ कोलम्बीना, ओ कोलम्बरा, ओ कोलम्बन, मक्का का

दलिया[31] बनाने के लिये बर्तन आग पर रख दो। लगता है कि वह लड़की तो हमको अपनी शादी की दावत में बुलाने वाली नहीं है।"

यह सुन कर उसने पीछे मुड़ कर देखा तो वहॉ उसको तीन पतली दुबली बदसूरत बुढ़ियें[32] दिखायी दीं। उनमें से एक की पलकों के बाल जमीन तक गिरे हुए थे, तो दूसरी के होठ उसके पैरों तक आ रहे थे और तीसरी के ऊपर के दॉत इतने बड़े थे कि वे उसके घुटनों तक आ रहे थे।

अब उस कप्तान की कुछ कुछ समझ में आया कि उसकी होने वाली पत्नी दुखी क्यों थी। अब वह उसको ऐसा कुछ बता सकता था जिससे वह हॅस सके। और अगर वह इस बात पर भी न हॅस सकी तब फिर वह किसी बात पर भी नहीं हॅस सकेगी।

सो वह शिकार तो भूल गया और वहॉ से तुरन्त ही अपने घर की तरफ दौड़ चला। जा कर उसने तुरन्त उस लड़की को बुलाया और अपने पास बिठा कर कहा — "पता है आज क्या हुआ? बस तुम सुन लो जो मैं तुमको बताऊॅ। और देखो हॉ बीच में मत बोलना।

आज जब मैं जंगल गया तो वहॉ बहुत ज़ोर की बारिश आ गयी। और बारिश से बचने के लिये मैं एक झोंपड़ी में चला गया।

[31] Translated for the Italian dish "Polenta" – a kind of thick cooked paste of yellow cornmeal.
[32] Translated for the word "Crone"

वहॉ मैंने तीन जादूगरनियॉ[33] देखीं जिनमें से एक की पलकों के बाल जमीन पर लटक रहे थे, तो दूसरी के होठ उसके पैरों तक लटके हुए थे और तीसरी के दॉत उसके घुटनों तक लम्बे थे। और वे एक दूसरे को कोलम्बिया, कोलम्बरा और कोलम्बीना कह कर पुकार रही थीं।"

यह सुन कर उस लड़की का चेहरा तो वाकई चमक गया और वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी।

जब उसकी हॅसी थोड़ी सी रुकी तो वह बोली — "शादी की दावत की तैयारी करो। पर तुम मेरे ऊपर एक मेहरबानी और कर दो। क्योंकि तुमने उन तीन जादूगरनियों के नामों से मुझे हॅसाया है मैं उनको भी अपनी शादी की दावत में बुलाना चाहती हूॅ।"

"यह भी कोई पूछने की बात है। तुम उनको जरूर बुलाओ।" और फिर उस लड़की ने उनको अपनी शादी की दावत में बुलाया।

शादी की दावत के दिन उन तीनों के लिये अलग से एक गोल मेज सजायी गयी। वह मेज इतनी छोटी थी कि उन तीनों की ऑखों की लम्बी पलकों के बाल, लटकते होठ और बड़े बड़े दॉत कहॉ थे यह किसी को भी दिखायी नही दिये।

जब खाना खत्म हो गया तो कैप्टेन ने कोलम्बीना से पूछा — "आपकी पलकों के बाल इतने लम्बे क्यों हैं?"

[33] Translated for the word "Witches"

कोलम्बीना ने जवाब दिया — "बहुत ही बारीक धागा कातने की वजह से मेरी ऑखों पर बहुत ज़ोर पड़ता है इसी लिये वे इतने लम्बे हो गये हैं।"

फिर कैप्टेन ने कोलम्बरा से पूछा — "मैम, क्या मैं जान सकता हूँ कि आपके होठ इतने नीचे को लटके हुए क्यों हैं?"

कोलम्बरा बोली — "क्योंकि मैं जब धागा कातती हूँ तो अक्सर अपनी उँगली गीली करने के लिये अपने होठों पर हाथ फेरती रहती हूँ इसलिये वे लटकते जाते हैं।"

फिर कैप्टेन ने कोलम्बीना से पूछा — "और कोलम्बीना जी आप? आपके दाँत इतने लम्बे कैसे हो गये?"

कोलम्बीना बोली — "क्योंकि मुझे अक्सर धागे में पड़ी गाँठें अपने दाँतों से काटनी पड़ती हैं न, इसी लिये।"

"ओह अच्छा अच्छा।"

फिर वह अपनी पत्नी से बोला — "जाओ और एक धागा लपेटने वाली तकली ले कर आओ।"

जब वह तकली ले कर आयी तो उसने उसको वहीं आग में फेंक दिया और बोला — "अब से तुम कभी धागा नहीं कातोगी।"

इसके बाद वह मोटी लड़की खुशी खुशी कैप्टेन के साथ आराम से रही। उसको कातने के लिये फिर कभी धागा नहीं दिया गया।

5 बिना आत्मा का शरीर[34]

एक बार की बात है कि इटली में एक विधवा स्त्री रहती थी जिसके एक बेटा था। उसका नाम था जैक[35]। जब वह तेरह साल का हुआ तो वह घर छोड़ कर दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने जाना चाहता था।

उसकी मॉ ने उससे पूछा — "बेटा, तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि अभी दुनियॉ में जा कर तुम कुछ कर सकते हो? तुम अभी बच्चे हो। जब तक तुम इस लायक न हो जाओ कि हमारे घर के पीछे लगा पाइन का पेड[36] एक ही बार की ठोकर से गिरा सको तब तक तुमको बाहर नहीं जाना चाहिये।"

यह सुन कर जैक रोज सुबह उठ कर दौड़ता और दौड़ कर अपने दोनों पैरों से उस पाइन के पेड़ को मारता पर वह एक इंच भी हिल कर नहीं देता बल्कि वह खुद ही पीछे को पीठ के बल गिर पड़ता।

आखिर एक दिन जब उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर उस पेड़ को धक्का दिया और वह जमीन पर आ गिरा और उसकी जड़ें

[34] Body Without Soul. Tale No 6. A folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe.
[35] Jack – the name of the boy
[36] Pine trees are normally evergreen trees used as Christmas trees. They are of several types. See its one type above in picture.

हवा में दिखायी देने लगीं तो जैक तुरन्त ही भागा भागा अपनी मॉ के पास गया और बोला — "देखो मॉ, आज मैंने वह पाइन का पेड़ नीचे गिरा दिया।"

उसकी मॉ ने वह गिरा हुआ पाइन का पेड़ देखा तो बोली — "मेरे बेटे, अब तुम कहीं भी जा सकते हो और जो तुम्हारे मन में आये वह कुछ भी कर सकते हो।"

सो जैक ने अपनी मॉ को विदा कहा और दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने चल दिया। काफी दिनों तक चलने के बाद वह एक ऐसे शहर में आया जिसके राजा के पास एक घोड़ा था जिसका नाम था रौनडैलो[37]।

अभी तक उस घोड़े पर कोई सवारी नहीं कर सका था। लोग उस पर चढ़ने की बराबर कोशिश करते रहे पर वे उस पर अभी तक तो कभी चढ़ नहीं पाये थे। जब भी कोई उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता तो वह घोड़ा बार बार उसको नीचे गिरा देता था।

जैक भी उस घोड़े को देखने गया तो उसने उसको देखते ही पहचान लिया कि वह घोड़ा अपने साये से डरता था[38] सो जैक ने खुद उसके ऊपर चढ़ने का प्रस्ताव रखा। राजा ने उसको सावधानी बरत कर उस घोड़े पर चढ़ने की इजाज़त दे दी।

---

[37] Rondello – the name of the horse

[38] This is a similar incident shown in Mahaabhaarat Serial. Bheeshm in his adulthood controlled a horse in the same way – now which incident happened first?

वह उस घुड़साल में गया जहॉ पर वह घोड़ा बॅधा हुआ था। वहॉ उसने घोड़े से कुछ बात की, उसको थपथपाया और फिर अचानक ही उसके ऊपर कूद कर चढ़ गया और चाबुक मार कर उसको बाहर धूप में ले गया। इस तरह से न तो वह अपनी परछॉई ही देख सका और न ही वह अपने सवार को नीचे ही गिरा सका।

जैक ने घोड़े की लगाम आराम से पकड़ ली, अपने घुटनों से घोड़े को दबाया और उसको ले कर उड़ चला। पन्द्रह मिनट में ही वह घोड़ा उसका मेमने की तरह पालतू हो गया। पर वह केवल जैक का ही पालतू था। वह अभी भी किसी और को अपने ऊपर नहीं चढ़ने देता था।

उस दिन के बाद से जैक राजा के यहॉ काम करने लगा। राजा भी उसको इतना पसन्द करने लगा था कि राजा के दूसरे नौकर उससे जलने लगे। एक दिन कुछ नौकरों ने मिल कर उसको मारने का जाल बिछाया।

इस राजा के एक बेटी थी। जब वह बहुत छोटी थी तो उसको बिना आत्मा का शरीर[39] नाम का एक जादूगर उठा कर ले गया था और तबसे उसके बारे में किसी ने कुछ भी नहीं सुना था।

इस जाल के अनुसार वे नौकर लोग राजा के पास गये और बोले — "यह जैक अपनी बहुत डींगें हॉकता है तो क्यों न उसको राजकुमारी को आजाद कराने का काम सौंप दिया जाये।"

[39] Translated for the words "Body Without Soul" named sorcerer

राजा के यह बात समझ में आ गयी। उसने जैक को बुलाया और उसको राजकुमारी का सारा किस्सा बताया। जैक को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा के कोई बेटी भी थी।

ऐसा इसलिये हुआ कि जबसे उस जादूगर ने उस राजकुमारी को भगाया था तबसे किसी की यह हिम्मत नहीं हुई थी कि कोई उसके बारे में बात भी करे क्योंकि इस बात से राजा बहुत दुखी होता था।

कुछ दिन बाद तो राजा ने यहॉ तक कह दिया कि अगर कोई उसको वापस ला सकता है तो वापस ले आये नहीं तो उसकी बात भी करने की जरूरत नहीं है। उस दिन के बाद से राजा को शान्ति नहीं थी। इसलिये जैक को इस बात का कोई पता ही नहीं था।

जैक ने दीवार पर लगी हुई एक जंग लगी हुई तलवार मॉगी और अपने रौनडैलो पर सवार हो कर राजकुमारी की खोज में चल दिया।

जब वह जंगल पार कर रहा था तो वहॉ उसको एक शेर मिला। वह शेर उसको रुकने का इशारा कर रहा था। यह देख कर वह कुछ परेशान सा हो गया पर फिर भी वहॉ से उसको भागना भी अच्छा नहीं लगा सो वह अपने घोड़े पर से उतरा और उस शेर से पूछा कि वह उससे क्या चाहता था।

शेर बोला — "जैक, जैसा कि तुम देख रहे हो यहाँ हम केवल चार लोग हैं – एक मैं, एक कुत्ता, एक यह गरुड़[40] और एक यह चींटी।

हमारे पास यह एक मरा हुआ गधा है जिसे हम आपस में बाँटना चाहते हैं पर बाँट नहीं पा रहे हैं। क्योंकि तुम्हारे पास तलवार है इसलिये तुम इस जानवर को काट कर हम सबको हमारा हिस्सा आसानी से दे सकते हो।"

जैक ने गधे का सिर काटा और चींटी को दिया और बोला — "यह लो, इस सिर में तुम आराम से रह सकती हो और इसमें से अपना खाना भी खा सकती हो।"

फिर उसने गधे के खुर काटे और कुत्ते को दे दिये — "लो ये खुर तुम लो। तुम इन खुरों को चाहे जब तक चबा सकते हो।"

उसके बाद उसने गधे के शरीर के अन्दर का हिस्सा आँत आदि निकाले और गरुड़ को दे दिये — "लो गरुड़, तुम इस गधे का यह अन्दर का हिस्सा लो। तुम इनको पेड़ पर ले जा सकते हो और वहाँ बैठ कर आराम से खा सकते हो।"

बाकी बचा हिस्सा उसने शेर को दे दिया जो उन चारों में से उसको मिलना ही चाहिये था।

[40] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

फिर वह अपने घोड़े के पास लौट आया और उस पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिया कि उसने पीछे से किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना।

उसने सोचा — "ओह, लगता है कि गधे को बॉटने में मुझसे कहीं कोई गलती हो गयी है।" पर ऐसा कुछ नहीं था।

शेर बोला — "तुमने हमारा बहुत बड़ा काम किया है और तुमने यह काम बहुत ही न्यायपूर्वक किया है। जैसे एक अच्छा काम किसी दूसरे अच्छे काम का बीज होता है तो मैं तुमको अपना एक पंजा देता हूँ। तुम जब भी इसको पहनोगे तो यह तुमको दुनियॉ के सबसे ज़्यादा भयानक शेर में बदल सकता है।"

इस पर कुत्ता बोला — "मैं तुमको अपनी मूँछ का एक बाल देता हूँ। जब भी तुम इसको अपनी नाक के नीचे रखोगे तो तुम दुनियॉ के सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते बन जाओगे।"

इसके बाद गरुड़ बोला — "यह मेरे पंखों में से एक पंख ले जाओ जो तुमको दुनियॉ का सबसे बड़ा और ताकतवर गरुड़ बना देगा।"

चींटी बोली — "मैं तुमको अपनी एक छोटी सी टॉग देती हूँ। जब भी तुम इसको अपने शरीर पर रखोगे तो तुम एक चींटी बन जाओगे – इतनी छोटी सी चींटी कि तुमको कोई देख भी नहीं पायेगा – आतशी शीशे[41] से भी नहीं।"

[41] Translated for the word "Microscope"

जैक ने वे चारों चीज़ें ले लीं, चारों को धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दिया। उसे उन जानवरों की भेंटों पर विश्वास नहीं था कि वे काम करेंगी भी या नहीं।

यही सोचते हुए कि कहीं जानवरों ने उसके साथ कोई मजाक न किया हो वह आगे जा कर एक ऐसी जगह रुक गया जहॉ से वह उनको दिखायी नहीं दे सकता था।

वहॉ उसने एक एक कर के सब भेंटों को जॉचा – पहले वह शेर बना, फिर कुत्ता बना, फिर गरुड़ बना और फिर चींटी बना। सब कुछ जादू की तरह ठीक काम कर रहे थे। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ और आगे चल दिया।

जंगल के उस पार एक झील थी। जंगल पार कर के वह उस झील के पास आ गया। उस झील के किनारे पर ही उस लाश जादूगर का महल था।

वहॉ आ कर जैक ने अपने आपको गरुड़ में बदला और उड़ कर उस लाश जादूगर के महल के एक कमरे की एक बन्द खिड़की पर जा कर बैठ गया। वहॉ जा कर वह एक छोटी सी चींटी में बदल गया और उस कमरे की बन्द खिड़की से हो कर उस कमरे में घुस गया।

वह एक सुन्दर सा सोने का कमरा था जहॉ छत वाला एक पलंग पड़ा था और उस पलंग पर एक राजकुमारी सो रही थी। चींटी के रूप में ही वह राजकुमारी के ऊपर घूमने लगा।

वह उसके गाल पर भी गया। वह उसके ऊपर तब तक घूमता रहा जब तक कि वह जाग नहीं गयी। फिर उस लड़के ने अपने ऊपर से चींटी की वह छोटी टॉग हटा दी तो राजकुमारी ने अपने सामने एक बहुत सुन्दर नौजवान को खड़ा पाया।

यह सब देख कर वह आश्चर्य से कुछ बोलने ही वाली थी कि जैक ने अपने मुँह पर उँगली रख कर उसको चुप रहने का इशारा करते हुए कहा — "डरो नहीं। मैं तुमको यहॉ से आजाद कराने आया हूँ। तुमको उस जादूगर से बस यह मालूम करना है कि वह किस तरह से मर सकता है।"

उसने अभी इतना ही कहा था कि उसको किसी के आने की आहट सुनायी दी सो वह फिर से चींटी बन कर वहीं एक कोने में छिप गया।

जब वह जादूगर आया तो राजकुमारी ने उससे बड़े प्यार से बात की। उसको अपने पॉवों के पास बिठाया और उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

फिर वह बोली — "मेरे प्रिय जादूगर, मैं जानती हूँ कि तुम बिना आत्मा का शरीर हो और इसी लिये तुम मर नहीं सकते पर मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि कोई भी कभी भी तुम्हारी आत्मा को ढूँढ लेगा और फिर तुमको मार देगा।"

जादूगर यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँसा और काफी देर तक हँसता ही रहा। फिर बोला — "तुमको इससे डरने की बिल्कुल

जरूरत नहीं है मेरी रानी। मैं तुमको इसका भेद बताता हूँ। क्योंकि तुम यहाँ जेल में बन्द हो और तुम मुझे धोखा भी नहीं दे सकतीं इसी लिये मैं तुम्हें यह बात बता रहा हूँ।

मुझे मारने के लिये एक बहुत ही ताकतवर शेर चाहिये जो जंगल में रह रहे काले शेर को मार सके। उस मरे हुए काले शेर के पेट में से एक काला कुत्ता कूद कर बाहर आयेगा। वह कुत्ता भी इतनी तेज़ी से बाहर कूदेगा कि कोई सबसे ज़्यादा तेज़ भागने वाला कुत्ता ही उसको पकड़ सकता है।

फिर उस कुत्ते को मारना पड़ेगा। उस मरे हुए कुत्ते में से एक गरुड़ उड़ेगा जो दुनियाँ के सबसे ज़्यादा तेज़ उड़ने वाले गरुड़ों में से एक होगा। इसलिये उसको भी कोई नहीं पकड़ सकेगा।

पर अगर उसको किसी ने पकड़ लिया और उसे मार दिया तो उसको उसके पेट से उसे एक अंडा निकालना पड़ेगा जिसको मेरी भौंह के ऊपर तोड़ना पड़ेगा।

उस अंडे के टूटते ही उसमें से मेरी आत्मा निकल कर भाग जायेगी और मैं मर जाऊँगा। अब बताओ क्या तुम मेरे बारे में अभी भी चिन्तित होगी?"

"नहीं नहीं। अब मुझे तुम्हारे मरने की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है क्योंकि इस तरह से तो तुमको कोई मार ही नहीं सकता।"

जैक ने यह सब उस कोने में बैठे बैठे सुन लिया। जादूगर के जाने के बाद वह वहॉ से चींटी के रूप में ही खिड़की से बाहर निकल गया और गरुड़ बन कर जंगल की तरफ उड़ गया।

वहॉ जा कर वह शेर में बदल गया और काले शेर को ढूँढने चला। काला शेर उसको जल्दी ही मिल गया। वह काला शेर काफी ताकतवर था पर जैक तो सबसे ज़्यादा ताकतवर शेर था सो उसने उस काले शेर को दबोच लिया और मार दिया। जैसे ही शेर मरा तो किले में जादूगर का सिर चकराने लगा।

शेर को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो उसमें से एक तेज़ भागने वाला काला कुत्ता निकल कर भागा। जैक ने तुरन्त ही अपने आपको सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते में बदला और उस काले कुत्ते के पीछे भाग लिया।

उसने उस काले कुत्ते को भी जल्दी ही पकड़ लिया और उस पर कूद पड़ा। दोनों लुढ़कने लगे और एक दूसरे को काटने लगे पर आखीर में जैक ने उस काले कुत्ते को भी मार दिया। कुत्ते को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो एक काला गरुड़ उसके पेट में से निकल कर उड़ गया।

जैक भी जल्दी से गरुड़ बन गया और उसके पीछे पीछे उड़ चला। उस काले गरुड़ को मार कर उसने उसके पेट में से काला अंडा निकाल लिया। अंडा निकालते ही जादूगर को किले में बुखार आ गया और वह अपने बिस्तर में सिकुड़ा सा लेट गया।

गरुड़ के पेट से अंडा निकाल कर जैक आदमी बन गया और वह अंडा ले कर राजा की बेटी पास वापस आ गया। राजा की बेटी उस अंडे को देख कर बहुत खुश हो गयी।

उसने पूछा — "पर तुमने यह सब किया कैसे?"

"इसमें कोई ऐसी खास बात नहीं थी। मैंने तो अपना काम कर दिया बस अब तुम्हारा काम बाकी है।"

राजा की बेटी वह अंडा ले कर जादूगर के सोने के कमरे में घुसी और उससे पूछा — "तुमको कैसा लग रहा है जादूगर?"

"उफ तुमने तो मुझे धोखा दे दिया।"

"देखो न मैं तुम्हारे लिये यह मॉस का पानी[42] ले कर आयी हूँ। इसे थोड़ा सा पी लो तो तुमको आराम मिलेगा और थोड़ी ताकत भी आ जायेगी।"

यह सुन कर जादूगर उठ कर बैठा हो गया और वह मॉस का पानी पीने के लिये झुका तो राजा की बेटी बोली — "लाओ इसमें मैं एक अंडा तोड़ कर और डाल दूँ इससे तुमको और ज़्यादा ताकत आयेगी।"

कह कर राजा की बेटी ने वह काला अंडा उस जादूगर की भौंह के ऊपर तोड़ दिया और वह बिना आत्मा का शरीर वहीं की वहीं मर गया।

[42] Translated for the word "Broth" – to make meat broth meat is boiled in some water and that water is used for other purposes. It is supposed to have many of meat qualities of the meat to give some strength.

जैक राजा की बेटी को ले कर राजा के महल आ गया और उसको उसके पिता को सौंप दिया। सब लोग राजकुमारी को देख कर बहुत खुश हो गये।

पर वे नौकर जिनकी यह चाल थी जैक को अपने काम में सफल देख कर केवल अपना मन मसोस कर रह गये। कुछ कर नहीं सके। उनकी चाल फेल हो गयी थी।

बाद में राजा ने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी।

6 पैसा परमेश्वर है[43]

एक बार एक देश का एक राजकुमार था जो बहुत अमीर था। उसके दिमाग में एक बार कुछ ऐसा आया कि वह किसी राजा के महल के सामने अपना एक ऐसा महल बनवाये जो उस राजा के महल से कहीं ज़्यादा शानदार हो और कहीं ज़्यादा बढ़िया हो।

उसने ऐसा ही किया। वह एक दूसरे देश में गया और वहाँ के राजा के महल के सामने एक बहुत ही शानदार महल बनवाया। जब उसका वह महल बन गया तो उसने उस महल के सामने उसने बड़े बड़े अक्षरों में लिखवा दिया "पैसा परमेश्वर है"[44]।

जब उस देश का राजा अपने महल से बाहर निकला और उसने वह महल देखा तो उसने तुरन्त उस राजकुमार को बुलवाया। राजकुमार उस शहर में नया था और अब तक उसने उस राजा का दरबार नहीं देखा था।

राजा बोला — "बधाई हो। तुम्हारा महल तो वाकई बड़ा आश्चर्यजनक है। इस महल के मुकाबले में मेरा महल तो झोंपड़ी जैसा लग रहा है। पर यह लिखना कि "पैसा परमेश्वर है" यह क्या तुम्हारा अपना विचार है?"

[43] Money Can Do Everything. Tale No 7. A folktale from Genoa, Italy, Europe.
[44] Money Can Do Everything

राजकुमार को लगा कि जैसे उसने कुछ ज़रा ज़्यादा ही हॉक दी है। उसने जवाब दिया — "जी हॉ, पर अगर राजा साहब इसको पसन्द नहीं करते तो मैं यह बोर्ड यहॉ से हटा देता हूँ।"

"नहीं नहीं, मैं तो ऐसा सोचता भी नहीं कि तुम ऐसा करो। मैं तो बस तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता था। पर ज़रा यह तो बताओ कि इस बात से तुम्हारा मतलब क्या है। क्या तुम मुझे मरवाना चाहते हो?"

राजकुमार को लगा कि यह तो अब उसके गले में फन्दा ही पड़ गया। वह बोला — "राजा साहब, माफ कीजियेगा। मेरा यह मतलब बिल्कुल भी नहीं था। मैं यह बोर्ड वहॉ से हटवा दूँगा और अगर आपको यह महल भी पसन्द नहीं है तो मैं इसको भी तुड़वा दूँगा।"

राजा बोला — "नहीं नहीं, महल को तो ऐसे ही रहने दो जैसा वह है पर क्योंकि तुम इस बात का दावा करते हो कि "पैसा परमेश्वर है" तो तुम्हें इसको मुझे साबित कर के दिखाना पड़ेगा।

मैं तुमको तीन दिन देता हूँ। इन तीन दिनों के बीच तुम मेरी बेटी से बात कर के दिखाओ तो मैं जानूँ। अगर तुम उससे बात कर सके तो बहुत अच्छी बात है, मैं उसकी शादी तुम्हारे साथ कर दूँगा। और अगर नहीं कर सके तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगा। ठीक?"

राजकुमार ने यह सुना तो वह वहॉ से चला तो आया पर उसकी भूख प्यास सब गायब हो गयी। वह तो बस दिन रात यही सोचता रहा कि "मैं अपनी जान कैसे बचाऊॅ।"

दूसरे दिन तो उसको यह लगने लगा कि वह तो अपने इस काम में बस फेल होने वाला है सो उसने अपनी वसीयत लिखने का फैसला किया।

राजकुमारी से बात करने की उसकी कोशिशें सब बेकार थीं क्योंकि राजा की बेटी एक ऐसे किले में बन्द थी जिसके चारों तरफ सौ पहरेदार पहरा दे रहे थे।

राजकुमार का रंग पीला पड़ गया था और उसके जोड़ जोड़ ढीले पड़ गये थे। वह अपने बिस्तर पर पड़ा अपनी मौत का इन्तजार कर रहा था। तभी उसकी बूढ़ी आया आयी जिसने उसको बचपन से पाला था और वह अभी भी उसकी सेवा कर रही थी।

उसको इस हालत में देख कर उसने राजकुमार से पूछा — "बेटे, तुमको क्या हुआ है? तुम्हारे मन पर क्या बोझ है? बताओ तो।"

रुऑसा हो कर उसने अपनी आया को अपनी सारी कहानी बता दी। आया बोली — "सो? इस छोटी सी बात के लिये क्या तुम ऐसे नाउम्मीद हो कर बैठे रहोगे? तुम तो मुझे हॅसा रहे हो। अच्छा मैं देखती हूॅ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूॅ।"

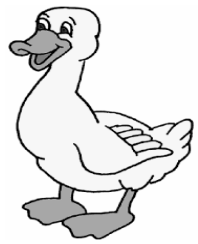

तुरन्त ही वह शहर के एक बहुत ही होशियार चॉदी का काम करने वाले के पास गयी और उसको चॉदी की एक बतख बनाने के लिये कहा जो अपने पंख खोल और बन्द कर सकती हो।

और यह बतख भी इतनी बड़ी होनी चाहिये कि उसमें एक आदमी आराम से बैठ सके और यह बतख कल तक तैयार हो जानी चाहिये।"

"कल तक? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?"

"हॉ कल तक। मैंने कहा न कल तक। तुमने सुना नहीं।"

कह कर आया ने सोने के सिक्कों का एक थैला उस चॉदी का काम करने वाले की तरफ फेंका और बोली — "दोबारा सोचना। यह तो केवल पेशगी है। मैं कल तुमको और पैसे दूँगी जब तुम मुझको वह बतख दोगे।"

यह सब देख कर तो उस चॉदी का काम करने वाले की तो बोलती ही बन्द हो गयी। उसने सोचा "इतने पैसे से तो दुनियॉ में बहुत फर्क पड़ता है।"

पैसे ले कर वह उस बुढ़िया से बोला — "मैं तुमको इस बतख को कल तक देने की अपनी पूरी पूरी कोशिश करूँगा।" अगले दिन बतख तैयार थी और वह बतख तो उसने बहुत ही सुन्दर बनायी थी।

बुढ़िया आया राजकुमार से बोली — "अपनी वायलिन ले लो और इस बतख के अन्दर बैठ जाओ। मैं इस बतख को ले कर बाहर निकलती हूँ। जब हम सड़क पर पहुँच जायें तो तुम अपनी वायलिन बजाना शुरू कर देना।"

राजकुमार उस बतख में बैठ गया और वह बुढ़िया उस बतख को ले कर सारे शहर में चक्कर काटती रही। वह बुढ़िया आया उस बतख को एक बहुत ही खूबसूरत रिबन से बाँध कर खींचती रही और वह राजकुमार उस बतख में बैठा वायलिन बजाता रहा।

यह तमाशा देखने के लिये जल्दी ही चारों तरफ लोग सड़कों पर इकट्ठा हो गये। शहर में कोई ऐसा आदमी नहीं था जो ऐसी आश्चर्यजनक बतख देखने के लिये बाहर न आया हो।

अब यह खबर किले तक भी पहुँची जिसमें राजा की बेटी बन्द थी। उसने अपने पिता से पूछा कि क्या वह भी यह आश्चर्यजनक चीज़ देख सकती थी।

राजा बोला — "उस सुन्दर राजकुमार का तीन दिन का समय कल तक पूरा हो जायेगा उसके बाद तुम बाहर जा कर वह बतख देख सकती हो।"

पर राजा की बेटी ने सुन रखा था कि वह बुढ़िया कल वहाँ से चली जायेगी। यह बात जब उसने राजा को बतायी तो राजा ने उस बतख को किले के अन्दर ही बुलवा लिया ताकि उसकी बेटी भी उस आश्चर्यजनक बतख को देख सके।

यही तो वह बुढ़िया आया चाहती थी। राजकुमारी के कमरे में अन्दर पहुँच कर जैसे ही राजा की बेटी उस चॉदी की बतख के साथ उसमें से निकलते संगीत का आनन्द लेती अकेली रह गयी कि बुढ़िया आया उस बतख को वहॉ छोड़ कर खिसक ली।

अचानक बतख के पंख खुले और उस बतख में से एक आदमी निकल पड़ा। अचानक ही बतख में से किसी अजनबी को अपने कमरे में देख कर राजकुमारी डर गयी और वह चिल्लाने ही वाली थी कि...

वह अजनबी आदमी बोला — "डरो नहीं। मैं ही वह राजकुमार हूँ जिससे तुम्हारे पिता ने तुमसे बात करने की शर्त लगायी है। और अगर मैं ऐसा न कर सका तो कल मेरा सिर काट दिया जायेगा। तुम यह कह कर कि तुमने मुझसे बात की है मेरी जान बचा सकती हो।"

अगले दिन राजा ने राजकुमार को बुलाया और पूछा — "क्या तुम्हारा पैसा मेरी बेटी से बात करने में तुम्हारी सहायता कर सका?"

"जी राजा साहब।"

"क्या? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम मेरी बेटी से बात कर सके?"

"जी राजा साहब। वैसे आप उसी से पूछ लीजिये।"

राजा ने अपनी बेटी को बुलवाया। वह अन्दर आयी तो उसने राजा को बताया कि राजकुमार उस चॉदी की बतख के अन्दर छिप

कर उसके कमरे में आया था और राजा खुद उस बतख को अन्दर ले कर आये थे।

यह सुन कर राजा ने अपना ताज अपने सिर से उठा कर राजकुमार के सिर पर रख दिया और बोला — "तुम जीते मैं हारा। इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पास केवल पैसा ही नहीं है एक अच्छा दिमाग भी है। तुम खुश रहो। मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ कर रहा हूँ।"

7 एक छोटा चरवाहा[45]

एक बार एक लड़का था जो भेड़ चराया करता था। वह लड़का साइज़ में एक छोटे से कीड़े से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

एक दिन जब वह अपनी भेड़ों को चराने के लिये घास के मैदानों की तरफ जा रहा था तो वह एक अंडे बेचने वाली के पास से गुजरा। वह अंडे बेचने वाली एक टोकरी में अंडे भर कर उनको बेचने के लिये बाजार ले कर जा रही थी।

उसको देख कर उसे शरारत सूझी। उसने उस अंडे बेचने वाली की टोकरी की तरफ एक पत्थर फेंका और उस एक ही पत्थर से उस स्त्री की टोकरी में रखे सारे अंडे टूट गये।

इससे उस स्त्री को गुस्सा आ गया तो उसने उस लड़के को शाप दे दिया — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना[46] को नहीं ढूँढ लोगे।"

उस दिन के बाद से वह लड़का फिर और बड़ा नहीं हुआ बल्कि और पतला दुबला होता चला गया। उसकी माँ उसकी जितनी ज़्यादा देखभाल करती वह उतना ही और पतला दुबला होता जाता।

[45] The Little Shepherd. Tale No 8. A folktale from Genoa, Italy, Europe.

[46] Bargaglina – name of the girl of three singing apples

एक दिन उसकी मॉ ने उससे पूछा — "बेटा, तुझे क्या हो गया है? क्या तूने किसी का कुछ बुरा किया है जो उसने तुझे शाप दे दिया है? तू बड़ा ही नहीं होता।"

तब उसने अपनी नीचता की कहानी अपनी मॉ को सुनायी कि कैसे उसने पत्थर मार कर एक अंडे बेचने वाली की टोकरी में रखे सारे अंडे तोड़ दिये थे।

और फिर उसने उस स्त्री के शब्द भी दोहरा दिये — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को नहीं ढूँढ लोगे।"

उसकी मॉ बोली — "अगर ऐसी बात है तो तुम्हारे पास इसके सिवा और कोई चारा नहीं है बेटा कि तुम उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढो।"

यह सुन कर वह लड़का उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने चल दिया।

चलते चलते वह एक पुल के पास आया। वहॉ एक स्त्री एक अखरोट के खोल में बैठी झूल रही थी। उसने उस लड़के को देखा तो पूछा — "उधर कौन जा रहा है?"

चरवाहा बोला — "एक दोस्त।"

"ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुमको देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी पलक उठा दी तो उसने उसी तरफ देख कर पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह पत्थर लेते जाओ शायद यह तुम्हारे काम आये।" कह कर उसने चरवाहे को एक पत्थर पकड़ा दिया। चरवाहे ने उससे वह पत्थर ले लिया और आगे चल दिया।

आगे जा कर उसको एक और पुल मिला जहाँ एक और छोटी स्त्री एक अंडे के खोल में बैठी नहा रही थी। उसने भी पूछा — "इधर कौन जा रहा है?"

चरवाहे ने जवाब दिया — "एक दोस्त।"

वह स्त्री बोली — "ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी भी पलक उठा दी तो उसने उसको देख कर पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह हाथी दाँत की कंघी लेते जाओ तुम्हारे काम आयेगी।" कह कर उसने चरवाहे को एक कंघी दे दी। चरवाहे ने वह कंघी अपनी जेब में रखी, उसको धन्यवाद दिया और आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक नाले के पास आया जहॉ एक आदमी उस नाले के पास खड़ा खड़ा अपने थैले में कोहरा भर रहा था। उस चरवाहे ने उस आदमी से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था। पर उसने भी वही जवाब दिया कि वह उसको नहीं जानता था।

पर उस आदमी ने उस चरवाहे को एक जेब भर कर कोहरा दे दिया और कहा कि वह उसको अपने साथ ले जाये उसके काम आयेगा। चरवाहे ने उस आदमी से कोहरा लिया और उसको धन्यवाद दे कर आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक चक्की के पास आया जो एक लोमड़े की थी। चरवाहे ने लोमड़े से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था।

लोमड़ा बोला — "हॉ मैं जानता हूँ कि वह सुन्दर बरगैगलीना कौन है पर तुमको उसे ढूँढने में बहुत परेशानी होगी। तुम यहॉ से सीधे चले जाओ तो वहॉ तुमको एक घर मिलेगा। उस घर का दरवाजा खुला होगा।

तुम उस दरवाजे से अन्दर चले जाना तो वहॉ तुमको किस्टल का एक पिंजरा दिखायी देगा। उस पिंजरे में बहुत सारी छोटी छोटी घंटियॉ लगी हैं। उसी पिंजरे में वे गाने वाले सेब रखे हैं।

तुम वह पिंजरा उठा लेना पर वहॉ एक बुढ़िया का ध्यान रखना क्योंकि वहॉ एक बुढ़िया भी होगी। अगर उसकी ऑखें खुली हों तो

समझना कि वह सो रही है और अगर उसकी ऑखें बन्द हों तो समझना कि वह सब कुछ देख रही है।"

उस लोमड़े की इस सलाह के साथ वह चरवाहा और आगे बढ़ा और उस घर तक आ गया जो उसको लोमड़े ने बताया था। उस घर का दरवाजा वाकई खुला हुआ था सो वह उस घर के अन्दर चला गया।

घर के अन्दर जा कर उसने देखा कि वहॉ एक क्रिस्टल का एक पिंजरा रखा है जिसमें घंटियॉ लगी हुई हैं और उसी के पास एक बुढ़िया बैठी है जिसकी ऑखें बन्द हैं।

क्योंकि उसकी ऑखें बन्द थीं इसलिये लोमड़े के कहे अनुसार वह सब कुछ देख रही थी। उस बुढ़िया ने चरवाहे से कहा — "ज़रा देखना तो मेरे बालों में कहीं कोई जूँ[47] तो नहीं हैं?"

उसने उस बुढ़िया के बालों में झॉका तो वहॉ उसको उसके बालों में कुछ जूँ दिखायी दीं। वह उसके सिर की जूँ निकालने लगा। जब वह उसके सिर में से जूँ निकाल रहा था तो उस बुढ़िया की ऑखें खुल गयीं। अब उसको पता चल गया कि वह अब सो गयी थी।

उसको सोता देख कर चरवाहे ने तुरन्त ही क्रिस्टल का वह पिंजरा वहॉ से उठाया और भाग लिया। पर उस पिंजरे को ले जाते

[47] Translated for the word "Lice". See its picture above.

समय उसकी छोटी छोटी घंटियॉ बज उठीं और वह बुढ़िया जाग गयी। उसने उस चरवाहे के पीछे सौ घुड़सवार भेजे।

जब चरवाहे ने देखा कि वे घुड़सवार उसके काफी पास आ गये हैं तो उसने अपनी जेब में रखा पत्थर का टुकड़ा निकाल कर अपने पीछे फेंक दिया।

जमीन पर पड़ते ही उस पत्थर का एक बहुत बड़ा पहाड़ बन गया। उस बुढ़िया के कुछ घोड़े उससे टकरा कर मर गये और कुछ की टॉगें टूट गयीं। घोड़े बेकार होने की वजह से वे और आगे नहीं जा सके और वे सब घुड़सवार वापस लौट गये।

उन घुड़सवारों को वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार दो सौ घुड़सवार उसके पीछे भेजे। चरवाहे ने एक नया खतरा देखा तो अपनी जेब से हाथी दॉत की कंघी निकाल कर अपने पीछे फेंक दी।

वह कंघी जहॉ गिरी थी वहॉ एक शीशे जैसा चिकना पहाड़ खड़ा हो गया जिस पर चढ़ते ही सारे घोड़े फिसल फिसल कर गिर पड़े और मर गये। सो वे दो सौ घुड़सवार भी वापस चले गये।

उनको वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार तीन सौ घुड़सवार भेजे। इतने सारे घुड़सवारों के देख कर उस चरवाहे ने अपनी जेब से कोहरा निकाल कर फेंक दिया। वह कोहरा सारे में फैल गया और वे सारे घुड़सवार उस कोहरे में खो कर रह गये।

इस बीच वह चरवाहा वहॉ से बच कर भाग तो लिया पर रास्ते में उसको प्यास लग आयी। रास्ते में उसके पास पीने के लिये कुछ भी नहीं था सो उसने सोचा कि वह पिंजरे में से गाने वाला एक सेब निकाल कर खा लेता है।

उसने पिंजरे में से एक सेब निकाला और उसको काटा तो उसमें से एक छोटी सी आवाज आयी — "सेब ज़रा धीरे से काटो वरना मुझे बहुत तकलीफ होगी।"

यह सुन कर उसने वह सेब बड़ी धीरे से काटा। उसमें से उसने आधा सेब खाया और दूसरा आधा सेब अपनी जेब में रख लिया। फिर वह अपने रास्ते चल पड़ा।

चलते चलते वह अपने घर के पास वाले कुँए पर आ गया। वहॉ उसने अपनी जेब में से दूसरा आधा सेब निकालने के लिये हाथ डाला तो वहॉ उसको उसका बचा हुआ सेब तो नहीं मिला, हॉ एक छोटी सी लड़की वहॉ जरूर खड़ी थी।

चरवाहा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ और मुझे केक बहुत पसन्द है। मुझे केक खाना है मुझे बहुत भूख लगी है।"

उस कुँए के चारों तरफ एक दीवार थी और बीच में पानी खींचने के लिये एक छेद था सो चरवाहे ने उस सुन्दर बरगैगलीना को उस कुँए की दीवार पर बिठा दिया और उससे कहा कि जब

तक वह उसके लिये केक ले कर आता है वह उसका वहीं इन्तजार करे।

इसी बीच बदसूरत नाम की एक दासी वहॉ आयी। वह वहॉ उस कुँए से पानी खींचने आयी थी।

उसको वहॉ वह सुन्दर सी छोटी सी लड़की दिखायी दी तो उसने अपने मन में सोचा — "यह कैसे हुआ कि यह तो इतनी छोटी सी है और इतनी सुन्दर है और मैं इतनी बड़ी हूँ और इतनी बदसूरत हूँ।"

यह सोच कर ही वह दासी इतनी गुस्सा हुई कि उसने उस छोटी सी लड़की को कुँए में फेंक दिया। जब चरवाहा उस छोटी सुन्दर बरगैगलीना के लिये केक ले कर वहॉ आया तो उसने देखा कि उसकी सुन्दर बरगैगलीना तो वहॉ थी ही नहीं।

उसका दिल टूट गया। कितनी मुश्किल से तो वह उसको ले कर आया था और अब जब वह मिल गयी थी तो वह गायब भी हो गयी।

उस चरवाहे की मॉ भी उसी कुँए पर पानी भरने आती थी। एक दिन पानी भरते समय उसकी बालटी में एक छोटी सी मछली आ गयी।

वह उस मछली को घर ले गयी और उसको खाने के लिये तल लिया। मॉ ने वह तली हुई मछली खुद भी खायी और अपने बेटे को भी खिलायी। और उसकी हड्डियॉ बाहर फेंक दीं।

उस मछली की हड्डियॉ जहॉ जा कर गिरीं वहॉ एक पेड़ उग आया और समय के साथ साथ वह पेड़ इतना बड़ा हो गया कि उसने चरवाहे के घर की रोशनी तक रोक दी।

यह देख कर उस चरवाहे ने उस पेड़ को काट डाला और उसकी लकड़ी को आग जलाने के काम में लाने के लिये घर के अन्दर रख लिया।

यह सब करते करते चरवाहे की मॉ मर गयी और अब वह घर में अकेला रह गया। वह और भी दुबला होता जा रहा था। वह अपने बड़ा होने के लिये कुछ भी करता पर वह बड़ा ही नहीं हो पा रहा था।

रोज सुबह ही वह घास के मैदानों में चला जाता और रात होने पर ही घर लौटता। घर आ कर उसको बहुत आश्चर्य होता जब वह देखता कि सुबह जो बर्तन वह गन्दे छोड़ गया था वे सब साफ रखे हैं और उसका घर भी साफ है।

उसने सोचा कि यह जानने के लिये कि उसके घर में उसके पीछे यह सब कौन कर रहा है उसको एक दिन घर में रुकना ही पड़ेगा।

सो अगले दिन वह घर से बाहर जाने के लिये निकला तो पर बाहर नहीं गया। वह वहीं दरवाजे के पीछे छिप गया और देखता रहा कि उसके घर में उसके पीछे कौन आता है।

कुछ समय बाद ही उसने देखा कि लकड़ी के ढेर में से एक ब्हुत ही सुन्दर सी लड़की निकली। उसने उसके सारे बर्तन साफ

किये, घर को झाड़ा बुहारा, उसका बिस्तर ठीक किया। फिर उसने आलमारी खोली और केक खाया।

बस इसी समय वह चरवाहा उछल कर दरवाजे के पीछे से बाहर निकल आया और उससे पूछा — "तुम कौन हो और तुम अन्दर कैसे आयीं?"

लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ। वह लड़की जिसको तुमने अपनी जेब में रखे आधे सेब में पाया था। जब तुम मुझको वहाँ कुँए पर बिठा कर चले गये तब वहाँ एक बदसूरत दासी आयी और उसने मुझे कुँए में धकेल दिया। कुँए में गिर कर मैं मछली बन गयी।

उसके बाद तुम लोगों ने मुझे तल कर खा लिया और मेरी हड्डियाँ बाहर फेंक दीं। वहाँ गिर कर मैं एक पेड़ बन गयी। तुमने वह पेड़ काट कर उसकी लकड़ी अपने घर में रख ली। अब जब तुम घर में नहीं होते तो मैं सुन्दर बरगैगलीना बन जाती हूँ।"

चरवाहा यह सुन कर बहुत खुश हो गया कि उसको सुन्दर बरगैगलीना फिर से मिल गयी थी। अब वह चरवाहा दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा था और उसके साथ साथ वह सुन्दर बरगैगनीना भी बढ़ने लगी।

जल्दी ही वह चरवाहा बढ़ कर एक सुन्दर नौजवान हो गया और सुन्दर बरगैगलीना भी बड़ी हो कर और सुन्दर हो गयी।

बाद में दोनों ने आपस में शादी कर ली और दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

8 एक छोटी लड़की जो नाशपाती के साथ बेची गयी[48]

एक बार एक आदमी के पास एक नाशपाती का पेड़ था जिसमें हर साल चार टोकरी नाशपाती आती थी। वह ये नाशपाती राजा को दे आया करता था।

एक साल ऐसा हुआ कि उसमें केवल साढ़े तीन टोकरी नाशपाती ही आयीं जबकि राजा को उसको चार टोकरी नाशपाती दे कर आनी थी। अब वह क्या करे।

जब उसको कोई और रास्ता नहीं सूझा तो उसने चौथी टोकरी में अपनी सबसे छोटी लड़की को रख दिया। उसको नाशपाती और उसके पत्तों से ढक दिया और उस टोकरी को बाकी की तीन टोकरियों के साथ राजा के महल में दे आया।

सारी टोकरियॉ राजा के रसोई भंडार में ले जायी गयीं। वहॉ वह लड़की उन नाशपातियों के नीचे छिपी रही। पर जब उसको वहॉ कुछ और खाने को नहीं मिला तो वह अपने ऊपर रखी हुई नाशपातियों को ही खाने लगी।

[48] The Little Girl Sold With the Pears. Tale No 11. A folktale from Italy, Europe.

कुछ समय बाद नौकरों ने देखा कि उन टोकरियों में से नाशपातियॉ कुछ कम हो रही थीं और साथ में उन्होंने उसमें कुछ कुतरी हुई नाशपातियॉ भी देखीं।

उन्होंने सोचा कि जरूर ही कहीं या तो कोई चूहा है और या फिर कोई मोल[49] है जो नाशपातियॉ कुतर रहा है। हमें टोकरी के अन्दर देखना चाहिये कि उसके अन्दर तो कुछ नहीं है।

सो उन्होंने एक टोकरी में से ऊपर से कुछ नाशपातियॉ और उसके कुछ पत्ते हटाये तो उनको उसमें वह छोटी लड़की दिखायी दे गयी।

उन्होंने उससे पूछा — "अरे तुम यहॉ क्या कर रही हो? चलो हमारे साथ चलो और चल कर राजा की रसोई में काम करो।"

उन्होंने उसको वहॉ से निकाल लिया और उसको परीना[50] नाम दे दिया। परीना इतनी होशियार लड़की थी कि बहुत थोड़े समय में ही वह राजा की बहुत सारी नौकरानियों से भी अच्छा काम करने लगी।

वह सुन्दर भी इतनी थी कि कोई उसको प्यार किये बिना रह ही नहीं सकता था।

---

[49] Mole is an animal like a big squirrel. See its picture above.

[50] Perina – the name of the girl

राजा का एक बेटा था जो उसी की उम्र का ही था। वह तो उसको छोड़ता ही नहीं था। वह हमेशा ही उसके साथ साथ रहता। वे दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे।

जैसे जैसे वह लड़की बड़ी होती गयी दूसरी नौकरानियॉ उससे और ज़्यादा जलने लगीं। पहले तो कुछ समय तक तो वे चुप रहीं पर फिर वे परीना को यह इलजाम देने लगीं कि वह यह शान बघारती है कि वह जादूगरनी का खजाना चुरा सकती है।

राजा को इस बात की हवा लगी तो उसने उस लड़की को बुला भेजा। उसने उससे पूछा — "क्या तुम यह कह रही थीं कि तुम जादूगरनी का खजाना चुरा कर ला सकती हो?"

"नहीं जहॉपनाह नहीं, मैंने तो ऐसी कुछ भी शान नहीं बघारी।"

राजा ने ज़ोर दे कर कहा — "नहीं, तुमने ऐसा कहा है। मैंने ऐसा ही सुना है और अब तुमको अपना कहा कर के दिखाना पड़ेगा।" और यह कह कर उसने परीना को उस जादूगरनी का खजाना लाने के लिये अपने महल से बाहर भेज दिया।

परीना महल से निकल कर चलती रही चलती रही जब तक कि रात नहीं हो गयी। रात होने पर वह एक सेब के पेड़ के पास आयी पर वह वहॉ भी वह रुकी नहीं बल्कि चलती ही गयी।

उसके बाद वह एक खूबानी[51] के पेड़ के पास आयी पर वह वहॉ भी नहीं रुकी। लेकिन फिर वह एक नाशपाती के पेड़ के पास आयी। वहॉ वह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गयी और सो गयी।

सुबह सवेरे जब वह उठी तो उसने एक बुढ़िया को पेड़ के नीचे खड़े देखा। वह बोली — "मेरी बच्ची, तुम वहॉ ऊपर क्या कर रही हो?"

परीना ने उसको अपनी कहानी सुना दी कि वह किस मुसीबत में फॅस गयी थी। बुढ़िया बोली — "तुम यह तीन पौंड चिकनाई लो, यह तीन पौंड डबल रोटी लो और यह तीन पौंड बाजरा लो और इस रास्ते चली जाओ।"

परीना ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दी। आगे चल कर वह एक डबल रोटी बनाने वाले की बेकरी पर आयी जहॉ तीन स्त्रियॉ ओवन साफ करने के लिये अपने बाल नोच रही थीं।

परीना ने उनको वह तीन पौंड बाजरा दिया जो उन्होंने ओवन साफ करने में इस्तेमाल कर लिया और उस लड़की को आगे जाने के लिये कहा।

वह फिर आगे बढ़ी तो उसको तीन बड़े कुत्ते मिले जो वहॉ से किसी भी आने जाने वाले के ऊपर भौंकते थे और उनके पीछे दौड़ते

[51] Translated for the word "Peach tree"

थे। परीना ने उनको तीन पौंड डबल रोटी फेंकी तो वह उन्होंने खा ली और परीना को उसके रास्ते जाने दिया।

उसके बाद वह मीलों चली तो एक खून जैसी लाल रंग की नदी के पास आ पहुँची। वह सोच ही नही सकी कि वह उसे कैसे पार करे।

फिर उसे याद आया कि उस बुढ़िया ने उससे यह कहने के लिये कह रखा था —

कितना सुन्दर लाल पानी है, पर मुझे जल्दी जाना है नहीं तो मैं तुम्हें जरूर चखती

सो उस बुढ़िया की बात याद कर के उसने वहाँ ऐसा ही कह दिया। ऐसा कहते ही उस नदी का पानी दो हिस्सों में बँट गया और वह उसमें से बने रास्ते में से उस नदी को पार कर गयी।

नदी के दूसरी तरफ परीना ने दुनियाँ का एक बहुत ही सुन्दर और बड़ा महल देखा। पर उसका दरवाजा इतनी जल्दी से खुल और बन्द हो रहा था कि उसके अन्दर किसी का भी घुसना मुमकिन नहीं था।

सो परीना ने उस दरवाजे के कब्जों[52] में तीन पौंड चिकनाई लगायी तब कहीं जा कर वह बहुत धीरे से बन्द होने और खुलने लगा।

[52] Translated for the word “Hinges”. See its picture above.

अब परीना उस महल के अन्दर चली गयी। उसने देखा कि खजाना एक मेज पर एक सन्दूकची में रखा है। उसने उस सन्दूकची को उठा लिया और वह उसको उठा कर वहॉ से ले कर जाने ही वाली थी कि वह सन्दूकची बोली — "ओ दरवाजे, इसको मार दे।"

दरवाजा बोला — "मैं इसे नहीं मार सकता क्योंकि इसने मेरे कब्जों में चिकनाई लगायी है जिनको किसी ने न जाने कबसे देखा तक नहीं है।"

परीना दरवाजे में से हो कर निकल गयी। जब वह नदी पर आयी तो वह सन्दूकची बोली — "ओ नदी इसको डुबो दे, इसको डुबो दे।"

नदी बोली — "मै इसको नहीं डुबो सकती क्योंकि इसने मुझसे कहा है कि मेरा लाल पानी कितना सुन्दर है।"

लड़की अब चलते चलते कुत्तों के पास तक आयी तो सन्दूकची ने कुत्तों से कहा — "कुत्तों इसको मार दो, इसको काट लो।"

पर कुत्तों ने कहा — "नहीं, हम इसको नहीं काट सकते क्योंकि इसने हमको तीन पौंड डबल रोटी खिलायी है।"

फिर वह लड़की चलते चलते बेकरी की दूकान पर आयी तो सन्दूकची ने ओवन से कहा — "इसको जला डालो, ओ ओवन इसको जला डालो।"

पर ओवन की जगह उन तीन स्त्रियों ने जवाब दिया — "हम इसको नहीं जला सकते क्योंकि इसने हमको तीन पौंड बाजरा दिया है और अब हमें इसको साफ करने के लिये अपने बाल नहीं नोचने पड़ेंगे।"

अब परीना करीब करीब अपने घर आ पहुँची थी। उसको भी उस सन्दूकची को देखने की उतनी ही उत्सुकता थी जितनी कि दूसरी छोटी लड़कियों को होती है सो उसने उस सन्दूकची को खोल कर उसमें झाँकने की सोची।

जैसे ही उसने वह सन्दूकची खोली तो उसमें से एक सुनहरी मुर्गी और उसके कई चूज़े निकल पड़े। वे तो उस सन्दूकची में से निकलते ही इधर उधर इतनी तेज़ी से भाग गये कि कोई उनको पकड़ ही नहीं सकता था।

परीना उनके पीछे पीछे भागी। वह सेब के पेड़ के पास से गुजरी पर वे चूज़े तो वहाँ थे ही नहीं। वह खूबानी के पेड़ के पास आयी पर वे तो वहाँ भी नहीं थे।

फिर वह नाशपाती के पेड़ के पास आयी तो वहाँ उसको वह बुढ़िया अपने हाथ में जादू की डंडी लिये खड़ी दिखायी दी और वे मुर्गी और उसके चूज़े उसके चारों तरफ दाना खा रहे थे।

वह बुढ़िया शू शू करती उनके पीछे भागी तो वह मुर्गी और उसके बच्चे फिर से सन्दूकची में घुस गये।

परीना उस सन्दूकची को ले कर जब महल वापस लौटी तो राजा का बेटा उससे मिलने के लिये बाहर आया और बोला — "जब मेरे पिता तुमसे कोई इनाम माँगने को कहें तो उनसे नीचे वाले कमरे में रखा कोयले का बक्सा माँग लेना।"

महल के दरवाजे की सीढ़ियों पर परीना का स्वागत करने के लिये राजा की नौकरानियाँ, राजा और सारा दरबार खड़ा था। परीना ने वह सुनहरी मुर्गी और उसके चूज़े राजा को दे दिये।

राजा बोला — "माँगो तुम क्या माँगती हो परीना? तुम जो भी माँगोगी मैं तुमको वही दूँगा।"

परीना बोली — "मुझे नीचे के कमरे में रखा कोयले का बक्सा चाहिये।"

राजा तो उसकी यह अजीब सी माँग सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसको उसकी यह माँग कुछ अजीब सी जरूर लगी पर वह क्या करता। उसने उसको वायदा किया था कि वह जो माँगेगी वह उसको वही देगा सो राजा के नौकर नीचे के कमरे से वह कोयले का बक्सा तुरन्त ही उठा कर ले आये।

परीना ने उस बक्से को खोला तो उसमें से राजा का बेटा कूद कर बाहर आ गया जो उस बक्से के अन्दर छिपा बैठा था।

राजा ने खुशी खुशी परीना की शादी अपने बेटे से कर दी और सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

9 सॉप[53]

एक बार एक किसान था जो घास काटने के लिये रोज बाहर जाया करता था। उसके तीन बेटियॉ थीं। उनमें से उसकी एक बेटी उसके लिये रोज खाना ले कर जाया करती थी। उसकी बाकी की दो बेटियॉ पीछे घर में रह कर घर की देखभाल किया करती थीं।

एक दिन अपने पिता के लिये खाना ले जाने की उसकी सबसे बड़ी बेटी की बारी थी। जब तक वह उसके लिये खाना ले कर जंगल तक पहुॅची तब तक वह बहुत थक गयी थी सो वह घास के मैदान तक पहुॅचने से पहले ही सुस्ताने के लिये एक पत्थर पर बैठ गयी।

पर जैसे ही वह पत्थर पर बैठी तो उसको एक बहुत ज़ोर का झटका लगा और उसके नीचे से एक सॉप निकल आया। लड़की के हाथों से खाने की टोकरी छूट गयी और वह डर के मारे जितनी तेज़ वहॉ से भाग सकती थी उतनी तेज़ वहॉ से भाग गयी।

उस दिन उस किसान को खाना नहीं मिला और वह भूखा ही रह गया। शाम को जब वह घास के मैदान से घर लौटा तो उसने गुस्से में अपनी बेटी को बहुत डॉटा।

[53] The Snake. Tale No 12. A folktale from Monferrato area, Italy, Europe.

अगले दिन उसकी दूसरी बेटी की बारी थी। वह भी अपने पिता के लिये खाना ले कर चली। इत्तफाक से वह भी जंगल तक पहुँचते पहुँचते थक गयी और सुस्ताने के लिये उसी पत्थर पर जा कर बैठ गयी जिस पर उसकी बड़ी बहिन बैठी थी। उसके साथ भी वही हुआ जो उसकी बड़ी बहिन के साथ हुआ था।

जैसे ही वह उस पत्थर पर बैठी कि एक सॉप उसमें से बाहर निकला। वह भी उसको देख कर डर गयी और उसके हाथ से भी खाने की टोकरी नीचे गिर गयी और वह भी वहॉ से जितनी जल्दी हो सकता था उतनी जल्दी भाग ली।

और उस दिन भी किसान को खाना न मिलने की वजह से भूखा रह जाना पड़ा। शाम को जब वह घर लौटा तो उसने अपनी इस बेटी को भी बहुत डॉटा।

उसके अगले दिन उसकी सबसे छोटी लड़की की बारी थी। वह सोच रही थी कि आज मेरी बारी है पर मैं सॉप से नहीं डरती। यह सोच कर उसने खाने की दो टोकरियॉ तैयार की – एक अपने पिता के लिये और दूसरी सॉप के लिये।

पर उसके साथ भी वैसा ही हुआ जैसा उसकी दोनों बड़ी बहिनों के साथ हुआ था। वह भी जंगल तक जाते जाते थक गयी और जा कर सुस्ताने के लिये उसी पत्थर पर बैठ गयी जहॉ उसकी दोनों बड़ी बहिनें बैठी थीं।

उसके बैठते ही उस पत्थर के नीचे से एक सॉप निकला तो वह डरी नहीं बल्कि अपने साथ लायी दो टोकरियों में से एक टोकरी का खाना उसने सॉप को दिया।

सॉप ने खाना खाया और बोला — "तुम मुझे अपने साथ घर ले चलो। मैं तुम्हारे लिये अच्छी किस्मत ले कर आऊँगा।"

यह सुन कर लड़की ने उस सॉप को उठा कर अपने ऐप्रन में रख लिया और अपने पिता के पास चल दी। वहॉ उसने अपने पिता को खाना खिलाया और फिर घर वापस आ गयी। घर आ कर उसने उस सॉप को अपने पलॅग के नीचे रख दिया।

वह वहॉ इतनी जल्दी जल्दी बढ़ता रहा कि जल्दी ही वह इतना बड़ा हो गया कि अब वह पलंग के नीचे रह ही नहीं सकता था। वह वहॉ से चला गया।

जाने से पहले वह उस लड़की को तीन वरदान देता गया। पहला वरदान तो यह कि जब भी वह रोयेगी तो उसके ऑसू मोती और चॉदी बन जायेंगे।

दूसरा वरदान यह कि जब भी वह हॅसेगी तो उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरेंगे। और तीसरा वरदान यह कि जब वह हाथ धोयेगी तो उसके हाथों से सब तरह की मछलियॉ निकलने लगेंगी।

एक दिन घर में खाने के लिये कुछ नहीं था। उसका पिता और बहिनें खाना न मिलने की वजह से बहुत कमजोर हो रहे थे सो उसने

अपने हाथ धोये तो उसके हाथों में से खूब सारी मछलियॉ निकल आयीं।

यह देख कर उसकी बहिनों को उससे बहुत जलन होने लगी। उन्होंने अपने पिता को यह विश्वास दिला दिया कि उसके इस जादू के पीछे कुछ है इसलिये उस लड़की को सबसे ऊपर वाले कमरे[54] में बन्द कर देना चाहिये। पिता ने वैसा ही किया और उसको सबसे ऊपर वाले कमरे में बन्द कर दिया।

उनके घर के सामने राजा का घर था। राजा का एक बेटा था। एक दिन वह अपने घर के बागीचे में गेंद खेल रहा था। एक बार वह गेंद के पीछे भागा और फिसल कर गिर पड़ा। यह देख कर वह लड़की हॅस पड़ी। जैसे ही वह हॅसी उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरने लगे।

राजा का बेटा तो बेचारा सोच ही नहीं सका कि वे अनार के सोने के दाने आये कहॉ से क्योंकि उस लड़की ने तब तक अपनी खिड़की बन्द कर ली थी।

अगले दिन वह फिर बागीचे में खेलने आया तो उसने देखा कि जहॉ वे अनार के सोने के दाने गिरे थे वहॉ तो अनार का एक पेड़

[54] Translated for the word "Attic" – in Western countries most houses have the conical roof because of snow. To make use of that small conical place they make a tiny room there. Sometimes these rooms are big too when the houses are big. See the picture of an attic above.

उग आया है। वह पेड़ खूब ऊँचा था और उस पर बहुत सारे अनार लगे हुए थे।

अनार देख कर वह बहुत खुश हो गया और उनको तोड़ने जा पहुँचा पर वह पेड़ तो उसकी ऑखों के सामने सामने बढ़ कर और ऊँचा हो गया। अब अगर उसको कोई अनार उस पेड़ पर से तोड़ना था तो जैसे ही वह उस अनार की तरफ हाथ बढ़ाता तो उस फल की डाली एक फुट और ऊँची हो जाती।

इस तरह वह उस पेड़ पर से कोई भी अनार नहीं तोड़ पा रहा था। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ और अपने पिता से जा कर कहा।

राजा ने दूसरे लोगों को भी अनार तोड़ने के लिये भेजा पर उनमें से भी कोई आदमी उस पेड़ पर से एक पत्ती से ज़्यादा नहीं तोड़ सका। इस पर राजा ने अपने यहॉ के सब अक्लमन्द लोगों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा कि इस जादू का क्या मतलब था।

उन अक्लमन्दों में जो उम्र में सबसे ज़्यादा बड़ा था वह बोला — "इस पेड़ के फल केवल एक लड़की ही तोड़ सकती है और फिर वही राजा के बेटे की पत्नी बन जायेगी।"

यह सुन कर राजा ने यह घोषणा करा दी कि उसके राज्य में जो कोई शादी लायक लड़कियॉ हैं चाहे वे किसी भी जाति की हों और कहीं भी रहती हों अनार तोड़ने के लिये उसके घर आयें। और

जो कोई भी उस पेड़ का अनार तोड़ पायेगी वही उसके बेटे की पत्नी बनेगी।

सो बहुत सारे देशों से हर जाति की लड़कियॉ राजा के घर अनार तोड़ने आयीं। सबने अनार तोड़ने के लिये कई तरह की छोटी बड़ी सीढ़ियॉ इस्तेमाल की पर वे सब छोटी पड़ गयीं। कोई भी सीढ़ी किसी भी अनार तक नहीं पहुँच सकी।

इन लड़कियों में उस किसान की दोनों बड़ी लड़कियॉ भी थीं जिसकी छोटी लड़की के मुँह से अनार के सोने के दाने गिर कर यह पेड़ उगा था । पर वे दोनों तो अनार तोड़ने के लिये उस सीढ़ी पर चढ़ते समय ही गिर गयीं।

जब आयी हुई लड़कियों में से कोई लड़की अनार नहीं तोड़ सकी तो राजा ने घरों में जा जा कर लड़कियों की खोज की और उस किसान के ऊपर वाले कमरे में बन्द लड़की को भी ढूँढ लिया।

जैसे ही लोग उस लड़की को ले कर उस पेड़ के पास आये तो उस पेड़ की शाखें अपने आप ही झुक गयीं और उसके अनार खुद बखुद उसके हाथों में आ गये।

यह देख कर सब लोग बहुत खुश हुए। यह देख कर राजा का बेटा बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "यही मेरी दुलहिन है पिता जी, यही मेरी दुलहिन है।"

बस फिर क्या था शादी की तैयारियॉ होने लगीं। लड़की की दोनों बहिनों को भी बुलाया गया था। तीनों एक ही गाड़ी में सवार

हुई पर जब वह गाड़ी एक जंगल में से गुजर रही थी तो उस गाड़ी को वहीं जंगल में ही रोक दिया गया और दोनों बड़ी लड़कियों ने सबसे छोटी वाली लड़की को गाड़ी से उतर जाने के लिये कहा।

जब वह उतर गयी तो उन बहिनों ने उसके दोनों हाथ काट डाले और उसकी ऑखें निकाल कर उसे अन्धा कर दिया। वह लड़की बेचारी वहीं बेहोश हो गयी। वे दोनों बहिनें उसको उसी बेहोशी की हालत में वहीं एक झाड़ी में छोड़ कर राजमहल चली गयीं।

सबसे बड़ी लड़की दुलहिन की पोशाक पहन कर शादी के लिये राजा के बेटे के पास गयी। राजा के बेटे की समझ में ही नहीं आया कि वह लड़की जिसने अनार तोड़ा था इतनी बदसूरत कैसे हो गयी। पर क्योंकि दोनों की सूरत काफी कुछ मिलती जुलती थी सो उसने सोचा कि शायद उसी से उसकी सुन्दरता के बारे में कुछ गलतफहमी हो गयी होगी।

उधर वह छोटी लड़की बिना ऑखों और हाथों के जंगल में पड़ी रो रही थी। एक गाड़ी चलाने वाला उधर से गुजर रहा था तो उसको उस लड़की को इस हालत में देख कर उस पर दया आ गयी। उसने उस लड़की को अपने साथ अपने खच्चर पर बिठा लिया और उसको अपने घर ले गया।

लड़की ने उस आदमी से नीचे देखने के लिये कहा तो उस आदमी ने नीचे देखा। उसने देखा कि वहॉ तो मोती और चॉदी पड़ी

हुई है। ये वे मोती और चॉदी थे जो उस लड़की के रोते समय गिर गये थे। उस आदमी ने उनको उठा लिया और उनको बाजार में बेच आया।

उनको बेचने से उसको एक हजार क्राउन[55] से भी ज़्यादा मिले। इतना पैसा देख कर वह तो उस लडकी की सहायता कर के बहुत खुश हो गया।

अब वह लड़की कोई काम तो कर नहीं सकती थी, न ही वह देख सकती थी और न ही वह उसके परिवार की ही कोई सहायता कर सकती थी क्योंकि उसके तो हाथ ही नहीं थे और ऑखें भी नहीं थीं।

एक दिन उस लड़की को महसूस हुआ कि कोई सॉप उसके पैरों के चारों तरफ लिपट गया है। यह वही सॉप था जिसके साथ उसने पहले दोस्ती की थी। उसको खाना खिलाया था और जिसने उसे तीन वरदान भी दिये थे।

सॉप ने उस लड़की से पूछा — "क्या तुमको मालूम है कि तुम्हारी बहिन ने राजा के बेटे से शादी कर ली है और क्योंकि राजा मर गया है वह अब रानी बन गयी है। अब उसको बच्चा भी होने वाला है और वह अंजीर[56] खाना चाहती है।"

[55] Currency in Europe at that time.

[56] Translated for the word "Fig". See its picture above.

लड़की ने उस आदमी से कहा — "एक खच्चर पर अंजीर लादो और उसे रानी को दे आओ।"

आदमी बोला — "पर इस समय में मैं अंजीर लाऊँगा कहाँ से? यह तो जाड़े का मौसम है और जाड़े के मौसम में तो अंजीर आती नहीं।"

लड़की बोली - "तुम बागीचे में जाओ तो।"

सो अगली सुबह जब वह बागीचे में गया तो वहाँ उसको एक बड़ा सा अंजीर का पेड़ दिखायी दे गया। उस पर बहुत सारी अंजीरें लगी हुई थीं पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उस पर केवल अंजीरें हीं अंजीरें थीं पत्ती कोई नहीं थी। उस आदमी ने दो टोकरियाँ भर कर अंजीर तोड़ीं और अपने खच्चर पर लाद लीं।

उस आदमी ने उस लड़की से कहा — "इन बेमौसम की अंजीरों को राजा को दे कर तो मुझे बहुत सारी कीमत मिलेगी। इनकी तो मैं कोई भी कीमत माँग सकता हूँ। बोलो मैं क्या माँगू?"

लड़की बोली — "तुम उनसे आँखें माँग लेना।"

उस आदमी ने ऐसा ही किया परन्तु न तो राजा ने, न उसकी रानी ने और न रानी की बहिन ने, किसी ने भी उसको अपनी आँखें नहीं दीं।

फिर उस लड़की की बहिनों ने आपस में बात की — "हम उसको अपनी बहिन की आँखें दे देते हैं क्योंकि वे तो हमारे किसी

काम की नहीं हैं।" सो उन्होंने अपनी बहिन की ऑखें दे कर उस आदमी से वे अंजीरें खरीद लीं।

ऑखें ले कर वह आदमी घर वापस आ गया और वे ऑखें ला कर उस लड़की को दे दीं। उन ऑखों को उसने अपने चेहरे पर फिर से लगा लिया और अब उसको फिर से पहले जैसा ही दिखायी देने लगा।

कुछ दिन बाद रानी की खूबानी[57] खाने की इच्छा हुई तो राजा ने फिर उसी आदमी को बुलवाया और कहा — "अगर तुमने अंजीर की तरह से कहीं से खूबानी का इन्तजाम नहीं किया तो.... ।

उस आदमी ने यह बात जब उस लड़की को बतायी तो उसने फिर वही कहा — "एक खच्चर पर खूबानी लादो और उसे रानी को दे आओ।"

आदमी बोला — "पर इस समय में मैं खूबानी लाऊँगा कहॉ से? इस मौसम में मुझे खूबानी कहॉ मिलेगी?"

लड़की बोली – "तुम बागीचे में जाओ तो।"

अगले दिन उसके बागीचे में खूबानी का एक पेड़ खड़ा हुआ था। अंजीर के पेड़ की तरह से खूबानी का पेड़ भी खूबानियों से भरा हुआ था पर उस पेड़ पर पत्ती एक भी नहीं थी।

[57] Translated for the word "Peach". See its picture above.

उसने उस पेड़ से दो टोकरी भर कर खूबानियॉ तोड़ीं और दरबार में ले जाने लगा तो उसने फिर से उस लड़की से पूछा — "आज मैं राजा से इन खूबानियों के बदले में क्या मॉगू?"

लड़की बोली — "आज तुम उनसे हाथ मॉग लेना।"

उस दिन उसने उन खूबानियों की कीमत हाथ मॉगी पर कोई भी अपने हाथ काट कर उसे देने को तैयार नहीं हुआ – राजा को खुश करने को भी नहीं।

सो पिछली बार की तरह से मामला फिर से बहिनों के पास आया तो उन्होंने सोचा कि उनकी बहिन के हाथ तो उनके पास बेकार ही पड़े हैं तो क्यों न हम उन्हीं हाथों को इसको दे कर ये खूबानियॉ खरीद लेते हैं।"

सो उन्होंने अपनी बहिन के हाथ उस आदमी को दे कर खूबानियॉ खरीद लीं।

उस आदमी ने वे हाथ ला कर उस लड़की को दे दिये। उस लड़की ने वे हाथ अपने हाथों की जगह लगा लिये और उसके हाथ अब पहले की तरह ही हो गये।

कुछ दिनों बाद रानी को फिर बच्चा हुआ तो वह तो एक बिच्छू था। फिर भी राजा ने एक शानदार नाच का इन्तजाम किया जिसमें सब लोगों को बुलावा भेजा गया।

बुलावा उस आदमी को भी आया जो रानी के लिये अंजीर और खूबानी ले कर गया था। वह लड़की रानी की तरह सजी और उस

नाच में गयी। राजा उसको देखते ही उससे प्यार करने लगा। बाद में उसने महसूस किया कि वह तो उसकी असली रानी थी।

जब वह हॅसती थी तो उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरते थे। जब वह रोती थी तो मोती और चॉदी गिरते थे। और जब वह हाथ धोती थी तो बर्तन मछलियों से भर जाता था।

वे दोनों नीच बहिनें और बिच्छू आग में जला दिये गये। उसी दिन उस लड़की और राजा की शादी की दावत हुई और फिर वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

10 तीन किले[58]

एक बार एक लड़के के दिमाग में आया कि वह कहीं बाहर जा कर चोरी करे। यह बात उसने अपनी मॉ से कही तो उसने उसको बहुत डॉटा।

वह बोली — "तुमको शर्म नहीं आती ऐसा कहते हुए। जाओ चर्च जाओ और वहॉ जा कर अपना यह पाप कनफैस[59] करो और सुनो कि पादरी ने तुमसे क्या कहा।"

लड़का कनफैशन करने के लिये चर्च गया तो पादरी ने कहा — "चोरी करना पाप जरूर है पर सिवाय चोरों के यहॉ चोरी करने के।" उसकी समझ में आ गया।

वहॉ से वह लड़का जंगल चला गया। जंगल के पास एक मकान था। उसने उस मकान का दरवाजा खटखटाया तो उसमें अन्दर कुछ लोग थे।

उसने उनसे कहा कि वह कोई काम चाहता है। उन्होंने उसको अपने घर का काम करने के लिये घर में नौकर रख लिया। इत्तफाक से वे सब चोर थे।

---

[58] The Three Castles. Tale No 13. A folktale from Monferrato area, Italy, Europe.

[59] A confession is a statement made by a person or a group of people acknowledging some personal fact that the person (or the group) would ostensibly prefer to keep hidden. Normally it is done in a Church before some priest but hidden from the confessor, so both do not see each other.

चोरों ने उसको बताया कि "हम लोग चोर हैं और चोरी करते हैं। पर हम कोई पाप नहीं करते क्योंकि हम टैक्स लेने वालों के घर चोरी करते हैं और उनसे लिया हुआ पैसा गरीबों में बॉट देते हैं।"

एक दिन जब वे चोर एक टैक्स लेने वाले के घर चोरी करने गये हुए थे तो उस लड़के ने उन चोरों की घुड़साल से उनका सबसे अच्छा खच्चर निकाला, उस पर सोने के कुछ टुकड़े लादे और वहॉ से भाग लिया।

उसने वह सोना तो अपनी मॉ को दे दिया और फिर काम ढूँढने शहर चला गया। उस शहर के राजा के पास सौ भेड़ें थीं पर उन भेड़ों की देखभाल करने के लिये कोई तैयार नहीं था। उस लड़के ने राजा से कहा — "मैं आपकी भेड़ों की देखभाल करूँगा।"

राजा बोला — "देखो हमारे पास सौ भेड़ें हैं। कल सुबह तुम इन सबको घास खिलाने के लिये मैदान ले जाओ। वहॉ एक नाला है। ध्यान रखना कि ये भेड़ें उस नाले के उस पार न जाने पायें क्योंकि उधर एक सॉप रहता है। अगर वे उधर गयीं तो वह सॉप उनको खा जायेगा।

अगर तुम बिना किसी भेड़ को खोये हुए वापस आ गये तो मैं तुमको इनाम दूँगा और अगर सारी भेड़ों को वापस ले कर नहीं आये तो मैं तुमको वहीं का वहीं निकाल दूँगा जब तक कि वह सॉप तुमको ही न खा जाये।"

उस घास के मैदान तक पहुँचने के लिये उसको राजा के महल की खिड़कियों के पास से हो कर जाना पड़ता था। उस दिन उस महल की एक खिड़की पर राजा की बेटी खड़ी थी। उसने जब उस लड़के को भेड़ ले जाते देखा तो वह उस पर मोहित हो गयी।

राजा की बेटी के हाथ में एक केक थी सो अपनी खिड़की से ही उसने वह केक उस लड़के की तरफ फेंक दी। उस लड़के ने वह केक लपक ली और यह सोच कर रख ली कि वह उस केक को मैदान में खायेगा।

जब वह मैदान में पहुँचा तो वहाँ उसको घास में पड़ा एक बड़ा सा सफेद पत्थर दिखायी दिया। उस पत्थर को देख कर उसने सोचा कि मैं इस पत्थर बैठ कर राजा की बेटी की दी हुई यह केक खाता हूँ पर उसे ध्यान से देखने पर पता चला कि वह पत्थर तो उस नाले के उस पार पड़ा हुआ था।

हालाँकि राजा ने उसे पहले ही चेतावनी दे रखी थी कि वह उस नाले के उस पार न जाये पर फिर भी उस लड़के ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वह नाले के उस पार कूद गया।

उसके पीछे पीछे उसकी भेड़ें भी नाले के उस पार चली गयीं। उधर की तरफ की घास बड़ी थी सो भेड़ें आराम से उस घास को चरने लगीं।

लड़का उस सफेद पत्थर पर बैठ गया और अपना केक खाने लगा। अचानक उसका वह पत्थर इतनी ज़ोर से हिला कि उसको

लगा जैसे सारी दुनियॉ हिल गयी हो। लड़के ने चारों तरफ देखा पर जब उसको कहीं कोई दिखायी नहीं दिया तो वह फिर अपना केक खाने लगा।

कुछ पल बाद उसको एक बार फिर से धक्का लगा जो पहले वाले धक्के से कहीं ज़्यादा ज़ोर का था पर उस लड़के ने इस धक्के पर भी कोई ध्यान नहीं दिया। कुछ पल बाद उसको तीसरा धक्का लगा तो उसने देखा कि एक तीन सिर वाला सॉप उस पत्थर के नीचे से निकल रहा था।

उसने अपने तीनों मुॅहों से लड़के की तरफ देखा तो लड़के ने देखा कि उसके तीनों मुॅहों में एक एक गुलाब था। ऐसा लग रहा था जैसे वह सॉप वे गुलाब उस लड़के को दे रहा हो।

वह लड़का उन गुलाबों को लेने ही वाला था कि उस सॉप ने अपने तीनों मुॅहों से उसके ऊपर इतनी ज़ोर से फुंकार मारी जैसे वह उसको तीन कौर में ही खा जायेगा।

पर वह छोटा सा लड़का उससे ज़्यादा तेज़ था। उसने अपना डंडा अपने सिर के ऊपर उठाया और जल्दी जल्दी उसके तीनों सिरों पर मार दिया। डंडे की मार से वह सॉप नीचे गिर पड़ा तो उस लड़के ने उसके तीनों सिर काट लिये।

उसके दो सिर तो उसने अपनी शिकारी वाली जैकेट की जेब में रख लिये और तीसरे सिर को उसने यह देखने के लिये कि इसके

अन्दर क्या है कुचल कर तोड़ डाला। उस सिर के अन्दर उसको एक क्रिस्टल की चाभी मिली।

उस लड़के ने वह चाभी तो निकाल ली और फिर उस सफेद पत्थर को वहॉ से हटाया तो वहॉ उसको एक चोर दरवाजा मिला जिसमें एक ताला लगा हुआ था।

उसने वह क्रिस्टल की चाभी उस दरवाजे को खोलने के लिये इस्तेमाल की तो वह दरवाजा उस चाभी से खुल गया।

ताला खोल कर वह अन्दर गया तो वहॉ तो एक बड़ा शानदार महल था जो खालिस क्रिस्टल का बना हुआ था। उस क्रिस्टल के महल के दरवाजे से बहुत सारे क्रिस्टल के नौकर निकल पड़े और बोले — "आपका स्वागत है मालिक। आपको क्या चाहिये।"

लड़का बोला — "मुझे अपना सारा खजाना देखना है।"

वे लोग उसको क्रिस्टल की सीढ़ियों से ऊपर ले गये। वहॉ उन्होंने उसको क्रिस्टल की बनी घुड़सालें दिखायीं जिनमें क्रिस्टल के घोड़े थे, क्रिस्टल के हथियार थे और क्रिस्टल के ही जिरहबख्तर[60] भी थे।

फिर उन्होंने उसको क्रिस्टल के बागीचे दिखाये जिनके रास्तों पर क्रिस्टल के पेड़ लगे थे और जिन पर क्रिस्टल की चिड़ियें गा

[60] Translated for the word "Armor". Armor is worn over the body to protect it. It may be of iron for the war.

रही थीं। वह क्यारियों से हो कर गुजरा तो उसने देखा कि वहॉ तो क्रिस्टल के ही फूल भी खिले हुए थे।

वहॉ क्रिस्टल के तालाब थे जिनके चारों तरफ क्रिस्टल के फूलों के पौधे लगे हुए थे। लड़के ने उन क्रिस्टल के फूलों में से एक छोटा सा फूलों का गुच्छा तोड़ा और अपने टोप में लगा लिया।

उस शाम जब वह भेड़ें चरा कर घर वापस लौटा तो उसने देखा कि राजा की बेटी तो तभी भी उसी खिड़की पर खड़ी बाहर की तरफ देख रही थी।

उसके टोप में लगा वह फूल देख कर वह बोली — "क्या मैं तुम्हारे टोप का यह फूलों का गुच्छा ले सकती हूँ?"

लड़का बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। ये क्रिस्टल के फूल हैं जो मेरे क्रिस्टल के किले के क्रिस्टल के बागीचे के हैं।" ऐसा कह कर उसने फूलों का वह गुच्छा अपने टोप में से निकाल कर राजा की बेटी की तरफ फेंक दिया। राजा की बेटी ने भी उसको लपक कर पकड़ लिया।

राजा उसको अपनी सारी भेड़ों के साथ वापस आया देख कर बहत खुश हुआ।

अगले दिन वह फिर राजा की भेड़ें चराने गया। जब वह अगले दिन उस पत्थर के पास पहुँचा तो वहॉ जा कर उसने सॉप का दूसरा सिर निकाल कर उसको कुचल दिया। अबकी बार उसमें से उसको एक चॉदी की चाभी मिली।

सॉप के सिर में से चॉदी की चाभी निकाल कर उसने वह सफेद पत्थर फिर से हटाया और अबकी बार उसने वह दरवाजा चॉदी की चाभी से खोला तो वह एक ठोस चॉदी के महल में पहुँच गया। उस महल के दरवाजे से चॉदी के नौकर निकले और उन्होंने उससे कहा — "हुक्म सरकार।"

उसने उनसे भी वही कहा जो उसने क्रिस्टल के किले के नौकरों से कहा था — "हमें हमारा खजाना दिखाओ।"

वे चॉदी के नौकर उसको चॉदी का खजाना दिखाने के लिये ले गये। चॉदी का रसोईघर जहॉ चॉदी के मुर्गे भूने जा रहे थे। चॉदी के बागीचे जहॉ चॉदी के मोर अपने पंख फैलाये खड़े थे। वहॉ से भी उसने चॉदी के फूलों का एक गुच्छा तोड़ा और अपने टोप में लगा लिया।

उस रात जब वह अपनी भेड़ें ले कर राजा के घर पहुँचा तो उसने देखा कि राजा की बेटी तो अभी भी खिड़की में बैठी बाहर देख रही थी।

जब उसने इस लड़के को आते देखा तो उसको उसके टोप में लगा चॉदी के फूलों का गुच्छा बहुत अच्छा लगा। उसने उससे फिर कहा कि क्या वह उसके टोप में लगे फूलों का गुच्छा ले सकती है?

"हॉ हॉ क्यों नहीं। ये मेरे चॉदी के महल के चॉदी के बागीचे के चॉदी के फूल हैं।" और यह कह कर उसने वह चॉदी के फूलों का

गुच्छा उसकी तरफ उछाल दिया। राजा की बेटी ने वह चॉदी के फूलों का गुच्छा भी लपक कर पकड़ लिया।

तीसरे दिन वह फिर राजा की भेड़ें चराने गया। जब वह लड़का उस सफेद पत्थर के पास पहुँचा तो अबकी बार उसने सॉप का वह बचा हुआ तीसरा सिर भी तोड़ दिया। अबकी बार उसके सिर में से उसको सोने की चाभी मिली।

सॉप के सिर से सोने की चाभी निकालने के बाद उसने फिर से वह पत्थर उठाया और उसके चोर दरवाजे को सोने की चाभी से खोला।

दरवाजा खुल गया और इस बार वह एक ठोस सोने के महल में घुसा जहॉ सोने के नौकर थे। वे सिर के बालों से ले कर अपने जूतों तक पूरे सोने के बने हुए थे।

उन्होंने भी उसके पास आ कर पूछा — "मालिक, हम आपके लिये क्या करें?"

उसने उनको भी वही जवाब दिया —"हमको हमारा खजाना दिखाओ।"

सो वे उसको वह सोने का महल दिखाने ले गये। वहॉ सोने के पलंग थे जिन पर सोने के बिस्तर लगे हुए थे। उन पर सोने की चादरें बिछी हुई थीं और सोने के ही तकिये थे। उन कमरों की सोने की ही छतें थीं।

उस सोने के महल के सोने के बागीचे में सैंकड़ों सोने की चिड़ियें चहचहा रही थीं। वहॉ सोने के फव्वारे लगे थे जिनमें से सोने का पानी निकल निकल कर इधर उधर बिखर रहा था।

उसने उस सोने के बागीचे की एक क्यारी से सोने के फूलों का एक छोटा सा गुच्छा तोड़ा और अपने टोप में लगा लिया।

उस रात जब वह अपनी भेड़ें ले कर राजा के घर पहुँचा तो वह राजकुमारी रोज की तरह अभी भी उसी खिड़की में बैठी हुई थी। उस लड़के को आता देख कर वह फिर बोली कि क्या मैं तुम्हारे टोप में लगे ये फूल ले सकती हूँ?

"हॉ हॉ क्यों नहीं। ये मेरे सोने के महल के सोने के बागीचे के सोने के फूल हैं।" और यह कह कर उसने वह सोने के फूलों का गुच्छा उसकी तरफ उछाल दिया। राजा की बेटी ने वह गुच्छा भी लपक कर पकड़ लिया।

एक दिन राजा ने एक टूनमैन्ट का इन्तजाम किया और घोषणा की कि यह टूनमैन्ट तीन दिन तक चलेगा और जो कोई उन तीनों टूनमैन्ट्स में जीतेगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा।

यह सुन कर वह लड़का अपने क्रिस्टल के महल में आया और क्रिस्टल का एक घोड़ा निकाला जिसकी लगाम और जीन सब क्रिस्टल की थी। उसने फिर अपना क्रिस्टल का जिरहबख्तर पहना और अपने क्रिस्टल के घोड़े पर सवार हो कर टूनमैन्ट में हिस्सा लेने चल दिया। उसके हाथ में क्रिस्टल का एक भाला भी था।

उस पहले दिन के टूनामैन्ट में उसने सब लड़ने वालों को हरा दिया और अपने आपको दिखाये बिना ही वहॉ से वापस चला आया।

अगले दिन वह चॉदी के घोड़े पर सवार हो कर टूनामैन्ट में हिस्सा लेने के लिये लौटा। उस दिन वह चॉदी के घोड़े पर सवार था जिसकी चॉदी की लगाम थी, चॉदी की जीन थी और उसके पास चॉदी का भाला और चॉदी की ढाल थी। वह चॉदी का जिरहबख्तर पहने था।

इस बार भी उसने सब लड़ने वालों को हरा दिया और पहले की तरह से अपने आपको बिना दिखाये ही चला आया।

तीसरे दिन वह सोने के घोड़े पर सवार हो कर आया। उस दिन वह सोने के घोड़े पर सवार था। उसके सोने के घोड़े की सोने की लगाम थी और सोने की ही जीन थी। उसके पास सोने का भाला था और वह सोने का जिरहबख्तर पहने था। उसके पास सोने की एक ढाल भी थी।

इस बार भी उसने सब लड़ने वालों को हरा दिया और पहले की तरह से अपने आपको बिना दिखाये बिना ही जाने लगा तो वह राजकुमारी बोल पड़ी — "मैं जानती हूॅ तुम कौन हो। तुम वही आदमी हो जिसने मुझे अपने क्रिस्टल के महल से क्रिस्टल के फूल, चॉदी के महल से चॉदी के फूल और सोने को महल से सोने के फूल ला कर दिये थे।"

तब उसको अपने आपको दिखाना ही पड़ा तो राजा तो उसको देखते ही हक्का बक्का रह गया। यह तो उसका अपना ही भेड़ चराने वाला था।

पर अपनी घोषणा के अनुसार उसने अपनी बेटी की शादी उस चरवाहे से कर दी और उसे राजा बना दिया।

11 एक राजकुमार जिसने मेंढकी से शादी की[61]

एक बार एक राजा था जिसके तीन बेटे थे और उसके तीनों बेटे शादी के लायक थे।

जिससे कि उनकी पत्नियॉ चुनने में किसी तरह की झगड़ा न हो इसलिये राजा ने कहा — "तुम लोग अपनी अपनी गुलेलों से जितना दूर पत्थर फेंक सकते हो फेंको और जिसका पत्थर जहॉ पड़ेगा वहीं से तुम्हारी पत्नी चुनी जायेगी।"

सो तीनों लड़कों ने अपनी अपनी गुलेलें उठा लीं और उसमें पत्थर रख कर बहुत ज़ोर से मारा। सबसे बड़े बेटे का पत्थर एक बेकरी[62] की छत पर पड़ा सो उसकी शादी उस दूकान के मालिक की बेटी से तय कर दी गयी।

दूसरे बेटे का पत्थर एक कपड़ा बुनने वाले के घर पर जा कर गिरा सो उसकी शादी उस कपड़ा बुनने वाले की लड़की से तय कर दी गयी। पर सबसे छोटे बेटे का पत्थर एक गड्ढे में गिर पड़ा।

गुलेल चलाने के बाद तुरन्त ही हर बेटा अपनी अपनी पत्नी को अॅगूठी पहनाने के लिये दौड़ पड़ा।

---

[61] The Prince Who Married a Frog. Tale No 14. A folktale from Italy from its Monferrato area.

[62] Bakery is a place where bread, bun, cake etc are baked.

सबसे बड़े लड़के की पत्नी बहुत सुन्दर थी। बीच वाले लड़के की पत्नी बहुत गोरी थी। उसके बाल और उसकी खाल दोनों रेशमी थे।

पर सबसे छोटा लड़का अपनी पत्नी को उस गड्ढे में ढूँढता रहा ढूँढता रहा पर एक मेंढकी के अलावा उस गड्ढे में उसको और कुछ मिला ही नहीं।

वे सब अपनी अपनी पत्नियों के बारे में राजा को बताने के लिये घर लौटे तो राजा बोला — "अब जिस किसी की भी पत्नी सबसे अच्छी होगी राजगद्दी उसी को मिलेगी। सो अब उन लड़कियों का इम्तिहान शुरू होता है।"

इतना कह कर उसने अपने तीनों बेटों को कुछ रुई दी और कहा कि वे उसको अपनी होने वाली पत्नियों को दे दें और वे उसको तीन दिन के अन्दर अन्दर कात कर राजा के पास लायेंगी। इससे वह यह देखना चाहता था कि उन तीनों में से कौन सबसे अच्छा धागा कातती थी।

सब बेटे अपनी अपनी होने वाली पत्नियों के पास गये और उनको वह रुई दे कर उनसे तीन दिन के अन्दर अन्दर सबसे अच्छा सूत कातने के लिये कहा।

सबसे छोटा बेटा बहुत ही परेशान था कि वह कैसे उस रुई को ले कर अपनी मेंढकी पत्नी के पास जाये और उससे सूत कातने के लिये कहे।

पर फिर भी वह उस गड्ढे के पास गया और अपनी पत्नी को पुकारा — "मेंढकी ओ मेंढकी।"

"मुझे कौन पुकार रहा है?"

लड़का बोला — "मैं तुम्हारा प्यार जो तुमको प्यार नहीं करता।"

"अगर तुम मुझको प्यार नहीं करते तो न करो पर बाद में तुम मुझे प्यार जरूर करोगे जब मैं बहुत सुन्दर हो जाऊँगी।"

वह मेंढकी पानी से कूद कर बाहर आ गयी और बाहर आ कर एक पत्ते पर बैठ गयी।

राजा के बेटे ने उसको अपने पिता की दी हुई रुई देते हुए उससे कहा — "हम तीन भाई हैं। मेरे दोनों भाइयों की शादी तो लड़कियों से होने वाली है और मेरी शादी तुमसे होगी। मेरे पिता ने कहा है कि हममें से जिस किसी की होने वाली पत्नी सबसे होशियार होगी उनका राज्य उसी को मिलेगा।

इम्तिहान के लिये अभी उन्होंने यह रुई दी है और कहा है कि सब लड़कियाँ रुई का सूत कातें। मैं देखना चाहता हूँ कि कौन सबसे अच्छा सूत कातती है। मैं इसका कता हुआ सूत लेने के लिये तीन दिन बाद आऊँगा।"

तीन दिन के बाद राजा के दोनों बड़े बेटे अपनी अपनी होने वाली पत्नियों के पास उनके काते हुए सूत लेने के लिये गये। बेकरी वाले की लड़की ने बहुत ही सुन्दर सूत काता था और कपड़ा बुनने

वाले की लड़की तो इस काम में माहिर थी सो उसका कता हुआ सूत तो रेशम की तरह दिखायी देता था।

पर हमको तो राजा के सबसे छोटे बेटे की चिन्ता है कि उसका क्या हुआ? वह उस गड्ढे के पास गया और पुकारा — "ओ मेंढकी, ओ मेंढकी।"

"मुझे किसने पुकारा?"

"तुम्हारा प्यार जो तुमको प्यार नहीं करता।"

"अगर तुम मुझको प्यार नहीं करते तो न सही। कोई बात नहीं। बाद में तुम करोगे जब मैं बहुत सुन्दर हो जाऊँगी।"

कह कर वह मेंढकी पानी में से कूद कर बाहर आ कर एक पत्ते पर बैठ गयी। उसके मुँह में एक अखरोट था।

उसने वह अखरोट अपने पति को दिया और उसको ले जा कर अपने पिता को देने के लिये कहा। उसने यह भी कहा कि वह उनसे कहे कि वह उस अखरोट को तोड़ लें।

वह लड़का उस अखरोट को अपने पिता को देने में हिचकिचा रहा था क्योंकि उसके दोनों भाई बहुत सुन्दर कता हुआ सूत लाये थे।

खैर फिर भी हिम्मत कर के उसने अपना अखरोट अपने पिता को दे दिया। पिता ने जिसने पहले ही अपने दोनों बेटों की पत्नियों के कामों को देख रखा था कुछ शक से उस अखरोट को तोड़ा।

दोनों बड़े भाई भी देख रहे थे कि उनका छोटा भाई यह कैसा सूत कतवा कर लाया है।

पर सब आश्चर्यचकित रह गये जब उस अखरोट में से इतना बढ़िया धागा निकला जितना कि मकड़ी का जाला होता है और इतना सारा निकला कि उस धागे से राजा का सारा कमरा ढक गया।

राजा बोला — "पर इसका कोई ओर छोर तो कहीं दिखायी ही नहीं दे रहा।" जैसे ही ये शब्द उसके मुँह से निकले वह धागा खत्म हो गया।

मेंढकी के हाथ का कता धागा इतना बढ़िया होने पर भी पिता को एक मेंढकी को रानी बनाने का विचार कुछ जमा नहीं सो उसने एक और इम्तिहान लेने का विचार किया। राजा की शिकारी कुतिया ने तभी तभी तीन बच्चों को जन्म दिया था।

उन तीनों बच्चों को उसने अपने तीनों बेटों को दिया और बोला — "इनको अपनी अपनी होने वाली पत्नियों के पास ले जाओ और उनको दे दो। फिर एक महीने बाद उनके पास जाना और जिसने भी अपने कुत्ते की सबसे अच्छी देखभाल की होगी वही इस राज्य की रानी बनेगी।"

सो उसके तीनों बेटों ने वे कुत्ते के बच्चे लिये और उनको ले जा कर अपनी अपनी होने वाली पत्नियों को दे आये।

एक महीने बाद वे फिर गये तो बेकरी वाले की बेटी का कुत्ता खूब बड़ा और मोटा हो चुका था क्योंकि उसको वहाँ हर तरह की डबल रोटी खाने को मिलती थी।

कपड़ा बुनने वाली का कुत्ता इतना बड़ा और मोटा नहीं हो पाया था क्योंकि उसको उतना खाना नहीं मिल पाया था। वह आधा भूखा सा था।

सबसे छोटा बेटा एक छोटा सा बक्सा लिये चला आ रहा था। राजा ने उस बक्से को खोला तो उसमें से एक बहुत छोटा सा बड़े बड़े बालों वाला कुत्ता कूद पड़ा।

वह छोटा सा कुत्ता बहुत सुन्दर लग रहा था और उसके बालों में से खुशबू आ रही थी। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो कर आगे बढ़ रहा था।

अबकी बार राजा बोला — "इसमें मुझे कोई शक नहीं लगता कि मेरा सबसे छोटा बेटा ही राजा बनेगा और वह मेंढकी रानी बनेगी।"

सो राजा ने अपने तीनों बेटों की शादी एक ही दिन करने का फैसला किया।

दोनों बड़े भाई फूलों और मोतियों की माला से सजायी गयी और चार घोड़ों से खींची गयी गाड़ियों में सवार हो कर अपनी अपनी होने वाली पत्नियों को लाने गये। वहाँ पंखों और जवाहरातों

से सजी हुई वे लड़कियॉ उन गाड़ियों में सवार हुईं और शादी के लिये महल चल दीं।

सबसे छोटा लड़का उस गड्ढे के पास गया जहॉ वह मेंढकी एक अंजीर[63] के पत्ते से बनी और चार घोंघों[64] से खींची जा रही गाड़ी में बैठी उसका इन्तजार कर रही थी।

राजकुमार आगे आगे चला और वे घोंघे अंजीर के पत्ते पर मेंढकी को बिठा कर उसके पीछे पीछे चले। थोड़ी थोड़ी दूर पर उस लड़के को रुकना पड़ता था ताकि वे घोंघे उसके साथ तक आ जायें।

इतनी धीरे धीरे चलने की वजह से एक बार तो वह राजकुमार सो ही गया था। और जब उसकी ऑख खुली तो एक सोने की गाड़ी उसके बराबर में आ कर रुकी।

उस गाड़ी को दो सफेद घोड़े खींच रहे थे। उसमें अन्दर मखमल के गद्दे लगे हुए थे और उसमें सूरज से भी ज़्यादा चमकदार एक लड़की बैठी हुई थी। उसने पन्ने जैसे हरे रंग की पोशाक पहनी हुई थी।

उस लड़के ने पूछा — "तुम कौन हो?"

"मैं मेंढकी हूँ, तुम्हारी पत्नी।"

[63] Translated for the word "Fig". See its picture above.

[64] Translated for the word "Snail". See its picture above.

वह तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं कर सका कि वही लड़की उसकी मेंढकी थी। उस लड़की ने गहनों का एक बक्सा खोला और उसमें से अंजीर का एक पत्ता निकाला और घोंघों के चार खोल निकाल कर उस लड़के को दिखाये।

फिर वह उस लड़के से बोली — "मैं एक राजकुमारी थी जिसको एक परी ने जादू से एक मेंढकी बना दिया था। मेरे आदमी के रूप में आने का केवल एक ही तरीका था कि कोई राजकुमार मुझसे उसी शक्ल में शादी करने को तैयार हो जाये जिसमें मैं थी।

तुम मुझसे शादी करने को तैयार हो गये तो मैं अपने असली रूप में आ गयी।"

दोनों बड़े भाई अपने छोटे भाई से जल रहे थे। जब राजा को इस बात का पता चला तो वह अपने दोनों बड़े बेटों से बोला जिसने भी गलत पत्नी चुनी है वह राज्य करने के लायक नहीं है।

इसलिये उसने अपने सबसे छोटे बेटे और उसकी मेंढकी पत्नी को उस राज्य का राजा और रानी बना दिया।

12 तोता[65]

एक बार की बात है कि एक शहर में एक व्यापारी रहता था। उसके एक बेटी थी।

एक बार उस व्यापारी को अपने व्यापार के काम से कहीं बाहर जाना था पर वह अपनी उस बेटी को अकेले छोड़ने से डरता था क्योंकि एक राजा की नजर उसकी बेटी पर थी और वह उस राजा से अपनी बेटी की शादी करना नहीं चाहता था।

जाना जरूरी था सो जाने से पहले उसने अपनी बेटी से कहा — "बिटिया, मैं ज़रा अपने धन्धे के काम से बाहर जा रहा हूँ पर तुम मुझसे वायदा करो कि जब तक मैं वापस नहीं आता तब तक न तो तुम घर के दरवाजे से बाहर झॉकोगी और न ही किसी और को घर के अन्दर झॉकने दोगी।"

वह बोली — "पिता जी, मुझे घर में बिल्कुल अकेले रहते हुए बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा है। क्या मैं एक तोता[66] भी अपने साथ के लिये नहीं रख सकती?"

---

[65] The Parrot. Tale No 15. A folktale from Monferrato area, Italy, Europe.
[There is one book from India "Shuka Saptati" in which a parrot tells 70 tales to a woman to stop her going to her lover in the absence of her husband. It is originally written in Sanskrit, but I have translated it in HIndi. Interested people may write to my e-mail address for its e-Version. Besides There is another collection of tales of parrots "Parrots in Folktales". This is also available in HIndi. This can also be obtained by writing on the same e-mail address for its an e-Version.

[66] Translated for the word "Parrot". Parrots are of many colors and sizes. Parrots are famous for their talking qualities. A picture of Indian green parrot is given above.

व्यापारी जो बेचारा अपनी बेटी के लिये ही जीता था तुरन्त बाजार गया और अपनी बेटी के लिये एक तोता खरीद लाया। उसको एक बूढ़ा मिल गया था जिसने उस तोते को एक गीत के बदले में उसे बेच दिया।

वह उस तोते को अपनी बेटी के पास ले गया और उस तोते को उसको दे कर और आखीर तक उसको उपदेश देने के बाद अपने काम पर चला गया।

जैसे ही वह व्यापारी अपने घर से बाहर गया तो उस राजा ने जो उससे शादी करना चाहता था उस लड़की से मिलने की तरकीब सोचनी शुरू कर दी। उसने एक बुढ़िया को बुलाया और उसको उस लड़की के लिये एक चिट्ठी दे कर उस लड़की के घर भेजा।

इस बीच उस लड़की ने तोते से बात करना शुरू कर दिया — "मुझसे बात करो ओ तोते, मुझसे बात करो न।"

तोता बोला — "अच्छा तो लो सुनो, मैं तुमको एक बड़ी अच्छी कहानी सुनाता हूँ —

"एक बार की बात है कि एक राजा था जिसकी एक ही बेटी थी। वह उसकी अकेली बच्ची थी। उसके न तो कोई और बेटा था और न ही और कोई बेटी ही थी।

उसके साथ कोई खेलने वाला भी नहीं था इसलिये उसके माता पिता ने उसके लिये एक इतनी बड़ी गुड़िया बनवा दी जितनी बड़ी

वह खुद थी। उन्होंने उसको वैसे ही कपड़े भी पहना दिये जैसे उनकी बेटी पहनती थी।

अब जहॉ भी वह राजकुमारी जाती उसकी गुड़िया भी उसके साथ ही जाती। दोनों को एक साथ देख कर कोई यह नहीं कह सकता था कि उनमें से कौन सी राजकुमारी थी और कौन सी गुड़िया थी।

एक दिन राजा अपनी बेटी और उसकी गुड़िया को ले कर अपनी गाड़ी में जंगल में से जा रहा था कि रास्ते में दुश्मनों ने उसकी गाड़ी पर हमला कर दिया।

राजा मारा गया और दुश्मन राजा की बेटी को ले कर भाग गये पर गुड़िया को वे वहीं छोड़ गये। उसको नहीं ले गये सो वह वहीं छोड़ी हुई गाड़ी में ही पड़ी रही।

लड़की खूब रोयी खूब चिल्लायी तो दुश्मनों ने उसको भी वहीं छोड़ दिया और भाग गये। वह लड़की बेचारी अकेली जंगल में भटकती रही। भटकते भटकते वह एक रानी के दरबार में पहुॅच गयी और वहॉ जा कर वह उस रानी की नौकरानी बन गयी।

वह लड़की बहुत होशियार थी सो रानी उसको बहुत प्यार करती थी। यह देख कर रानी के दूसरे नौकर उससे जलने लगे और उस लड़की को रानी की नजरों में नीचे गिराने के लिये जाल बिछाने लगे।

उन्होंने उस लड़की से कहा — "तुमको तो मालूम है कि रानी जी तुमको बहुत प्यार करती हैं और तुमको हर बात बता देती हैं पर एक बात ऐसी है कि जो हमको मालूम है और तुमको नहीं मालूम।"

लड़की ने पूछा — "ऐसी कौन सी बात है?"

नौकरों ने तब उसको बताया — "वह बात यह है कि रानी के एक बेटा था जो मर गया है।"

यह सुन कर वह लड़की रानी के पास गयी और बोली — "रानी जी क्या यह सच है कि आपके एक बेटा था और वह मर गया है?"

यह सुन कर रानी तो बेहोश होते होते बची। भगवान जाने यह सच्चाई उस लड़की को किसने बतायी क्योंकि केवल यह कहने की सजा कि "रानी का बेटा मर गया था" मौत थी। इसलिये उस लड़की को भी मरने की सजा सुनायी जानी चाहिये थी।

पर रानी को उस लड़की पर दया आ गयी और उसने उसको बजाय मौत की सजा सुनाने के एक तहखाने में बन्द कर दिया।

तहखाने में बन्द होने के बाद वह लड़की बहुत ही उदास और नाउम्मीद हो गयी। उसका खाना पीना छूट गया और वह रात रात भर रोने लगी।

एक दिन आधी रात को जब वह रो रही थी तो उसने दरवाजे की कुंडी खिसकने की आवाज सुनी और पॉच आदमी अन्दर आते देखे। उन पॉच आदमियों में से चार आदमी जादूगर थे और पॉचवॉ

रानी का बेटा था। रानी के बेटे को उन जादूगरों ने वहीं उसी रानी के तहखाने में कैद कर रखा था जिसको वे इस समय घुमाने ले जा रहे थे।"

उसी समय उस लड़की की नौकरानी ने तोते की वह कहानी बीच में ही रोक दी। वह उस लड़की के लिये किसी की चिट्ठी ले कर आयी थी।

असल में वह चिट्ठी उसी राजा की थी जो उस लड़की से बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था। और उस लड़की का पिता भी उसी के डर से अपनी बेटी को अकेला छोड़ना नहीं चाहता था। पर उस राजा ने किसी तरह व्यापारी की उस लड़की तक पहुँचने की तरकीब निकाल ली थी।

पर लड़की को तो उस तोते की कहानी बहुत अच्छी लग रही थी और वह यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थी कि उस कहानी में आगे क्या हुआ क्योंकि अभी तो उसमें उस कहानी का सबसे अच्छा हिस्सा आने वाला था।

वह अपनी नौकरानी से बोली — "मैं कोई चिट्ठी नहीं लूँगी जब तक मेरे पिता जी नहीं आ जाते। तोते, तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

वह नौकरानी वह चिट्ठी वहाँ से वापस ले गयी और तोते ने अपनी कहानी फिर से शुरू कर दी —

"सुबह को जेलर ने देखा कि उस लड़की ने तो कुछ खाया ही नहीं है। यह बात उसने जा कर रानी से कही।

यह सुन कर रानी ने उस लड़की को बुला भेजा तो लड़की ने उसे बताया कि उसका बेटा तो ज़िन्दा था और वह भी वहीं उसी तहखाने में ही चार जादूगरों का कैदी था। वे उसको हर रात घुमाने ले जाते थे।

रानी यह सुन कर बहुत खुश हुई। उसने तुरन्त ही अपने बारह सिपाही कोबार[67] ले कर तहखाने में भेज दिये। उन्होंने उन चारों जादूगरों को मार डाला और रानी के बेटे को उनसे छुड़ा कर ले आये।

रानी अपना बेटा पा कर बहुत खुश हुई। उसके बाद रानी ने उस लड़की की शादी अपने बेटे से कर देने के लिये सोचा क्योंकि उसी ने तो उसको ज़िन्दा किया था और जादूगरों के हाथ से बचाया था।"

तभी उस लड़की की नौकरानी ने फिर से दरवाजा खटखटाया और ज़ोर दिया कि उसको वह चिट्ठी पढ़ लेनी चाहिये।

लड़की बोली — "ठीक है ठीक है। अब जब यह कहानी खत्म हो ही गयी है तो मैं यह चिट्ठी पढ़ सकती हूँ।"

पर तभी तोता जल्दी से बोला — "पर यह कहानी अभी खत्म नहीं हुई अभी तो कहानी और बची है। तुम सुनो तो।"

[67] Crowbar – a kind of iron rod with a turned end. See its picture above.

वह आगे बोला — "लेकिन वह लड़की उस रानी के बेटे से शादी नहीं करना चाहती थी। उसने रानी से उसके बदले में धन मॉगा और एक आदमी के कपड़े मॉगे।

रानी ने जब उसको धन और कपड़े दोनों दे दिये तो वह उस राज्य को छोड़ कर वहॉ से दूसरे शहर चल दी।

इस दूसरे शहर के राजा का बेटा बीमार था और कोई डाक्टर उसको ठीक नहीं कर पा रहा था। उसकी बीमारी यह थी कि आधी रात से ले कर सुबह तक वह ऐसा हो जाता था जैसे किसी भूत प्रेत या आत्मा ने उसके ऊपर अपना असर कर रखा हो।

यह लड़की आदमी के वेश में वहॉ गयी और उन लोगों से कहा कि वह डाक्टर है और किसी दूसरे देश से आया है। वह राजा के बेटे का इलाज करना चाहता है और इस इलाज के लिये वह उस राजा के नौजवान बेटे के साथ एक रात अकेला रहना चाहता है।

कोई राजा के बेटे का इलाज कर दे इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी सो उसको राजा के बेटे के साथ एक रात अकेले रहने की इजाज़त दे दी गयी।

सबसे पहले तो उस लड़की ने राजा के बेटे के पलंग के नीचे देखा तो वहॉ उसको एक चोर दरवाजा दिखायी दिया। उसने वह चोर दरवाजा खोला और उसके अन्दर चली गयी। वहॉ से वह एक बरामदे में निकल आयी थी। बरामदे के दूसरे छोर पर उसको एक जलता हुआ लैम्प दिखायी दिया।"

उसी समय नौकरानी ने फिर से दरवाजा खटखटाया और उस लड़की को बताया कि एक बुढ़िया उस लड़की से मिलना चाहती थी।

वह बुढ़िया कहती थी कि वह उस लड़की की चाची थी। पर असल में यह बुढ़िया उस लड़की की कोई चाची वाची नहीं थी यह तो उसी राजा की भेजी हुई बुढ़िया थी जो उसको बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था।

पर वह लड़की तो कहानी सुनने में इतनी मस्त थी कि उसने अपनी नौकरानी से कहा कि वह अभी इस समय किसी बुढ़िया वुढ़िया से मिलना नहीं चाहती और फिर तोते से बोली — "तोते, तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

तोते ने अपनी कहानी फिर आगे बढ़ायी — "सो वह लड़की उस बरामदे में आगे बढ़ती गयी, बढ़ती गयी और लैम्प के पास तक पहुँच गयी। वहाँ जा कर उसने देखा कि एक बुढ़िया आग पर एक बर्तन में राजकुमार का दिल उबाल रही है।

ऐसा वह इसलिये कर रही थी क्योंकि राजा ने उसके लड़कों को फाँसी दिलवा दी थी। लड़की ने उस बर्तन से राजकुमार का दिल निकाल लिया और उसको राजकुमार के पास खाने के लिये ले गयी। जैसे ही राजकुमार ने अपना दिल खाया राजकुमार ठीक हो गया।

राजा को बाद में पता चला कि वह कोई लड़का नहीं था बल्कि एक लड़की थी।

राजा बोला — "तुमने मेरे बेटे को ठीक किया है इसलिये अपना आधा राज्य मैं तुमको देता हूँ पर तुम क्योंकि एक लड़की हो इसलिये तुम मेरे बेटे से शादी कर लो और रानी बन जाओ।"

व्यापारी की लड़की बोली — "यह तो बड़ी अच्छी कहानी है। अब तो कहानी खत्म हो गयी अब मैं उस स्त्री से मिल सकती हूँ जो कहती है कि वह मेरी चाची है।"

पर तोता फिर बोला — "पर अभी यह कहानी खत्म नहीं हुई। अभी तो कहानी और है। तुम सुनती रहो।"

और तोते ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "सो उस लड़की ने इस राजा के बेटे से भी शादी नहीं की और दूसरे शहर चल दी।

इस शहर के राजा का बेटा भी किसी के जादू के असर में था। वह बोलता नहीं था। वहाँ भी उसने उस लड़के के साथ एक रात अकेले रहने की इजाज़त माँगी जो उसको तुरन्त ही दे दी गयी।

रात को वह उस लड़के के पलंग के नीचे छिप गयी। आधी रात को उसने खिड़की के रास्ते से दो जादूगरनियाँ आती देखीं। उन्होंने उस लड़के के मुँह से पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला तो वह बोलने लगा। पर जाने से पहले वे जादूगरनियाँ उस पत्थर के टुकड़े को फिर से उस लड़के के मुँह में रख गयीं तो वह फिर नहीं बोल सका।"

तभी किसी ने फिर दरवाजा खटखटाया पर व्यापारी की लड़की अपनी कहानी सुनने में इतनी मस्त थी कि उसने उस खटखटाहट की आवाज ही नहीं सुनी और उस तोते ने अपनी कहानी जारी रखी — "उस लड़की ने फिर से राजा से उसके बेटे के कमरे में रहने की इजाज़त मॉगी जो उसको मिल गयी।

अगली रात जब वे जादूगरनियॉ दोबारा आयीं और उन्होंने वह पत्थर का टुकड़ा राजा के बेटे के मुॅह से निकाल कर उसके बिस्तर पर रखा तो उस लड़की ने उसके बिस्तर की चादर को एक झटका दिया और वह पत्थर उस राजकुमार के बिस्तर से नीचे गिर गया।

लड़की ने हाथ बढ़ा कर उस पत्थर को उठा लिया और अपनी जेब में रख लिया। सुबह को जब वे जादूगरनियॉ जाने लगीं और उन्होंने उस पत्थर के टुकड़े को राजा के बेटे के मुॅह में रखने के लिये खोजा तो उनको वह पत्थर ही नहीं मिला। पत्थर न पा कर वे वहॉ से भाग लीं।

अगले दिन राजकुमार ठीक था तो उस शहर वालों ने उस लड़के का नाम ही डाक्टर रख दिया।"

दरवाजे पर खटखटाहट चालू रही और व्यापारी की लड़की "अन्दर आ जाओ" कहने ही वाली थी कि उसने पहले तोते से पूछा — "अभी यह कहानी और है या खत्म हो गयी?"

तोता बोला — "यह कहानी तो अभी और है। तुम सुनती रहो। पर वह लड़की वहॉ डाक्टर के रूप में भी रुकने के लिये तैयार नहीं थी सो वह एक और शहर चली गयी।

इस शहर में जा कर उसने सुना कि वहॉ का राजा पागल हो गया है। वह पागल इसलिये हो गया था कि जंगल में उसको एक गाड़ी में पड़ी एक गुड़िया मिल गयी थी और वह उस गुड़िया के प्यार में पागल था।

बस वह हमेशा ही अपने कमरे में बैठा रहता और उस गुड़िया को देखता रहता और रोता रहता। रोता वह इसलिये था कि वह ज़िन्दा नहीं थी। वह लड़की राजा के सामने गयी तभी भी वह उस गुड़िया को लिये बैठा था और रो रहा था।

उसको देखते ही वह बोली — "अरे यह तो मेरी गुड़िया है। यह आपको कहॉ से मिली?"

और राजा उसको देखते ही बोला — "यह तो मेरी दुलहिन है।"

राजा इस बात पर चकित था कि उन दोनों की सूरतें कितनी मिलती जुलती थीं और किस तरीके से वह उसको देखते ही पहचान गया।"

दरवाजे पर फिर से खटखटाहट हुई तो अबकी बार तोता बहुत परेशान हो गया क्योंकि वह अपनी कहानी को इससे आगे नहीं बढ़ा पा रहा था पर फिर भी वह बोला — "एक मिनट, एक मिनट। बस

ज़रा सी कहानी और बची है वह हम और खत्म कर लें फिर तुम अपनी चाची से मिल लेना।"

पर उसको उस कहानी को आगे बढ़ाने का कोई मसाला ही नहीं मिल रहा था। अब वह उस कहानी को आगे कैसे बढ़ाये।

तभी किसी ने दरवाजा फिर से खटखटाया और आवाज लगायी — "दरवाजा खोलो बेटी, दरवाजा खोलो। मैं तुम्हारा पिता।"

सो तोता बोला — "ठीक है, बस तुम्हारे पिता जी आ गये। अब हम यह कहानी यहीं खत्म करते है। राजा ने उस लड़की से शादी कर ली और वे लोग खुशी खुशी रहने लगे।"

कहानी खत्म हो गयी थी सो वह लड़की तुरन्त ही दरवाजा खोलने चली गयी और दरवाजा खोल कर अपने पिता से लिपट गयी।

पिता बोला — "मुझे लग रहा है कि आज तुम मेरा कहा मान कर घर में ही रहीं। और हॉ तुम्हारा तोता कैसा है?"

"बहुत अच्छा है पिता जी।"

सो वे दोनों तोते को देखने अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि तोता तो वहॉ कहीं नहीं था बल्कि उस तोते की जगह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान खड़ा था।

वह नौजवान उस लड़की के पिता से बोला — "मुझे माफ कीजियेगा जनाब। मैं एक राजा हूॅ जिसको एक तोते में बदल दिया गया था क्योंकि मैं आपकी बेटी से बहुत प्यार करता था।

मुझे मालूम था कि मेरा एक दुश्मन राजा इनको भगा ले जाना चाह रहा था तो मैं एक तोते का रूप रख कर इनको एक इज़्ज़तदार ढंग से इनका मन बहलाने के लिये और इनको उस दुश्मन राजा के चंगुल से बचाने के लिये यहॉ आ गया।

मुझे पूरा भरोसा है कि मैंने अपने ये दोनों काम सफलता से निभा दिये हैं और अब मैं आपसे अपनी शादी के लिये आपकी बेटी का हाथ मॉगता हूॅ। अगर आप इजाज़त दें तो।"

यह सुन कर व्यापारी बहुत खुश हुआ। उसने शादी के लिये हॉ कर दी और अपनी बेटी की शादी उस राजा से कर दी।

यह सुन कर वह दुश्मन राजा तो बहुत गुस्से से भर गया पर वह कुछ कर नहीं सका। दूसरा तोता राजा और व्यापारी की बेटी दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज करते रहे।

13 बारह बैल[68]

एक बार बारह भाई थे जिनकी एक बार अपने माता पिता से लड़ाई हो गयी और वे सब घर छोड़ कर चले गये। उन्होंने जंगल में जा कर अपना एक घर बना लिया और वहॉ रह कर बढ़ई का काम कर के अपनी ज़िन्दगी गुजारने लगे।

इस बीच में उनके माता पिता के एक बेटी हो गयी। अपने बारह भाइयों के जाने के बाद वह अपने माता पिता के लिये बहुत खुशी ले कर आयी। बच्ची बिना अपने भाइयों को देखे हुए ही बड़ी होती रही।

वह उनके बारे में केवल सुनती ही थी। अब क्योंकि उसने उनको देखा नहीं था इसलिये उसकी उनको देखने की बहुत इच्छा थी।

एक दिन वह एक फव्वारे में नहाने गयी तो सबसे पहले उसने अपने मूँगे का हार[69] उतार कर वहॉ पास के एक पेड़ की एक डंडी पर टॉग दिया। तभी एक रैवन[70] आया और उस हार को उठा कर ले उड़ा।

---

[68] The Twelve Oxen. Tale No 16. A folktale from Italy from its Monteferrat area.

[69] Coral necklace. Coral is precious gem and comes in many colors.

[70] Raven is a crow like bird mostly found in USA, Canada and even in Europe. Read many stories about Raven in the books – "Raven Ki Lok Kathayen-1", and "Raven Ki Lok Kathayen" both written by Sushma Gupta in Hindi language, published by Indra Publishers and Prabhat Prakashan respectively.

लड़की अपना हार लेने के लिये उसके पीछे पीछे जंगल में दौड़ी तो वह अपने भाइयों के मकान में पहुँच गयी।

वह जब वहाँ पहुँची तो उस समय उस घर में कोई नहीं था। सो उसने वहाँ नूडिल्स[71] बनाये और चमचे से अपने भाइयों की प्लेट में रख दिये। नूडिल्स उनकी प्लेट में रख कर वह एक पलंग के नीचे छिप गयी।

जब उसके भाई लौटे तो उन्होंने देखा कि उनके खाने की मेज पर उनकी प्लेटों में नूडिल्स बने रखे थे। वे सब मेज पर बैठ गये और उन्होंने वे नूडिल्स बड़े स्वाद ले ले कर खाये।

पर उनको खा कर वे बेचैन हो गये और शक करने लगे कि कहीं किसी जादूगरनी ने तो उनके ऊपर कोई जादू न कर दिया हो क्योंकि उस जंगल में बहुत सारी जादूगरनियाँ रहतीं थीं। या फिर किसी ने उनके साथ कोई मजाक तो नहीं किया।

अगले दिन उन भाइयों ने अपने में से एक भाई यह देखने के लिये घर में ही छोड़ दिया कि यह काम किसने किया था।

वह भाई देखता रहा कि यह काम किसने किया तो उसने देखा कि एक लड़की एक पलंग के नीचे से बाहर आयी और वह रसोईघर की तरफ खाना बनाने चली तो उसने उसको पकड़ लिया।

---

[71] Noodles – Noodles is a Chinese food which is like Sinwaee (or Semiyan or vermicilli) of North India. It is available in many shapes. See its one type in the picture above.

पूछने पर उसको पता चला कि वह लड़की तो उनकी बहिन है। शाम को जब उसके भाई आये तो उसने उनको बताया कि वह तो उनकी बहिन है तो उन्होंने उसके साथ दोस्ती कर ली और उससे कहा कि वह उनके साथ ही रहे।

पर वे उसको बार बार यही कहते रहे कि वह जंगल में किसी से न बोले क्योंकि वहॉ बहुत सारी जादूगरनियॉ रहती हैं।

एक शाम जब वह लड़की शाम के खाने की तैयारी कर रही थी तो उसने देखा कि उसकी आग बुझ गयी। समय बचाने के लिये वह पास के मकान से आग लेने के लिये गयी।

उस मकान में एक बुढ़िया रहती थी। उसने दया कर के उसको आग तो दे दी पर बोली कि इस आग देने के बदले में अगले दिन वह उसके पास आयेगी और उसकी एक उॅगली में से उसका थोड़ा सा खून चूस लेगी।

लड़की बोली — "मैं किसी को अपने घर में नहीं घुसा सकती क्योंकि मेरे भाइयों ने मना किया है।"

वह बुढ़िया बोली — "तुमको दरवाजा खोलने की जरूरत नहीं है। जब मैं दरवाजा खटखटाऊॅ तो बस तुम अपनी छोटी उॅगली उसकी चाभी वाले छेद में से बाहर निकाल देना और मैं उस उॅगली में से तुम्हारा खून चूस लूॅगी।"

सो वह बुढ़िया अब हर शाम उस लड़की का खून चूसने के लिये उसके घर आने लगी। उधर वह लड़की उस खून चूसने की वजह से पीली और और ज़्यादा पीली पड़ती चली गयी।

उसके भाइयों ने यह देखा तो उन्होंने उससे कई सवाल पूछे। पहले तो डर के मारे उसने उनको बताया नहीं पर फिर उसने मान लिया कि वह बराबर के मकान में रहने वाली बुढ़िया के घर आग मॉगने गयी थी और उसके बदले में अपना खून देने का वायदा किया था। अब वह बुढ़िया रोज वहॉ आ कर उसका खून चूस जाती थी।

भाइयों ने सोचा कि हमको अपनी बहिन की देखभाल करनी चाहिये। उस शाम को जब वह बुढ़िया उनके घर आयी और उनका दरवाजा खटखटाया तो उस लड़की ने अपनी उॅगली उस चाभी के छेद में से बाहर नहीं निकाली।

यह देख कर उस बुढ़िया ने बिल्ली के घर में आने वाले रास्ते से अपना सिर उस घर के अन्दर घुसाया तो एक भाई ने जिसके पास एक घास काटने वाला बड़ा सा चाकू था उस चाकू से उसका सिर काट डाला। उसके बाद उसने उसका मरा हुआ शरीर एक घाटी में डाल दिया।

कुछ दिन बाद एक दिन जब वह लड़की फव्वारे पर गयी थी तो वहॉ वह एक और बुढ़िया से मिली। वह बुढ़िया सफेद कटोरे बेच रही थी। वे कटोरे उसको बहुत सुन्दर लगे।

जब उस बुढ़िया ने उस लड़की से वे सफेद कटोरे खरीदने के लिये कहा तो लड़की ने कहा — "अफसोस मेरे पास पैसे नहीं हैं मैं आपके ये कटोरे नहीं खरीद सकती।"

इस पर वह बुढ़िया बोली — "तब मैं तुमको यह कटोरे मुफ्त में ही दे देती हूँ।" और उसने वे बारह कटोरे उस लड़की को मुफ्त में ही दे दिये। वह लड़की उनको ले कर घर आ गयी।

जब उसके भाई शाम को काम से प्यासे लौटे तो उन्होंने बारह नये कटोरों में पानी भरा देखा। वे प्यासे तो थे ही तुरन्त ही उन कटोरों में से पानी पी गये। वे कटोरे जादुई कटोरे थे उनमें से पानी पी कर तुरन्त ही वे सब बैल[72] बन गये।

उसका बारहवाँ भाई कम प्यासा था सो उसने बस पानी को केवल मुँह ही लगाया था पिया नहीं था इसलिये वह बैल नहीं बना वह केवल एक मेंमने[73] में बदल गया।

अब वह लड़की वहाँ अकेली रह गयी – उसके ग्यारह भाई बैल बन गये थे और एक भाई मेमना बन गया था। अब वह उन सबको खिलाती पिलाती थी और उनकी देख भाल करती थी।

एक बार एक राजकुमार शिकार खेलते खेलते उस जंगल में रास्ता भूल गया और इधर उधर भटकता हुआ उस लड़की के घर तक आ पहुँचा। वहाँ उसको देख कर वह उससे प्रेम करने लगा।

[72] Translated for the word "Ox"
[73] Translated for the word "Lamb"

उसने उससे शादी करने के लिये कहा तो उस लड़की ने कहा कि उसको अपने भाइयों की देखभाल करनी है और वह उनको इस तरह अकेला नहीं छोड़ सकती थी।

राजकुमार समझ गया सो वह उस लड़की को, उन ग्यारह बैलों को और एक मेंमने सबको अपने महल में ले गया।

वहॉ जा कर उसने लड़की को तो अपनी राजकुमारी पत्नी बना लिया और ग्यारह बैलों और एक मेमने को एक संगमरमर के बड़े से कमरे में रख दिया। वहॉ उनके लिये खाने के लिये सोने के बर्तन थे।

पर जंगल की जादूगरनियों ने भी अपनी कोशिशें नहीं छोड़ीं। एक दिन राजकुमारी अपने मेमने भाई के साथ अंगूर के बागीचे में टहल रही थी।

वह उस मेमने को हमेशा ही साथ रखती थी कि एक बुढ़िया उसके पास आयी और बोली — "ओ मेरी अच्छी राजकुमारी, क्या तुम मुझे तुम थोड़े से अंगूर दोगी?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। वह उधर हैं अंगूर के पेड़, आप अपने आप तोड़ लें।"

"मैं उतने ऊॅचे तक नहीं पहुॅच सकती। तुम ही तोड़ दो न थोड़े से अंगूर मेरे लिये।"

"ठीक है। अभी तोड़ती हूॅ।" कह कर उसने अंगूर के एक गुच्छे की तरफ हाथ बढ़ाया और वह वह गुच्छा तोड़ने ही वाली थी

कि एक दूसरे गुच्छे की तरफ इशारा करते हुए वह बुढ़िया बोली — "यह नहीं, वह वाला तोड़ दो। वह मुझे ज़्यादा पका लग रहा है।"

यह गुच्छा एक तालाब के ऊपर की तरफ लगा हुआ था सो उसको तोड़ने के लिये राजकुमारी को उस तालाब की दीवार पर चढ़ना पड़ता।

वह उस गुच्छे को तोड़ने के लिये उस तालाब की दीवार पर चढ़ी तो उस बुढ़िया ने उसे धक्का दे दिया और वह उस तालाब में गिर पड़ी। लड़की उस तालाब में गिरते ही चिल्लाने लगी पर उसकी वह आवाज बहुत ही घुटी घुटी थी।

यह देख कर उस मेमने ने चिल्लाना शुरू कर दिया और उस तालाब के चारों तरफ घूमने लगा। पर किसी को भी यह समझ में नहीं आया कि वह क्या कहना चाह रहा था और न ही किसी को राजकुमारी की घुटी घुटी आवाजें सुनायी दीं।

इस बीच जादूगरनी ने राजकुमारी का रूप रख लिया और राजकुमारी के बिस्तर में जा लेटी। जब राजकुमार घर आया तो उसने राजकुमारी से पूछा — "अरे तुम यहॉ बिस्तर में? इस समय तुम यहॉ बिस्तर में क्या कर रही हो? तुम्हारी तबियत तो ठीक है?"

वह नकली राजकुमारी बोली — "नहीं आज मेरी तबियत ठीक नहीं है मुझे आज मेमने का थोड़ा सा मॉस खाना है। मेरे लिये उस मेंमने को मार दो जो बाहर चिल्लाता घूम रहा है।"

राजकुमार बोला — "क्या? क्या तुमने मुझसे कुछ दिन पहले ही यह नहीं कहा था कि यह मेमना तुम्हारा भाई है और अब तुम उसको खाना चाहती हो?"

जादूगरनी तो अपने ये शब्द कह कर पछतायी। अब वह कुछ नहीं कह सकती थी। राजकुमार को भी लगा कि कहीं कोई गड़बड़ है सो वह तुरन्त ही बागीचे में गया।

वहॉ उसने उस चिल्लाते हुए मेमने को देखा तो उसके पीछे पीछे चल दिया। वह मेमना उसको तालाब तक ले गया। तब राजकुमार ने वहॉ राजकुमारी की रोने की आवाज सुनी।

वह चिल्ला कर बोला — "अब तुम यहॉ तालाब में क्या कर रही हो तुमको तो मैं अभी अभी बिस्तर में छोड़ कर आया हूॅ।"

"पर मैं तो इस तालाब में सुबह से ही पड़ी हुई हूॅ। एक जादूगरनी ने मुझे इस तालाब में धकेल दिया था।"

राजकुमार ने राजकुमारी को तालाब में से तुरन्त ही निकाल लिया। वह जादूगरनी पकड़ी गयी तो राजकुमार ने उसको जलवा दिया। जब वह उस आग में जल रही थी तो वे बैल और मेमना धीरे धीरे आदमियों में बदलते जा रहे थे।

तभी राजकुमार के महल को बहुत सारे बड़े साइज के लोगों[74] ने घेर लिया। असल में वे सब वे राजकुमार थे जिनको उस जादूगरनी ने बड़े साइज़ के लोगों में बदल दिया था। जादूगरनी के

[74] Translated for the word "Giants"

मरने के बाद वे सब वहॉ आ गये थे और अब वे सभी राजकुमारों के रूप में बदलते जा रहे थे।

इसके बाद उस लड़की की शादी उस राजकुमार से हो गयी और वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

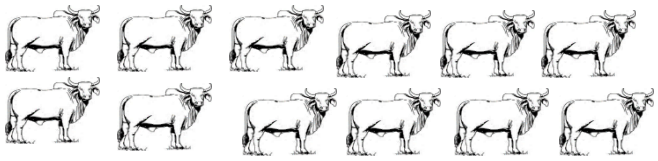

14 एक पागल और एक चालाक[75]

एक बार एक दूर के शहर में एक बहुत ही मशहूर पागल रहता था जिसको अब तक कोई भी पकड़ने में कामयाब नहीं हो सका था। और इसी शहर में एक चालाक भी रहता था।

इस पागल की सबसे बड़ी इच्छा यह थी कि वह चालाक से मिले और उससे दोस्ती करे। यह चालाक एक बहुत बड़ा बदमाश चोर था। सो वह पागल उस चालाक से मिला और उसने उससे दोस्ती कर ली। कैसे?

एक दिन जब वह पागल एक ढाबे पर दोपहर को खाना खा रहा था तो उसकी मेज पर उसके सामने एक अजनबी आ कर बैठ गया। पागल ने समय देखने के लिये अपनी घड़ी देखी तो उसे पता चला कि उसकी घड़ी तो उसके हाथ में थी ही नहीं।

उसने सोचा कि उसकी जानकारी में तो केवल वह चालाक चोर ही उसके हाथ से इस तरह से उसकी घड़ी गायब कर सकता था सो उस पागल ने अपना सिर घुमाया और उस चालाक का बटुआ चुरा लिया।

जब वह अजनबी अपने पैसे देने के लिये अपना बटुआ ढूँढने लगा तो उसने देखा कि उसका बटुआ तो गायब है। उसने अपनी मेज पर बैठे साथी से कहा — "लगता है कि तुम पागल हो।"

[75] Crack and Crook. Tale No 17. A folktale from Italy from its Montrerrat area.

"तुमने ठीक पहचाना।"

"बहुत अच्छे। मेरे साथ काम करोगे? हम लोग एक साथ काम करेंगे तो अच्छा कमायेंगे।" और दोनों राजी हो गये।

वे दोनों शहर में गये और राजा के खजाने की तरफ चल दिये। अब वह तो राजा का खजाना था सो उसके तो चारों तरफ तो बहुत सारे चौकीदार पहरा दे रहे थे। दोनों सोचने लगे कि राजा का खजाना कैसे चुराया जाये।

सोच कर उन लोगों ने राजा के खजाने तक एक सुरंग खोदी और राजा का सब कुछ चुरा लिया। जब राजा ने अपने खजाने की हालत देखी तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि उसका इतना बड़ा खजाना गया कैसे? और चला गया तो चला गया पर अब वह उन चोरों को पकड़े कैसे।

उसने एक आदमी को पकड़ा जिसका नाम "जाल"[76] था। उसको चोरी के इलजाम में जेल में रखा गया था। राजा ने जाल को बुलाया और कहा — "जाल, देखो किसी ने मेरा खजाना चोरी कर लिया है। अगर तुम यह बता दोगे कि मेरा यह खजाना किसने चोरी किया है तो मैं तुमको जेल से आजाद कर दूँगा और तुमको मारकिस[77] बना दूँगा।"

[76] Translated for the word "Snare". In fact these are the meanings of the words their names meant, not the actual names.

[77] Marquis – a nobleman ranking next below a Duke and above an Earl or Count – they all are different ranks in European kingdoms.

जाल बोला — "सरकार या तो यह पागल का काम है या फिर चालाक का और या फिर दोनों ने मिल कर यह चोरी की है। क्योंकि इस समय वे ही ज़िन्दा चोरों में सबसे ज़्यादा बदमाश और चोर हैं। पर मैं आपको बताऊँगा कि उन चोरों को कैसे पकड़ना है।

आप मॉस की कीमत बढ़ा कर सौ डालर पौंड कर दीजिये। जो भी मॉस की इतनी कीमत दे सकेगा वही आपका चोर होगा।"

राजा ने वैसा ही किया। उसने मॉस की कीमत बढ़ा कर सौ डालर पौंड कर दी। सबने मॉस खरीदना बन्द कर दिया।

फिर एक दिन राजा को बताया गया कि एक फ़ायर[78] एक कसाई की दूकान पर गया और उसने मॉस खरीदा।

यह सुन कर वह जाल बोला — "यह आदमी जरूर ही पागल या चालाक होगा और वेश बदल कर वहॉ आया होगा। मैं अब ऐसा करता हूँ कि मैं भी अपना वेश बदलता हूँ और घर घर भीख मॉगने जाता हूँ।

अगर भीख में मुझे कोई मॉस देता है तो मैं उसके घर के सामने वाले दरवाजे पर एक लाल निशान लगा कर आता हूँ। फिर आपके आदमी वहॉ जा सकते हैं और चोर को पकड़ सकते हैं।"

[78] Friar – In Roman Catholic Church he is a member of a Religious order, especially the mendicant orders of Franciscans, Dominicans, Carmelites and Augustinians.

सो वह पागल के घर गया। वहॉ उसको भीख में थोड़ा सा मॉस मिल गया। सो उसने उसके मकान पर लाल निशान लगा दिया।

पर जब उसने वह लाल निशान पागल के घर के दरवाजे पर लगाया तो पागल ने देख लिया। जाल के जाते ही वह अपने घर से बाहर निकला और आसपास में जा कर बहुत सारे घरों पर वैसा ही लाल निशान लगा आया। इससे फिर यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि पागल और चालाक कहॉ रहते थे।

जाल बोला — "मैंने आपसे कहा था न कि ये लोग बड़े चालाक हैं। पर कोई और भी है जो उनसे भी ज़्यादा चालाक है। अब आप ऐसा कीजिये कि आप अपने खजाने की सीढ़ियों की सबसे नीचे वाली सीढ़ी पर उबलते हुए पानी का एक टब रख दें।

जो कोई भी खजाने में चोरी करने जायेगा वह उसमें गिर पड़ेगा और फिर तो उसकी लाश ही उसमें से निकाली जायेगी।"

इस बीच में पागल और चालाक के पास उनका चुराया पैसा खत्म हो गया सो उन्होंने राजा के खजाने में फिर से जाने का विचार किया।

चालाक उसमें पहले घुसा पर वहॉ क्योंकि अँधेरा था उसको दिखायी ही नहीं दिया कि वहॉ पर गर्म पानी से भरा टब रखा है। जैसे ही वह अन्दर घुसा वह टब में गिर पड़ा।

पागल भी वहॉ आ गया और उसने चालाक को बाहर निकालने की बहुत कोशिश की पर वह क्योंकि वह उस टब में फॅस गया था

वह उसको निकाल नहीं सका। सो उसने उसका सिर काट लिया और उस सिर को ले कर घर चला गया।

अगले दिन राजा वहॉ देखने गया कि कोई चोर फॅसा कि नहीं। राजा टब में लाश पड़ी देख कर तो बहुत खुश हुआ और चिल्ला कर बोला — "हमको चोर मिल गया। हमको चोर मिल गया।"

पर उस लाश पर उसका सिर न देख कर वह बड़ा नाउम्मीद हुआ क्योंकि बिना सिर के तो यह ही पता नहीं चल पा रहा था कि वह लाश किसकी है।

जाल बोला — "अब हम एक काम और कर सकते हैं। इस लाश को दो घोड़ों से घिसटवाते हुए आप पूरे शहर में घुमाइये। जिस घर में इसको देख कर किसी के रोने की आवाज सुनायी पड़े वही इस चोर का घर है।"

बात तो उसकी ठीक थी सो ऐसा ही किया गया। जब चालाक की पत्नी ने अपने घर की खिड़की से बाहर झॉका तो देखा कि उसके पति की लाश को सड़क पर दो घोड़े घसीटते हुए लिये जा रहे हैं तो उसने रोना और चिल्लाना शुरू कर दिया।

इत्तफाक से वह पागल उस समय वहीं था। उसने सोचा कि चालाक की पत्नी के इस तरह से रोने चिल्लाने से तो हमारा किया धरा सब बेकार हो जायेगा सो उसने चालाक के प्याले प्लेटें तोड़नी शुरू कर दीं और उसकी पत्नी को मारना शुरू कर दिया।

उस चिल्लाहट को सुनते हुए चौकीदार वहॉ आ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक आदमी अपनी स्त्री को प्याले प्लेटें तोड़ने पर मार रहा था सो वे चले गये।

आखिर राजा ने तब शहर के हर चौराहे पर एक घोषणा करवा दी कि वह उस चोर को जिसने भी उसका खजाना चुराया है माफ कर देगा अगर वह चोर उसके नीचे से उसके बिस्तर की चादर चुरा कर ले जाये तो। यह सुन कर वह पागल आगे आया और राजा से बोला कि वह यह काम कर सकता है।

रात को राजा ने अपने कपड़े उतारे और सोने चला गया। वह चोर को पकड़ने के लिये अपने साथ अपनी बन्दूक भी ले गया था।

इधर इस पागल ने क्या किया कि उसने कब्र खोदने वाले से एक लाश ली और उसको अपने कपड़े पहना दिये और उस लाश को वह राजा के महल की छत पर ले गया।

आधी रात को उसने वह लाश एक रस्सी के सहारे राजा के सोने के कमरे की खिड़की के सामने लटका दी। राजा तो चोर पकड़ने के लिये जाग ही रहा था सो उसने वह लाश देखी।

यह सोच कर कि वह पागल था राजा ने उसको गोली मारी और देखा कि वह पागल तो नीचे गिर गया।

तुरन्त ही वह नीचे देखने गया कि वह गिर कर मर गया या नहीं। जैसे ही राजा अपने कमरे से हटा तो पागल राजा के सोने के कमरे में घुस गया और उसके बिस्तर की चादर चुरा ली।

अपनी घोषणा के अनुसार राजा को उसे माफ कर देना पड़ा पर उसके बाद उसको फिर कभी चोरी नहीं करनी पड़ी।

पूछो क्यों? क्योंकि राजा ने अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दी थी।

15 कैनेरी राजकुमार[79]

यह लोक कथा इटली में कुछ ऐसे कही जाती है कि एक राजा था जिसके एक बेटी थी। बेटी की मॉ मर गयी थी और राजा ने दूसरी शादी कर ली थी। लड़की की सौतेली मॉ लड़की से बहुत जलती थी और हमेशा राजा को उसके बारे में कुछ न कुछ बुरा भला कहती रहती थी।

उधर लड़की बेचारी हमेशा अपने बारे में सफाई देती रहती पर उसकी सौतेली मॉ उसकी उसके पिता से इतनी ज़्यादा बुराई करती कि हालॉकि राजा अपनी बेटी को बहुत ज़्यादा प्यार करता था पर फिर भी उसकी सौतेली मॉ की बुराइयों से तंग आ कर उसने उसको छोड़ दिया था।

एक दिन उसने रानी को कह दिया था कि वह लड़की को कहीं दूर भेज दे पर वह उसको ऐसी जगह भेजे जहॉ वह आराम से रह सके क्योंकि वह यह बिल्कुल नहीं चाहेगा कि उसकी बेटी के साथ कोई बुरा बर्ताव करे।

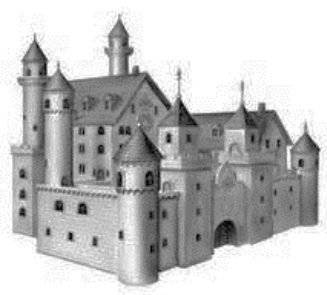

सौतेली मॉ बोली — "तुम उसकी चिन्ता न करो।" सो सौतेली मॉ ने उसको एक किले में रखवा दिया जो एक जंगल में था।

[79] The Canary Prince. Tale No 18. A folktale from Italy from its Turin area.

उसके साथ के लिये रानी ने कुछ दासियॉ वहॉ रख दीं और उनको कह दिया कि वे उसको वहॉ से कहीं बाहर न जाने दें। यहॉ तक कि खिड़की से भी बाहर न झॉकने दें। इस काम के लिये वह उनको बहुत अच्छी तनख्वाह देगी।

लड़की को भी एक बहुत सुन्दर कमरे में रखा गया था और उसको वह सब कुछ दिया गया था जो उसको चाहिये था। उसको वह सब कुछ खाने पीने को भी मिलता था जो उसको पसन्द था। बस वह केवल बाहर नहीं जा सकती थी।

पर फिर भी उसकी दासियों को उसका कोई खास काम नहीं था और उनके पास पैसा बहुत था सो वे केवल अपने ही बारे में सोचती रहती थीं और उस लड़की की तरफ ध्यान नहीं देती थीं।

राजा अक्सर अपनी रानी से अपनी बेटी के बारे में पूछता रहता — "हमारी बिटिया कैसी है? वह आजकल अपने आप अपने आप क्या करती रहती है?"

यह साबित करने के लिये कि रानी वाकई उसकी परवाह करती थी एक दिन वह उस किले पर गयी जहॉ उसने राजकुमारी को रखा हुआ था।

जैसे ही रानी अपनी गाड़ी से नीचे उतरी वहॉ की दासियॉ तुरन्त ही उसके पास दौड़ी आयीं और उसको बताया कि राजकुमारी बिल्कुल ठीक है और बहुत खुश है।

रानी एक मिनट के लिये उस लड़की के कमरे तक गयी और उससे पूछा — "तुम यहॉ आराम से तो हो न? तुम्हें कुछ चाहिये तो नहीं? मैं देख रही हूँ कि तुम ठीक ही हो। मुझे लग रहा है कि तुम को गॉव की हवा भा गयी है। खुश रहो। अच्छा बाई बाई।" कह कर वह वहॉ से चली गयी।

उसने जा कर राजा को बता दिया कि उसने पहले कभी उसकी बेटी को इतना खुश नहीं देखा था।

पर इसके विपरीत वह लड़की कमरे में अकेली ही रहती थी क्योंकि उसकी दासियॉ तो अपने आप में इतनी मग्न थीं कि वे उसको कहीं दिखायी ही नहीं देती थीं। सो वह बेचारी अपना सारा समय खिड़की में ही बैठ कर गुजारा करती थी।

वह वहॉ खिड़की पर झुकी हुई खड़ी रहती। कभी कभी वह इस तरह से खड़ी रहने में इतनी खो जाती कि उसको अपनी कोहनियों के नीचे तकिया रखने का भी ध्यान नहीं रहता। क्योंकि उसकी कोहनियॉ खिड़की पर ही रहती थीं, तकिये पर नहीं, इसलिये उसकी कोहनियों पर दाग पड़ गये थे।

उसकी यह खिड़की जंगल की तरफ खुलती थी सो वह लड़की सारा दिन या तो जंगल के पेड़ों की पत्तियॉ ही देखती रहती, या फिर बादल और या फिर नीचे शिकारियों के जाने के रास्ते।

एक दिन शिकारियों के उस रास्ते पर एक राजकुमार एक जंगली सूअर का पीछा कर रहा था। जब राजकुमार उस किले के

पास आया तो उसने देखा कि उस किले की चिमनी से तो धुँआ निकल रहा है।

जहाँ तक उसे याद पड़ता था वह किला तो न जाने कब से वहाँ खाली पड़ा हुआ था फिर आज इसमें से यह धुँआ कैसे निकल रहा है। उसने सोचा लगता है यहाँ कोई रहने आ गया है सो उसने मुड़ कर पीछे देखा तो उसने देखा कि उस किले की एक खिड़की पर एक लड़की बैठी है। उसको देख कर वह मुस्कुरा दिया।

लड़की ने भी उसको देखा। वह पीले रंग की शिकारियों वाली पोशाक पहने था। उसके हाथ में एक बन्दूक थी और वह उसकी तरफ देख कर मुस्कुरा रहा था। सो वह भी उसकी तरफ देख कर मुस्कुरा दी।

पूरे एक घंटे तक वे एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कुराते रहे और एक दूसरे के लिये झुकते रहे। वे दोनों आपस मे इतनी दूर थे कि उनके पास एक दूसरे से बात करने का कोई तरीका नहीं था सो कुछ देर बाद वह राजा वहाँ से चला गया।

अगले दिन शिकार का बहाना कर के वह राजकुमार फिर से उधर की तरफ आ निकला। उस दिन वे लोग एक दूसरे को दो घंटे तक देखते रहे। अबकी बार मुस्कुराहटों और झुकने के अलावा उन्होंने अपने अपने दिलों पर भी हाथ रखा और फिर वे काफी देर तक अपने अपने रूमाल हिलाते रहे।

तीसरे दिन वह राजकुमार वहाँ तीन घंटे रहा। उस दिन उन्होंने एक दूसरे की तरफ हवाई चुम्बन भी फेंके।

पर चौथे दिन जब वह फिर वहाँ आया तो एक जादूगरनी उन दोनों को एक पेड़ के पीछे से छिप कर देख रही थी। उनको देख कर वह "हो हो हो हो" कर के हँस पड़ी।

राजकुमार बोला — "अरे तुम हँस क्यों रही हो? इसमें हँसने की क्या बात है?"

जादूगरनी बोली — "हँसने की क्या बात है? अरे दो प्रेमी जो आपस में इतना प्यार करते हैं वे कितने बेवकूफ हैं कि वे इतने दूर हैं। क्या यह हँसी की बात नहीं है?"

राजकुमार बोला — "तो क्या तुम यह जानती हो कि मैं उसके पास तक कैसे पहुँच सकता हूँ?"

जादूगरनी बोली — "मुझे तुम दोनों अच्छे लगते हो इसलिये मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। मैं तुम लोगों को जरूर मिलाऊँगी।"

कह कर वह किले की तरफ गयी और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया। राजकुमारी की एक दासी ने दरवाजा खोला तो उस जादूगरनी ने उस दासी को एक बहुत पुरानी पीले से रंग के कागज की एक किताब दी और कहा — "यह किताब राजकुमारी के पढ़ने के लिये है ताकि वह इसको पढ़ कर अपना समय गुजार सके।"

दासी ने वह किताब ले ली और ले जा कर उस लड़की को दे दी। लड़की ने तुरन्त ही उस किताब को खोला और पढ़ा — "यह एक जादू की किताब है। तुम आगे का पन्ना पलटो तो तुम देखोगी कि कोई आदमी चिड़िया कैसे बन सकता है और फिर चिड़िया से आदमी कैसे बन सकता है।"

लडकी उस किताब को ले कर खिड़की पर दौड़ी गयी और जा कर उस किताब को खिड़की पर रख दिया। वह उस किताब के पन्ने पलटने लगी और राजकुमार को जो पीली पोशाक पहने खड़ा था देखती रही।

अपने हाथ हिलाते हुए राजकुमार ने अपने पंख बना लिये और देखते ही देखते वह एक कैनेरी चिड़िया[80] बन गया – वैसे ही पीले रंग की चिड़िया जैसे पीले रंग की पोशाक वह पहने था।

चिड़िया बन कर वह आसमान में उड़ गया और जा कर राजकुमारी की खिड़की के ऊपर बैठ गया।

राजकुमारी ने उसे तुरन्त ही पकड़ लिया और यह समझ कर चूम लिया कि वह तो राजकुमार था। पर फिर वह शर्मा गयी और उसका चेहरा शर्म से लाल पड़ गया।

अब वह उस चिड़िया को दोबारा राजकुमार बनाने की सोचने लगी। उसने तुरन्त किताब खोली और उसके पन्नों को पीछे की

[80] Canary bird is a small bird – see its picture above.

तरफ पलटा। कैनेरी चिड़िया ने तुरन्त ही अपने पंख फड़फड़ाये, अपनी बॉहें हिलायीं और वह फिर से राजकुमार बन गया – अपनी उसी शिकारी वाली पोशाक में।

राजकुमार उसके सामने थोड़ा सा झुका और बोला — "मै तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ राजकुमारी।" एक दूसरे के सामने अपने अपने प्यार का इजहार करते करते उन दोनों को शाम हो चुकी थी।

राजकुमारी ने फिर किताब पढ़ी और फिर राजकुमार की ऑखों में देखा तो राजकुमार फिर से कैनेरी चिड़िया में बदल गया और उड़ कर नीचे जा कर एक पेड़ की नीची डाल पर बैठ गया।

राजकुमारी ने फिर से किताब के पन्ने वापस पलटे और वह कैनेरी चिड़िया फिर से राजकुमार बन गयी। राजकुमार उस डाली पर से नीचे कूद गया।

उसने अपने कुत्तों को बुलाया, घोड़े पर सवार हुआ, राजकुमारी की तरफ एक चुम्बन फेंका और अपने रास्ते पर घोड़ा दौड़ाता हुआ राजकुमारी की ऑखों से ओझल हो गया।

इस तरह उस किताब के पन्ने रोज राजकुमार को पहले चिड़िया बनाने के लिये और फिर राजकुमार बनाने के लिये पलटे जाते रहे और राजकुमार राजकुमारी के पास कैनेरी चिड़िया के रूप में आता जाता रहा। दोनों ही अपनी ज़िन्दगी में कभी इतने खुश नहीं थे।

एक दिन रानी अपनी सौतेली बेटी को देखने आयी तो वह हर बार की तरह से बाहर से ही यह कहती चली आयी — "तुम ठीक

तो हो न? अरे मैं देख रही हूँ कि तुम तो और दुबली हो गयी हो। पर यह कोई चिन्ता की बात नहीं है। ठीक है न? तुम इससे पहले कभी इतनी अच्छी थी ही नहीं।"

जैसे जैसे वह यह बोलती जा रही थी वह चारों तरफ देखती जा रही थी कि सारी चीज़ें अपनी जगह पर ठीक से रखी थीं या नहीं। फिर उसने खिड़की खोली और उससे नीचे झॉका तो उसने देखा कि पीली पोशाक पहने एक राजकुमार अपने कुत्तों के साथ आ रहा था।

सौतेली मॉ ने सोचा — "अगर यह लड़की यह सोचती है कि वह इस खिड़की से इस लड़के से मुहब्बत लड़ा लेगी तो उसको कुछ और सोचना पड़ेगा।"

उसके कमरे में पहुच कर रानी ने उस लड़की को एक गिलास पानी और चीनी लाने के लिये भेजा। फिर उसने अपने सिर में से पॉच छह हेयर पिन निकालीं और उनको खिड़की पर रखे तकिये में इस तरह छिपा दिया कि उसके नुकीले हिस्से ऊपर की तरफ रहें।

उसने सोचा कि उसकी हेयर पिनों के ये नुकीले हिस्से उस राजकुमारी को खिड़की पर झुकने के लिये सीख दे देंगे।

लड़की पानी और चीनी ले कर वापस आ गयी थी पर रानी बोली — "ओह अब मुझे प्यास नहीं है इसे तुम ही पी लो। मुझे

अब तुम्हारे पिता के पास जाना है। तुमको और कुछ तो नहीं चाहिये न? ठीक है, बाई।" कह कर वह वहॉ से चली गयी।

जैसे ही रानी की गाड़ी गयी और ऑखों से ओझल हो गयी लड़की ने तुरन्त अपनी किताब के पन्ने पलटे और राजकुमार एक कैनेरी चिड़िया बन गया और तीर की तरह उड़ कर खिड़की पर आ बैठा।

पर जैसे ही वह चिड़िया तकिये पर आ कर बैठी वह दर्द से चिल्ला उठी। उसके पीले पंखों पर खून के धब्बे पड़ गये। वे पिनें जो रानी उसके तकिये में लगा कर गयी थी उसकी छाती में घुस गयी थीं।

चिड़िया ने परेशान हो कर अपने पंख फड़फड़ाये और हवा के सहारे चक्कर काटती हुई नीचे जमीन पर पंख फैला कर बैठ गयी।

राजकुमारी यह देख कर डर गयी। उसकी तो समझ में ही नहीं आया कि राजकुमार को हुआ क्या था।

उसने जल्दी से फिर अपनी किताब के पन्ने पलटे और जब राजकुमार आदमी के रूप में आ गया तब राजकुमारी ने देखा कि राजकुमार की छाती में घुसे हेयर पिन के बने घावों से तो खून बह रहा था और उस खून ने उसकी पीली पोशाक खून से रंग दी थी।

राजकुमार वहीं लेट गया और उसके कुत्ते उसके चारों तरफ खड़े हो गये। कुत्ते यह सब देख कर चिल्लाने लगे थे। उनके

भौंकने की आवाज सुन कर दूसरे शिकारी भी उसकी सहायता के लिये आ गये थे।

उन्होंने पेड़ों की शाखों का एक स्ट्रैचर[81] बनाया और राजकुमार को वहॉ से ले गये। वह बेचारा अपनी प्रेमिका को उस दिन देख भी नहीं सका जो उसके दुख से खुद भी बहुत दुखी और डरी हुई थी।

राजकुमार जब अपने महल पहुँच गया तो भी उसके वे घाव ठीक ही नहीं हो रहे थे। डाक्टरों को भी यह पता नहीं चल पा रहा था कि वे उसके घावों के लिये क्या करें।

यह देख कर राजा ने सब जगह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई उसके बेटे का इलाज करेगा वह उसको मालामाल कर देगा पर इसके बावजूद कोई कोशिश करने भी वहॉ नहीं आया।

इधर राजकुमारी के मन में राजकुमार को देखने की इच्छा बहुत बढ़ गयी। उसने अपने बिस्तर की चादर को लम्बी पट्टियों में काटा और उनको आपस में जोड़ कर एक लम्बी रस्सी बना ली।

फिर एक रात को वह अपनी ऊँची मीनार से नीचे उतरी और उस शिकारियों वाले रास्ते पर चल पड़ी पर घने अँधेरे की वजह से और भेड़ियों की चिल्लाहट से डर कर उसने तय किया कि वह सुबह होने का इन्तजार करेगी।

---

[81] Stretcher – a kind of lifter, often of canvas stretched on a frame for carrying the sick, wounded or dead. See its picture above

रात बिताने के लिये उसने एक पुराना ओक का पेड़ ढूँढा जिसका तना खोखला था। वह उसके अन्दर घुस गयी और थकी होने की वजह से जल्दी ही सो गयी।

जब उसकी ऑख खुली तब भी घुप अँधेरा ही था पर उसको लगा कि उसने किसी के सीटी बजाने की आवाज सुनी थी उसी सीटी से उसकी ऑख खुली थी।

उसने उसे फिर सुनने की कोशिश की तो उसे वह आवाज फिर से सुनायी दी। फिर उसने तीसरी चौथी सीटी की आवाजें भी सुनी और फिर उसने चार मोमबत्तियों की रोशनी भी आगे बढ़ती देखी।

वे चारों जादूगरनी[82] थीं जो चारों दिशाओं से आ रही थीं और उसी पेड़ के नीचे अपनी मीटिंग करने वाली थीं। राजकुमारी छिप कर उनको देखती रही।

उन्होंने आ कर एक दूसरे से कहा — "आह आह आह।" फिर उन्होंने उस पेड़ के नीचे आग जलायी और आग की गर्मी लेने के लिये उस आग के चारों तरफ बैठ गयीं।

खाने के लिये उन्होंने दो चिमगादड़[83] भूनी। जब उन्होंने पेट भर खाना खा लिया तो उन्होंने एक दूसरे से पूछना शुरू किया कि उन्होंने दुनियॉ में क्या क्या मजेदार चीज़ें देखीं।

[82]Translated for the word "Witches"

[83] Translated for the word "Bats" – see its picture above.

एक जादूगरनी बोली — "मैंने तुर्की का सुलतान देखा जो अपने लिये बीस नयी पत्नियॉ ले कर आया है।"

दूसरी जादूगरनी बोली — "मैंने चीन का बादशाह देखा जिसकी तो चोटी ही तीन गज लम्बी है।"

तीसरी जादूगरनी बोली — "मैंने तो आदमियों को खाने वाला राजा देखा जिसने अपने घर की देखभाल करने वाले[84] को ही खा लिया था।"

चौथी जादूगरनी बोली — "मैंने इसी देश के राजा को देखा जिसका बेटा बीमार है और उसे कोई ठीक नहीं कर पा रहा है क्योंकि उसका इलाज तो केवल मुझे ही पता है।"

तीनों जादूगरनियॉ एक साथ बोलीं — "और वह इलाज क्या है?"

वह जादूगरनी बोली — "उस राजकुमार के कमरे के फर्श की एक टाइल कुछ ढीली है। बस किसी को यह करना है कि उस ढीली टाइल को वहॉ से उठाना है। उसके नीचे एक शीशी रखी है जिसमें एक मरहम है। उस मरहम को उसके घावों पर लगा देने से उसका हर घाव भर जायेगा।"

यह सुन कर राजकुमारी खुशी से चिल्लाना चाहती थी पर उसने किसी तरीके से अपने आपको ऐसा करने से रोक लिया। जब चारों

[84] Translated for the word "Chamberlain" – a high member of the management committee of the living quarters of the royal family.

ने अपनी अपनी कहानी सुना दी और भी जो कुछ कहना था कह दिया तो वे सब वहॉ से चली गयीं।

उनके जाने के बाद तुरन्त ही राजकुमारी उस पेड़ के तने में से निकली और कूद कर बाहर आ गयी। सुबह होते ही वह अपनी यात्रा पर चल दी।

सबसे पहले वह एक इस्तेमाल की हुई चीज़ों को बेचने वाले के पास गयी और वहॉ से एक डाक्टर का पुराना गाउन और एक चश्मा खरीदा और जा कर शाही महल का दरवाजा खटखटाया। उसने कहा कि वह एक डाक्टर है और राजकुमार का इलाज करने आया है।

पर एक छोटे से डाक्टर को और उसके पास न के बराबर डाक्टर का सामान देख कर महल के चौकीदार उसको महल के अन्दर घुसने ही नहीं दे रहे थे।

पर राजा ने कहा — "यह मेरे बेटे को क्या नुकसान पहुॅचा सकता है इसलिये इसको अन्दर आने दो।" राजा का हुक्म मान कर चौकीदार लोग उसको अन्दर ले गये।

डाक्टर ने कहा कि उसको राजकुमार के कमरे में राजकुमार के साथ अकेला छोड़ दिया जाये ताकि वह उसका इलाज कर सके सो उसको राजकुमार के साथ अकेला छोड़ दिया गया।

अपने प्रेमी को कराहते और बेहोश सा देख कर राजकुमारी का दिल रो पड़ा। उसको लगा कि उसको उस जादूगरनी की कही बात को जल्दी से जल्दी कर देना चाहिये।

सो उसने कमरे के फर्श की वह ढीली टाइल ढूँढी और उसके नीचे रखी शीशी निकाल ली। उस शीशी के मरहम को उसने राजकुमार के सारे घावों पर मल दिया।

जैसे जैसे वह मरहम राजकुमार के घावों पर मलती गयी तुरन्त ही उसके वे घाव भरते चले गये। सब घावों पर मरहम लगाने के बाद उसके सारे घाव ऐसे भर गये जैसे कभी वहाँ कभी कुछ था ही नहीं। राजकुमारी यह देख कर बहुत खुश हुई।

जब वह उसके सारे घाव भर चुकी तो उसका राजकुमार फिर पहले जैसा हो गया जैसा वह उसको देखा करती थी। अब वह शान्ति से सो रहा था सो वह उसको कमरे में सोता छोड़ कर बाहर आ गयी।

बाहर आ कर वह बोली — "मैजेस्टी, आपका बेटा अब हर खतरे से बाहर है। वह आराम से सो रहा है।"

राजा ने उस छोटे से डाक्टर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा — "डाक्टर, तुम जो चाहो सो माँग लो। तुमने मेरे बेटे की जान बचायी है। मेरे राज्य में जितना भी पैसा और दौलत है वह सब तुम्हारी है।

डाक्टर बोला — "मुझे आपका पैसा और दौलत नहीं चाहिये। मुझे तो बस राजकुमार की ढाल दे दीजिये जिस पर शाही निशान बना हुआ है और उसका दंड[85] और उसकी वह पीली जैकेट दे दीजिये जिस पर खून लगा है।"

राजा ने उसकी वे तीनों चीज़ें उसको दे दीं और वह डाक्टर उन तीनों चीज़ों को ले कर वहॉ से चली गया।

तीन दिन बाद राजकुमार फिर से शिकार पर गया। वह जंगल के बीच बने उस किले से गुजरा पर उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह राजकुमारी की खिड़की की तरफ देखे भी।

जब राजकुमारी ने यह देखा तो उसने तुरन्त ही अपनी जादू वाली किताब उठा ली और उसके पन्ने पलटने शुरू किये। राजकुमार के पास कोई चारा नहीं था कि वह उस जादू को न मानता। वह तुरन्त ही कैनेरी चिड़िया बन गया और उड़ कर उसके कमरे में चला गया।

कमरे में पहुॅचने के बाद राजकुमारी ने उस किताब के पन्ने फिर से पलटे और वह फिर से राजकुमार बन गया।

राजकुमार ने कहा — "मुझे जाने दो। क्या यह एक बार ही काफी नहीं है कि तुमने मुझे अपनी पिनों से गोद दिया जिससे मुझे कितनी तकलीफ पहुॅची है।"

[85] Translated for the word "Scepter".

सच तो यह था कि राजकुमार को अब उससे नफरत सी हो गयी थी और अपनी हालत के लिये भी वह उसी को जिम्मेदार ठहरा रहा था।

यह सुन कर तो राजकुमारी तो बेहोश होने वाली थी पर वह बोली — "पर तुम्हारी जान भी तो मैंने ही बचायी है। वह मैं ही हूँ जिसने तुम्हें ठीक किया है। अगर मैं तुम्हारी ऐसी हालत करती तो मैं तुम्हारी जान क्यों बचाती।"

राजकुमार बोला — "तुमने मेरी जान नहीं बचायी है। मेरी जान तो किसी विदेशी डाक्टर ने बचायी है जिसने मेरे पिता से उनकी कोई दौलत नहीं ली सिवाय मेरी ढाल के जिसके ऊपर मेरे परिवार का निशान था, दंड के और मेरी खून के निशानों वाली जैकेट के।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही वे तीनों चीज़ें निकाल कर राजकुमार के सामने रख दीं — "ये हैं वे तुम्हारी तीनों चीज़ें। वह डाक्टर कोई और नहीं मैं ही थी। और वह पिनें मेरी सौतेली माँ की एक चाल थी।"

राजकुमार ने उसकी आँखों में देखा और वह कुछ बोल ही न सका। वह उसके पैरों पर पड़ गया और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया। अब उसको वह पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगा था।

उसी शाम को उसने अपने माता पिता को बताया कि वह जंगल में बने किले में रहने वाली एक लड़की से शादी कर रहा है। उसके

पिता ने कहा — "तुम केवल एक राजा की लड़की से ही शादी करोगे।"

राजकुमार बोला — "मैं केवल उस लड़की से शादी करूँगा जिसने मेरी जान बचायी है।"

राजा को उसकी बात माननी पड़ी सो शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं। राजकुमार के पिता ने बहुत सारे राजाओं और उनके परिवारों को बुलाया। राजकुमारी के माता पिता को भी बुलाया पर उनको कुछ बताया नहीं गया। जब दुलहिन बाहर आयी तो उसका पिता चिल्ला पड़ा "मेरी बेटी।"

राजकुमार के पिता ने पूछा — "क्या? मेरे बेटे की दुलहिन तुम्हारी बेटी है? पर उसने हमें बताया क्यों नहीं कि वह तुम्हारी बेटी है?"

राजकुमारी बोली — "क्योंकि मैं अपने आपको उस पिता की बेटी ही नहीं मानती जिसने मेरी सौतेली मॉ के कहने से मुझे जेल में डाल दिया।" उसने रानी की तरफ इशारा किया।

अपनी बेटी पर किये गये जुल्म सुन कर राजा को अपनी बेटी पर दया आ गयी और अपनी दूसरी पत्नी पर वह बहुत गुस्सा हुआ। घर आते ही उसने अपनी दूसरी पत्नी को जेल में डलवा दिया।

यह शाही शादी खूब धूमधाम से हुई सिवाय सौतेली मॉ के।

16 राजा किन[86]

एक बार एक राजा था जो एक सूअर के बच्चे को अपने बेटे की तरह मानता था। उसका नाम भी उसने राजा किन रखा हुआ था।

राजा किन महल में सब जगह घूमता रहता था और अक्सर ठीक से ही रहता था जैसे वह किसी शाही परिवार में जन्मा हो। हॉ कभी कभी उससे कुछ गड़बड़ जरूर हो जाती थी।

एक बार ऐसे ही एक मौके पर उसके पिता यानी राजा ने उसकी पीठ सहलाते हुए उससे कहा — "क्या बात है बेटा, तुम आज कल गड़बड़ क्यों कर रहे हो?"

राजा किन बोला — "ओयिंक ओयिंक। मुझे एक पत्नी चाहिये। ओयिंक ओयिंक। मुझे बेकर[87] की बेटी चाहिये।"

राजा ने अपने बेक करने वाले को बुलाया। उस बेकर के तीन बेटियॉ थीं। राजा ने उससे पूछा — "मेरा बेटा राजा किन तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी से शादी करना चाहता है। क्या तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी मेरे सूअर बेटे से शादी करने के लिये तैयार है?"

---

[86] King Krin. Tale No 19. A folktale from Colline del Po, Italy, Europe.
[There are many stories like this. Four fine collections of such tales are available in HIndi entitled as "Sooar Raja Jaisi Khaniyan", in 4 parts. Write to my e-mail address for obtaining their e-Versions.

[87] Almost all western people eat their bread baked in oven. The person who makes such bread is called baker, although he bakes many other things too, such as biscuits, cookies, cake, buns etc etc…

बेकर तो यह सुन कर बड़े पशोपेश में पड़ गया। एक तरफ तो वह बहुत खुश था कि उसकी बेटी की शादी एक राजा के बेटे से हो रही थी पर दूसरी तरफ बहुत दुखी था कि उसकी बेटी की शादी एक सूअर से हो रही थी। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे और क्या करे।

वह राजा को मना भी नहीं कर सकता था सो उस समय तो उसने राजा से कहा — "राजा साहब मैं अपनी बेटी से पूछ लूँ।" यह कह कर वह अपने घर चला आया।

पर जब उसने यह सब अपनी सबसे बड़ी बेटी को बताया तो उसने यह तय कर लिया कि वह उस सूअर से शादी कर लेगी।

बेकर की बेटी से उसकी शादी हो रही थी यह सुन कर तो राजा किन के रोंगटे खड़े हो गये। वह बहुत खुश हो गया। अपनी शादी वाली रात को वह सारे शहर में जा कर बहुत खुश खुश चक्कर काट कर आया और अपने शरीर में कीचड़ भी खूब अच्छी तरह लपेट कर आया।

लौट कर वह अपनी पत्नी के कमरे में आया जहाँ उसकी पत्नी उसका इन्तजार कर रही थी। अपनी पत्नी को सहलाने के इरादे से राजा किन ने अपने शरीर को अपनी पत्नी की स्कर्ट[88] से कई बार मला।

[88] Skirt is a dress worn with blouse under waist and normally is of knee length but can be of different lengths, even upto heel also. See its picture above.

इससे उसकी पत्नी की सारी स्कर्ट कीचड़ से लथपथ हो गयी। यह देख कर उसकी पत्नी का मन खराब हो गया। उसने राजा किन को पलट कर सहलाने की बजाय पैर से मारा और बोली — "ओ गन्दे सूअर, चले जाओ यहॉ से। तुमने तो मेरी सारी स्कर्ट ही खराब कर दी।"

राजा किन बोला — "तुमने मेरा अपमान किया है तुमको इसकी सजा भुगतनी पडेगी।" यह कह कर बेचारा राजा किन वहॉ से चला गया।

उस रात बेकर की बेटी अपने बिस्तर में मरी पायी गयी। यह खबर सुन कर राजा बहुत दुखी हुआ। पर वह क्या करता।

फिर कुछ दिन बीत गये। अब उसका बेटा फिर से गड़बड़ करने लगा था। राजा ने उससे फिर पूछा — "बेटे अब तुम्हें क्या चाहिये।"

तो उसने फिर वही कहा — "ओयिंक, ओयिंक, मुझे एक पत्नी चाहिये। अबकी बार मुझे बेकर की दूसरी बेटी चाहिये।"

राजा दुखी मन से बोला — "पर उसकी एक बेटी तो मर चुकी है वह तुमको अपनी दूसरी बेटी क्यों देगा।"

"मुझे नहीं मालूम पर मुझे तो वही चाहिये।"

राजा ने फिर अपने बेकर को बुलाया और उससे पूछा कि क्या वह अपनी दूसरी बेटी की शादी उसके बेटे से करना पसन्द करेगा?

बेकर बेचारा क्या जवाब देता। वह तो अभी तक अपनी पहली बेटी के दुख से ही नहीं उभर पाया था।

उसने राजा को फिर वही जवाब दिया — "मैं अपनी बेटी से पूछ लूँ सरकार।" पर जब उसने अपनी दूसरी बेटी से पूछा तो आश्चर्य की बात कि वह भी उससे शादी करने के लिये राजी हो गयी।

शादी वाले दिन राजा क्रिन ने अपनी दूसरी पत्नी के साथ भी वैसा ही किया जैसा उसने अपनी पहली शादी वाले दिन अपनी पहली पत्नी के साथ किया था।

उस रात को भी वह सारे शहर में जा कर खुश खुश चक्कर काट कर आया और अपने शरीर में कीचड़ भी खूब अच्छी तरह लपेट कर आया।

जब वह कीचड़ में सना अपनी पत्नी के पास आया और उसकी स्कर्ट से अपना शरीर मला तो उसने भी वही कहा — "उफ़, ओ गन्दे सूअर। चले जाओ यहाँ से। तुमने तो मेरी सारी स्कर्ट ही खराब कर दी।"

यह सुन कर राजा क्रिन ने उससे भी यही कहा — "तुमने मेरा अपमान किया है तुमको इसका फल भुगतना पड़ेगा।" और अगले दिन बेकर की दूसरी बेटी भी अपने बिस्तर में मरी पायी गयी।

राजा यह सब देख कर बहुत दुखी हुआ पर कर कुछ नहीं सका। वह बेकर से बहुत शर्मिन्दा था।

फिर कुछ समय निकल गया। राजा किन ने फिर गड़बड़ शुरू की तो उसके पिता राजा ने उससे पूछा — "अब तुम्हें क्या चाहिये राजा किन?"

"मुझे एक पत्नी चाहिये और वह भी बेकर की तीसरी बेटी।"

राजा कुछ गुस्से से बोला — "क्या तुम्हारे अन्दर अभी भी इतनी हिम्मत है कि तुम उस बेकर की तीसरी बेटी को अपनी पत्नी बनाने के लिये माँगो?"

"ओयिंक ओयिंक, मैं जरूर माँगूँगा। मुझे वह चाहिये।"

सो बेकर की तीसरी सबसे छोटी वाली बेटी को बुलवाया गया और उससे पूछा गया कि क्या वह राजा के सूअर बेटे से शादी करने के लिये तैयार थी। आश्चर्य कि बेकर की वह बेटी भी खुशी से उस सूअर से शादी करने के लिये तैयार हो गयी।

शादी के दिन फिर राजा किन फिर पहले की तरह से सारे शहर का चक्कर काट कर आया और कीचड़ में लिपट कर अपनी पत्नी के कमरे में घुसा। पहले की तरह से ही उसने उसको सहलाने के लिये अपना शरीर अपनी पत्नी की स्कर्ट से मला।

पर इस लड़की ने उसको दुतकारा नहीं, वह उससे गुस्सा भी नहीं हुई बल्कि बदले में उसकी कीचड़ को अपने रूमाल से पोंछा और बोली — "मेरे सुन्दर किन, मैं तुमको बहुत प्यार करती हूँ।" राजा किन तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया।

अगली सुबह जब सब लोग यह सोच रहे थे कि उनको फिर से एक लाश देखने को मिलेगी पर वहॉ तो कुछ और ही निकला। बेकर की तीसरी बेटी तो बहुत खुश खुश बाहर आयी।

यह देख कर तो सभी लोग बहुत खुश हो गये और बेकर तो बहुत ही खुश हो गया क्योंकि सबसे ज़्यादा दुखी तो वही था जिसने इस शादी की वजह से अपनी दो बेटियों खो दी थीं। अब कम से कम उसकी एक बेटी तो ज़िन्दा थी और वह भी राज घराने की बहू के रूप में।

राज्य भर में खूब खुशियॉ मनायी गयीं। राजा ने भी अपने बेटे की शादी की खुशी में खूब बड़ी दावत दी।

बेकर की लड़की को राजा किन के बारे में कुछ शक था सो अगली रात उसको उत्सुकता हुई कि वह राजा किन को देखे। सो उस समय जब वह सो रहा था तो उसने एक मोमबत्ती जलायी और उसको देखने चली।

वहॉ जा कर उसने देखा तो वहॉ तो राजा किन की बजाय एक बहुत ही सुन्दर नौजवान लेटा हुआ था। पर जब वह अपने हाथ में मोमबत्ती ले कर उसको देख रही थी तो उसकी मोमबत्ती के मोम की एक बूँद पिघल कर उस नौजवान की बॉह पर गिर पड़ी। इससे वह नौजवान चौंक कर उठ पड़ा और बहुत गुस्सा हुआ।

वह बोला — "तुमने मेरा जादू तोड़ दिया इसलिये अब तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगी।

तुम अब मुझे तभी देख पाओगी जब तुम मुझे ढूँढते ढूँढते सात बोतल ऑसू बहाओगी, सात लोहे के जूते तोड़ोगी, सात लोहे की मैन्टिल्स[89] और सात लोहे के टोप तोड़ोगी।" यह कह कर वह वहॉ से गायब हो गया।

यह सब देख कर वह लड़की बहुत दुखी हो गयी और इतनी दुखी हुई कि उसके पास उसको ढूँढने के सिवा और कोई रास्ता नहीं बचा।

वह एक लोहार के पास गयी और उसने उससे सात जोड़ी लोहे के जूते, सात लोहे के मैन्टिल्स और सात लोहे के टोप बनवाये और उनको ले कर अपने पति को ढूँढने चल दी।

वह दिन भर रोती रही और चलती रही जब तक रात नहीं हो गयी। जब रात हुई तो वह एक पहाड़ पर थी। रात को ठहरने के लिये उसने वहॉ कोई जगह ढूँढने की कोशिश की तो उसको एक मकान मिल गया। उसने उस मकान का दरवाजा खटखटाया तो एक बुढ़िया ने उसका दरवाजा खोला।

एक लड़की को सामने खड़ा देख कर बोली — "ओ बेचारी लड़की, अफसोस मैं तुमको यहॉ शरण नहीं दे सकती क्योंकि मेरा बेटा हवा है। वह जब शाम को आता है तो वह घर की सारी चीज़ें

[89] Mantel is a cloak type garment worn over the clothes. Here it is made of iron. See its picture above.

उलट पलट कर देता है। जो भी उसके रास्ते में आता है वह उन सबको मिटा देता है।"

वह लड़की उससे प्रार्थना करने लगी कि वह किसी तरह से रात भर के लिये उसको वहॉ रुकने दे सुबह होते ही वह वहॉ से चली जायेगी पर इस समय वह कहॉ जायेगी। सो वह बुढ़िया उस पर दया कर के उसको घर के अन्दर ले गयी।

थोड़ी देर बाद उस बुढ़िया का बेटा हवा आ गया और आते ही बोला — "आदमी, आदमी, मुझे आदमी की बू आ रही है। कहॉ है आदमी?" पर उसकी मॉ ने उसको खाना खिला कर शान्त किया।

सुबह को हवा की मॉ बहुत तड़के ही उठी और लड़की को उठाया और बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा जागे तुम यहॉ से चली जाओ और यह चेस्टनट[90] लेती जाओ। यह मेरी तरफ से तुमको एक भेंट है। जब भी तुम किसी मुश्किल में पड़ जाओ तो इसको तोड़ लेना।"

लड़की ने वह चेस्टनट लिया, हवा की मॉ को धन्यवाद दिया और अपने सफर पर चल दी। अगली रात होते होते वह एक दूसरे पहाड़ पर आ गयी। वहॉ भी उसको एक मकान मिल गया। वह उस मकान तक गयी और उसका दरवाजा खटखटाया।

[90] Chestnut is a kind of nut like walnut, groundnut (peanut), pistachio etc nuts. People eat this nut dry roasted on fire like the ear of corn (Bhuttaa), or in a hot pan on fire, or in an oven. See its picture above.

वहॉ भी एक बुढ़िया ने ही उस मकान का दरवाजा खोला और बोली — "बेटी, मैं तुमको अपने घर में रख लेती पर मैं बिजली की मॉ हूॅ। ओह तुम बेचारी। अगर मेरा बेटा बिजली आ गया और उसने तुमको पकड़ लिया तो?"

लड़की ने उससे भी बहुत प्रार्थना की कि वह उसको केवल रात भर के लिये ठहरने की जगह दे दे इस रात में वह अकेली कहॉ जायेगी तो उसको उस लड़की पर दया आ गयी और वह भी उसको घर के अन्दर ले गयी।

जब बिजली घर लौटा तो उसने इधर उधर कुछ सूॅघा और बोला — "आदमी? यह आदमी की बू कहॉ से आ रही है?" पर काफी ढूॅढने पर भी वह उस लड़की को न पा सका। सो अपना खाना खाने के बाद वह सोने चला गया।

बिजली की मॉ भी सुबह सवेरे तड़के ही उठी और उस लड़की को जगा कर उससे बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा जागे तुम यहॉ से चली जाओ और मेरी तरफ से यह अखरोट[91] लेती जाओ तुम्हारे काम आयेगा। जब कभी तुम किसी भारी मुसीबत में हो तो इसको तोड़ लेना।"

लड़की ने उससे वह अखरोट ले लिया, उसको धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दी। वह फिर सारा दिन चलती रही और जब रात हुई तो अब वह

[91] Walnut – a kind of nut like almond, pistachio, groundnut (peanut) etc. See its picture above

एक तीसरे पहाड़ पर थी। यहाँ भी उसको एक मकान दिखायी दे गया। यह गरज का मकान था।

मकान देख कर उसने वहाँ भी उस मकान का दरवाजा खटखटाया तो वहाँ भी एक बुढ़िया ने उसका दरवाजा खोला। उसने भी अपने बेटे की वजह से उसको रात को शरण देने से मना कर दिया। पर फिर वह भी इस लड़की के काफी प्रार्थना करने के बाद उसको अन्दर ले आयी और रात भर के लिये उसे शरण दी।

शाम को जब गरज आया तो उसको भी अपने घर में आदमी की बू आयी पर ढूँढने पर भी जब उसको कोई आदमी नहीं दिखायी दिया तो वह भी खाना खा कर सोने चला गया।

सुबह को गरज की माँ भी तड़के ही उठी और उस लड़की को जगा कर बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा उठे तुम यहाँ से चली जाओ और मेरी तरफ से यह हैज़लनट[92] लेती जाओ। जब किसी मुसीबत में फँस जाओ तो इसको तोड़ लेना।"

लड़की ने उस बुढ़िया से वह हैज़लनट लिया, उसे धन्यवाद दिया और फिर अपने सफर पर चल दी। वह मीलों चलती रही और चलते चलते एक शहर में आ गयी।

वहाँ आ कर उसने सुना कि वहाँ की राजकुमारी की शादी एक सुन्दर नौजवान से होने वाली थी जो उसी राजकुमारी के किले में

[92] Hazel nut is a kind of nut like chestnut, walnut, ground nut (peanut) etc. See its picture above.

रहता था। इस लड़की को कुछ ऐसा लगा कि यही उसका पति था सो उसको इस शादी को रोकने के लिये कुछ करना था, पर वह क्या करे? वह किले में अन्दर कैसे घुसे?

उसको चैस्टनट की याद आयी तो उसने वह चैस्टनट निकाल कर तोड़ दिया। उसके अन्दर से बहुत सारे हीरे जवाहरात निकल कर नीचे बिखर गये।

उसने वे सब हीरे जवाहरात बटोरे और उनको ले कर राजकुमारी के महल की खिड़की को नीचे बेचने के लिये ले गयी और आवाज लगाने लगी — "हीरे जवाहरात ले लो। बहुत सुन्दर हीरे जवाहरात ले लो।"

राजकुमारी ने अपनी खिड़की से नीचे झॉका तो एक लड़की को हीरे जवाहरात बेचते पाया। उसने उस लड़की को अपने महल में बुला लिया और उससे उन हीरे जवाहरातों की कीमत पूछी।

लड़की बोली — "मैं ये सारे हीरे जवाहरात आपको मुफ्त दे दूँगी अगर आप मुझको अपने महल में ठहरे हुए नौजवान के सोने के कमरे में एक रात गुजारने की इजाज़त दे दें तो।"

यह सुन कर राजकुमारी डर गयी कि शायद यह लड़की उसके होने वाले पति से बात करे और उसको वहॉ से भगाने की कोशिश करे।

पर उसकी दासी ने कहा — "आप यह सब मेरे ऊपर छोड़ दीजिये। हम उस नौजवान को सोने वाली दवा खिला देंगे और वह

रात भर सोता ही रहेगा, उठेगा ही नहीं। तो ऐसी हालत में यह कर ही क्या सकती है?"

सो उन्होंने यही किया। जब वह नौजवान सोने गया तो दासी ने उसको खाने के साथ सोने वाली दवा खिला दी और वह जा कर गहरी नींद सो गया।

दासी रात को उस लड़की को भी उस नौजवान के कमरे में छोड़ आयी। वहाँ जा कर लड़की ने देखा कि वह तो और कोई नहीं उसका अपना पति ही था। उसको देख कर वह बहुत खुश हुई कि उसको उसका खोया हुआ पति मिल गया।

कुछ रात बीतने पर वह उसके पास गयी और उसको जगाने लगी — "उठो देखो, मैं तुम्हारे लिये कितनी दूर चल कर आयी हूँ। मेरे सात लोहे के जूते फट गये हैं। सात लोहे के मैन्टिल्स और सात लोहे के टोप भी टूट गये हैं। मैंने सात बोतल आँसू भी बहाये हैं। इस सबके बाद ही मैंने तुम्हें देखा है। उठो, उठो।"

वह सुबह तक उसको उठाती रही पर राजकुमार तो उस सोने वाली दवा के असर से ऐसा सोया ऐसा सोया कि उसकी तो आँख ही नहीं खुली।

जब लड़की का धीरज छूट गया तो सुबह उसने अखरोट तोड़ दिया। उस अखरोट में से एक के बाद एक सिल्क और कई तरह

के कपड़ों के सुन्दर सुन्दर गाउन निकलने लगे। हर नया गाउन[93] उससे पहले वाले गाउन से कहीं ज़्यादा सुन्दर और कीमती होता।

जब दासी सुबह आयी तो वह तो यह तमाशा देख कर हक्का बक्का रह गयी कि उस लड़की के चारों तरफ गाउन ही गाउन बिखरे पड़े हैं। वह तुरन्त भागी भागी राजकुमारी के पास गयी और जा कर उसे सब बताया।

राजकुमारी भी यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और वह भी तुरन्त दौड़ी दौड़ी दासी के पीछे पीछे वहॉ आयी जहॉ उस लड़की ने अपने चारों तरफ इतने सारे गाउन फैला रखे थे। उन सब गाउन को देख कर उसका मन ललचा गया और उसने उस लड़की से उन सब गाउन की कीमत पूछी।

लड़की ने फिर वही शर्त रखी कि अगर वह उसको उस नौजवान के कमरे में एक रात और सोने देगी तो वह वे सारे गाउन उसको मुफ्त दे देगी।

इस बार भी राजकुमारी ने दासी के कहने पर उस लड़की को उस नौजवान के कमरे में सोने भेज दिया। और इस बार भी उन्होंने उस नौजवान को बेहोशी की दवा खिला कर सुला दिया।

---

[93] Gown is a long heel-length robe made of expensive cloth and richly decorated or embroidered normally for party purposes. See its picture above.

पर इस बार उस लड़की को देर से उसके कमरे में ले जाया गया और जल्दी ही निकाल लाया गया सो उसकी यह दूसरी रात भी बेकार गयी और वह उसको न उठा सकी।

अब उस लड़की के पास केवल एक ही गिरी बची थी – हैज़लनट। कोई और चारा न देख कर उसने उस गिरी को भी तोड़ दिया। उस गिरी में से बहुत सारे घोड़े गाड़ियॉ निकल पड़े।

राजकुमारी ने उनको लेने के लिये जब उनकी कीमत पूछी तो उस लड़की ने उनकी भी वही कीमत मॉगी कि वह उसको अगर उस नौजवान के कमरे में एक रात सोने दे तो वह उन सबको उसको मुफ्त ही दे देगी। राजकुमारी फिर राजी हो गयी।

राजा दो रात से कुछ अजीब सा महसूस कर रहा था सो उसको लगा कि उसके खाने में कुछ था जिसकी वजह से उसको ऐसा महसूस हो रहा था सो उस दिन भी राजकुमार को जब खाने के बाद वह दवा दी गयी तो राजकुमार ने उसको खाने का बहाना तो किया पर उनकी निगाह बचते ही फेंक दिया और जा कर सो गया।

रात को जब उस लड़की ने उससे फिर से बात की तो वह तुरन्त ही उठ गया। उसने देखा कि वहॉ तो उसकी पत्नी बैठी थी। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गया।

उन घोड़ों और गाड़ियों के साथ उन दोनों को वहॉ से भागने में कोई परेशानी नहीं हुई। वे लोग अपने घर पहुॅच गये और घर में खूब खुशियॉ मनायी गयीं।

17 जिद्दी आत्माऐं[94]

एक दिन एक किसान अपने किसी जरूरी काम से बीला[95] जा रहा था। उस दिन मौसम बहुत खराब था। बहुत बड़ा तूफान आया हुआ था।

उसको सड़क पर चलने में बहुत परेशानी हो रही थी पर फिर भी क्योंकि उसको वहॉ जरूरी काम था इसलिये उसका वहॉ जाना बहुत जरूरी था सो बस वह चलता ही जा रहा था।

रास्ते में उसको एक बूढ़ा आता हुआ दिखायी दिया तो उसने उस किसान से पूछा — "गुड डे, ऐसे तूफान में तुम इतनी जल्दी जल्दी कहॉ चले जा रहे हो?"

किसान चलते चलते बोला — "मैं बीला जा रहा हूॅ।"

बूढ़ा बोला — "तुमको कम से कम यह तो कहना चाहिये कि "अगर भगवान की इच्छा रही तो... ।"

अब किसान रुका और उसने उस बूढ़े की तरफ देखा और बोला — "अगर भगवान की इच्छा रही तो, मैं बीला जा रहा हूॅ पर अगर भगवान की इच्छा नहीं भी हुई न, तो भी मुझे वहॉ पहुॅचना तो है ही।"

---

[94] Those Stubborn Souls. Tale No 20. A folktale from Biellese, Italy, Europe.

[95] Biella – name of a place in Italy

अब यह बूढ़ा तो भगवान था। वह बोला — "अगर ऐसा है तो बीला पहुँचने में तुम्हें सात साल लगेंगे। इस बीच तुम इस कीचड़ में कूद जाओ और सात साल तक इसी कीचड़ में ही रहो।"

उस बूढ़े के यह कहते ही वह किसान एक मेंढक बन गया और वहीं पास में बने कीचड़ के एक तालाब में कूद गया।

वह वहाँ सात साल तक रहा। सात साल के बाद वह वहाँ से निकला और आदमी के रूप में आ गया। उसने अपना टोप पहना और फिर बीला की तरफ चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद वही बूढ़ा उसको फिर मिल गया तो उसने फिर पूछा — "अब किधर चल दिये?"

उस किसान ने उसको इस बार भी वही जवाब दिया — "मैं बीला जा रहा हूँ।"

वह बूढ़ा फिर बोला — "कम से कम तुमको यह तो कहना चाहिये "अगर भगवान की इच्छा रही तो..."।"

किसान बोला — "ठीक है ठीक है "अगर भगवान की इच्छा रही तो" और नहीं भी हुई न, तो भी मुझे पता है कि मेरा क्या होना है। मैं अब उस कीचड़ में बिना किसी की सहायता के जा सकता हूँ।" और उसके बाद वह ज़िन्दगी भर नहीं बोला।

18 मरजोरम का बर्तन[96]

एक बार एक दवा बेचने वाला[97] था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक बहुत ही सुन्दर सी बेटी थी जिसका नाम था स्टैला डायना[98]।

स्टैला सिलाई सीखने के लिये रोज एक दर्जिन के पास जाया करती थी। उस दर्जिन की छत पर बहुत सारे फूलों के पौधों के गमले रखे थे। स्टैला को उन पौधों में से एक मरजोरम[99] का पौधा बहुत अच्छा लगता था सो वह हर शाम को उस पौधे को पानी देने जाती थी।

एक शाम जब वह उस पौधे को पानी दे रही थी तो उसने देखा कि उस छत के सामने की तरफ के छज्जे पर एक कुलीन नौजवान खड़ा खड़ा उसकी तरफ देखे जा रहा था।

एक दिन वह बोला — "स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियॉ हैं?"

लड़की बोली — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

---

[96] The Pot of Marjoram. Tale No 21. A folktale from Italy from its Milan area.

[97] Translated for the word "Apothecary" – he is who is a druggist or a chemist

[98] Stella Diana – the name of the girl

[99] Marjoram is a kind of herb like Ajavaayan (Oregano in Italian) of our Indian cooking

नौजवान बोला — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

एक दिन उस नौजवान ने एक मछली बेचने वाले का रूप रखा और उस दर्जिन की खिड़की के नीचे मछली बेचने के लिये चला गया।

मछली बेचने वाले की आवाज सुन कर दर्जिन ने स्टैला को शाम के खाने के लिये मछली खरीदने के लिये भेजा। लड़की ने एक मछली उठायी और मछली बेचने वाले से पूछा कि वह मछली कितने की है।

नौजवान ने उसकी कीमत बतायी तो वह इतनी ज़्यादा थी कि उसने कहा कि वह वह मछली नहीं खरीदेगी। इस पर वह नौजवान बोला — "अच्छा अगर तुम मुझे एक चुम्बन दोगी तो मैं तुमको यह मछली बिना किसी दाम के दे दूँगा।"

स्टैला ने उसको जल्दी से उसे एक बार चूमा और उसने स्टैला को वह मछली उसकी दर्जिन के शाम के खाने के लिये बिना कुछ लिये ही दे दी।

शाम को जब स्टैला छत पर फिर से उन पौधों के बीच में दिखायी दी तो उस नौजवान ने फिर से उससे कहा — "स्टैला

डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियॉ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

तब उस कुलीन नौजवान ने कहा — "एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

अब स्टैला को लगा कि उस नौजवान ने तो उसको बेवकूफ बनाया है तो वह तुरन्त ही वहॉ से हट कर नीचे उस नौजवान को बेवकूफ बनाने के लिये चली गयी।

वहॉ से वह एक आदमी की पोशाक पहन कर निकली। उसने अपनी कमर में एक पेटी भी पहनी। उसकी कमर की पेटी में बहुत सारे सुन्दर जवाहरात जड़े थे। वह एक खच्चर पर चढ़ी और उस नौजवान के सामने गली में चक्कर काटने लगी।

उस नौजवान ने उसकी कमर की पेटी देखी तो बोला — "कितनी सुन्दर पेटी है क्या तुम इसे मुझे बेचोगे?"

आदमी की नकल बनाते हुए वह बोली कि वह उस पेटी को उसे बिना कुछ लिये ही दे देगी। वह नौजवान बोला कि वह उस पेटी को लेने के लिये कुछ भी करने को तैयार है।

वह लड़की बोली — "ठीक है, अगर ऐसा है तो मेरे खच्चर की पूँछ को चूम लो और मैं तुमको यह पेटी दे दूँगा।"

वह लड़का सचमुच में उस पेटी को लेना चाहता था सो उसने चारों तरफ देखा कि कोई उसको देख तो नहीं रहा और यह यकीन करने के बाद कि वाकई उसको कोई नहीं देख रहा था उसने उस लडके के खच्चर की पूँछ को चूम लिया और वह पेटी ले कर चला गया।

अगले दिन उन दोनों ने फिर एक दूसरे को देखा और फिर उसी तरीके से बात शुरू हुई —

"स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियाँ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

"एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

"पेटी को लेने के लिये तुमने भी तो मेरे खच्चर की पूँछ को चूमा।"

यह सुन कर उस नौजवान को जल्दी से कुछ विचार आया सो उसने जल्दी से उस दर्जिन के कान में कुछ कहा और उससे उसकी सीढ़ियों के नीचे छिपने की इजाज़त माँग ली।

जब स्टैला सीढ़ियों से नीचे आयी तो वह नौजवान सीढ़ियों से बाहर की तरफ निकला और स्टैला को उसके स्कर्ट से पकड़ कर खींच लिया।

स्टैला चिल्लायी — "मैम मैम, ये सीढ़ियाँ तो मुझे मेरे स्कर्ट से भी पकड़ती हैं।"

उस शाम को छत पर खड़ी हुई स्टैला और अपने छज्जे पर खड़े हुए उस नौजवान में फिर ये बातें हुईं —

"स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियाँ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

"एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

"पेटी को लेने के लिये तुमने भी तो मेरे खच्चर की पूँछ को चूमा।"

"मैम मैम, ये सीढ़ियाँ तो मुझे मेरे स्कर्ट से भी पकड़ती हैं।"

इस बार स्टैला ने जल्दी की। उसने जल्दी से सोचा अबकी बार मैं तुमको ठीक करती हूँ।

उसने उस नौजवान के नौकर को कुछ दिया और एक रात वह उसके घर में घुस गयी। वहाँ वह एक सफेद चादर से ढकी हुई हाथ में एक टार्च और एक खुली हुई किताब लिये हुए उसके सामने खड़ी हो गयी।

उसको देख कर तो वह नौजवान डर के मारे काँपने लगा — "ओ मौत, मेरे प्यार, मैं तो अभी जवान हूँ और धीरज वाला हूँ। तुम मेरी चाची के पास जाओ जो लड़ती है और बुढ़िया है।"

स्टैला ने अपने हाथ की टार्च बुझा दी और वहाँ से चली गयी। अगले दिन वे दोनों अपनी पुरानी जगह मिले और बात फिर वहीं से शुरू हुई — "स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियाँ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

स्टैला फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

"एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

"पेटी को लेने के लिये तुमने मेरे खच्चर की पूँछ को चूमा।"

"मैम मैम, ये सीढ़ियाँ तो मुझे मेरे स्कर्ट से भी पकड़ती हैं।"

"ओ मौत, मेरे प्यार, मैं तो अभी जवान हूँ और धीरज वाला हूँ। तुम मेरी चाची के पास जाओ जो लड़ती है और बुढ़िया है।"

हाल के इस मजाक पर उस नौजवान ने सोचा बस अब काफी हो गया अब मैं उससे हमेशा के लिये दोस्ती कर लेता हूँ।

उसने अपना यह काम कहते ही कर लिया। वह तुरन्त ही दवा बेचने वाले के पास गया और उससे शादी के लिये स्टैला का हाथ माँगा।

दवा बेचने वाला यह सुन कर बहुत खुश हुआ और तुरन्त ही उनकी शादी भी हो गयी। जब शादी का दिन पास आ रहा था तो स्टैला को डर लगा कि कहीं उसका दुलहा कहीं उससे उसकी पिछली छेड़खानी का बदला न ले।

सो उसने अपने मन में कुछ तय किया। उसने एक ज़िन्दा आदमी जितनी बड़ी पेस्ट्री की एक गुड़िया बनायी जो बिल्कुल उसके जैसी लग रही थी। दिल की जगह उसने लाल रंग मिली फेंटी हुई क्रीम[100] से भरा एक थैला रख दिया।

शादी की रस्म के बाद वह अपने कमरे में चली गयी। वहॉ जा कर उसने वह गुड़िया अपने बिस्तर में रख दी और उसको अपना रात के सोने वाला गाउन और टोपी पहना दी। फिर वह वहीं छिप कर बैठ गयी।

वह नौजवान उस कमरे में आया और बुदबुदाया — "आह, आखिर हम लोग एक साथ हो ही गये। अब वह समय आ गया है जब मैं उससे अपने साथ की गयी सारी शरारतों का सारा बदला चुका लूँगा।"

कह कर उसने एक छुरा निकाला और उस गुड़िया के दिल में घोंप दिया। वह थैला फट गया और उसकी सारी क्रीम निकल कर बाहर फैल गयी, यहॉ तक कि दुलहे के चेहरे पर भी।

"ओह बेचारा मैं, मेरी स्टैला का तो खून भी कितना मीठा है। मैं उसे कैसे मार सका? उफ, काश मैं उसे फिर से ज़िन्दा कर सकता।"

[100] Whipped Cream

सुनते ही स्टैला अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकल आयी और अपनी घंटी जैसी आवाज में बोली — "यह रही तुम्हारी स्टैला। भगवान मुझे बचाये रखे मैं ज़िन्दा हूँ।"

दुलहा तो स्टैला को देख कर बहुत ही खुश हो गया।

"मेरी स्टैला ज़िन्दा है, मेरी स्टैला ज़िन्दा है।" कहते हुए उसने स्टैला को गले से लगा लिया और फिर वह एक साथ मिल जुल कर रहने लगे।

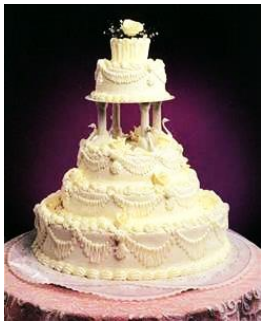

19 बिलियर्ड खेलने वाला[101]

एक बार एक नौजवान था जो अपनी ज़िन्दगी एक कैफ़े में बिलियर्ड[102] के खिलाड़ियों को चुनौती देने में गुजारा करता था।

एक दिन वह उस कैफ़े में एक विदेशी भलेमानस से मिला तो वह उससे बोला — "बिलियर्ड खेलोगे?"

विदेशी बोला — "हॉ हॉ खेलेंगे।"

नौजवान बोला — "दॉव पर क्या लगाओगे?"

विदेशी ने कहा — "अगर तुम जीते तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा।"

सो दोनों ने बिलियर्ड खेलना शुरू किया और उस खेल में वह नौजवान जीत गया।

---

[101] The Billiards Player. Tale No 22. – a folktale from Milan, Italy, Europe.

[102] Billiards – an indoor table game. In Britain it is called Billiards and in America it is called Pool. See its picture above.

अजनबी बोला — "बहुत अच्छे। मैं "सुन"[103] देश का राजा हूँ। अभी तो मैं जाता हूँ पर अपनी बेटी की शादी के बारे में मैं तुमको बहुत जल्दी ही लिखूँगा।" यह कह कर वह चला गया।

अब हर दिन वह नौजवान डाकिये की इन्तजार करता रहा कि वह "सुन" के राजा की चिट्ठी ले कर आयेगा पर वह डाकिया तो आया ही नहीं। सो कुछ दिन तक तो उस नौजवान ने इन्तजार किया फिर वह उस राजा को खोजने के लिये खुद ही घर से निकल पड़ा।

हर रविवार को वह एक नये शहर में ठहरता और चर्च में से "मास"[104] से बाहर निकलते लोगों का इन्तजार करता। फिर उनमें से निकलते बड़े बूढ़ों से पूछता कि क्या उनको मालूम था कि "सुन" का राजा कहाँ रहता था? क्या वे उसको जानते थे? पर किसी को उसके बारे में कुछ भी पता नहीं था।

एक बार एक बूढ़े ने जवाब दिया — "मुझे यकीन है कि वह है, पर वह कहाँ है यह मुझे नहीं पता है।"

वह नौजवान अगले हफ्ते फिर चलता रहा और अगले रविवार को फिर एक नये शहर में आया। वहाँ उसको एक और बूढ़ा मिला जिसने उसको बताया कि तुम फलाँ शहर चले जाओ शायद वह तुमको वहाँ मिल जाये।

---

[103] Sun country

[104] Mass is kind of Catholic Christian worship conducted in the church.

सो अगले हफ्ते रविवार को वह उसी शहर में जा पहुॅचा और "मास" से बाहर निकलते लोगों में से एक बूढ़े आदमी से पूछा कि सुन का राजा कहॉ रहता था।

वह बोला — "वह तो यहीं पास में ही रहता है। इस सड़क के आखीर में दॉये हाथ को तुमको उसका महल मिल जायेगा। तुम उस महल को नजर अन्दाज नहीं कर सकते क्योंकि उस महल का कोई दरवाजा नहीं है।"

"तो फिर लोग उसमें घुसते कैसे हैं?"

वह बूढ़ा बोला — "मुझे क्या मालूम? पर मेरी सलाह यह है कि तुम उसके पास लगे बागीचे में इन्तजार करना। वहॉ एक तालाब है जहॉ "सुन" के राजा की तीन बेटियॉ दोपहर को रोज उसमें तैरने आती हैं।"

यह सुन कर वह नौजवान वहॉ से चला गया और राजा के बागीचे में जा कर छिप गया। ठीक दोपहर को राजा की तीन बेटियॉ वहॉ आयीं। उन्होंने अपने कपड़े उतारे और तालाब में कूद गयीं और तैरने लगीं।

इस बीच वह नौजवान चोरी छिपे उनके कपड़ों तक पहुॅच गया और उनमें से सबसे सुन्दर लड़की के कपड़े उठा कर वहॉ से फिर वहीं चला गया जहॉ वह पहले छिपा हुआ था।

जब वे लड़कियॉ तैर चुकीं तो उस तालाब से बाहर निकलीं और अपने अपने कपड़े पहनने लगीं। पर उनमें से उस सबसे सुन्दर लड़की को अपने कपड़े नहीं मिले। वे वहॉ से गायब थे।

उसकी दूसरी बहिनों ने कहा — "जल्दी करो, हमने तो अपने कपड़े पहन लिये तुम यहॉ क्यों रुकी खड़ी हो?"

तीसरी लड़की ने कुछ परेशान होते हुए कहा — "मेरे कपड़े नहीं मिल रहे हैं। ज़रा मेरा इन्तजार करो।"

"ठीक से देखो हमको जाना भी है।" यह कह कर वे उसको वहीं छोड़ कर चली गयीं।

उस लड़की ने रोना शुरू कर दिया तो वह नौजवान अपने छिपने की जगह से बाहर निकल कर बोला — "अगर तुम मुझे अपने पिता के पास ले चलो तो मैं तुम्हारे कपड़े वापस कर दूँगा। तुम्हारे कपड़े मेरे पास हैं।"

"पर तुम हो कौन?"

वह नौजवान बोला — "एक बार मैंने "सुन" के राजा को बिलियर्ड में हराया था सो उसकी शर्त के अनुसार अब मुझे उसकी बेटी से शादी करनी है।"

दोनों जवान बच्चों ने एक दूसरे की तरफ देखा तो दोनों को एक दूसरे से प्यार हो गया।

लड़की बोली — "मैं तुमको अपने पिता के पास इस शर्त पर ले चलती हूँ कि फिर तुम मुझसे ही शादी करोगे। मेरे पिता तुम्हारी

ऑखों पर पट्टी बॉधेंगे और हम तीनों में से एक को चुनने को कहेंगे। उस समय तुम हम तीनों बहिनों के हाथ छू कर मुझे चुन सकते हो। ध्यान रखना मेरी एक उॅगली कटी हुई है।"

"मंजूर है।" उस नौजवान ने उसके कपड़े वापस कर दिये और वह लड़की उस नौजवान को अपने पिता के पास ले गयी।

वहॉ जा कर वह नौजवान बोला — "मैं आपकी बेटी से शादी करने आया हूॅ।"

राजा बोला — "ठीक है तुम कल उससे शादी करोगे। मेरे तीन बेटियॉ हैं। इस बीच तुम मेरी तीन बेटियों में से किसी एक बेटी को चुन लो कि तुम किससे शादी करोगे। तुम्हारी शादी कल उसी से हो जायेगी।" यह कह कर राजा ने उस नौजवान की ऑखों पर पट्टी बॅधवा दी।

पहली लड़की अन्दर आयी तो उसने उसके हाथ छुए और बोला "यह मेरे लिये नहीं है"।

राजा ने फिर दूसरी लड़की को बुलवाया। उसने उसके भी हाथ छुए तो बोला "यह भी मेरे लिये नहीं है"।

राजा ने फिर अपनी तीसरी बेटी को बुलाया। उसने यह पक्का करने के लिये कि यह वाकई वही लड़की है या नहीं जिसके हाथ की एक उॅगली गायब थी उसके भी हाथ छुए।

यह लड़की वही थी जिसके हाथ की एक उॅगली गायब थी। उसने उस लड़की से शादी के लिये हॉ कर दी।

अगले दिन उन दोनों की शादी हो गयी और दोनों पति पत्नी महल से अपने कमरे में चले गये।

आधी रात को पत्नी ने कहा — "मैं अब तुमसे और ज़्यादा नहीं छिपा सकती। मेरे पिता तुमको मारने का प्लान बना रहे हैं।"

वह नौजवान बोला — "तो फिर चलो यहॉ से भाग चलते हैं।" सो वे लोग सवेरे तड़के ही उठे, राजा की घुड़साल से उन्होंने दो सबसे अच्छे घोड़े उठाये और उन पर बैठ कर भाग लिये।

राजा जब सवेरे उठा तो वह अपनी बेटी के कमरे में गया तो पाया कि वहॉ से तो उसकी बेटी और वह नौजवान दोनों ही गायब हैं।

यह देख कर वह अपनी घुड़साल की तरफ दौड़ा गया तो देखा कि उसके दो सबसे अच्छे घोड़े भी वहॉ से गायब हैं। उसने अपनी कुछ अच्छी घुड़सवार सेना ली और उस सेना को अपनी बेटी और दामाद[105] को लाने के लिये भेज दिया।

जब वह नौजवान और राजा की बेटी जा रहे थे तो उन्होंने अपने पीछे घोड़ों की टापों की आवाज सुनी। उन्होंने इधर उधर देखा तो देखा कि सिपाहियों की एक टुकड़ी उनकी तरफ बढ़ी चली आ रही थी।

राजा की बेटी ने अपने सिर से एक कंघी निकाली और अपने पीछे जमीन पर फेंक दी। कंघी के जमीन पर गिरते ही वहॉ एक

[105] Son-in-law – daughter's husband

जंगल पैदा हो गया। वहॉ एक आदमी और एक स्त्री उस जंगल के पेड़ उखाड़ने में लगे हुए थे।

सिपाहियों ने उनसे पूछा — "क्या तुमने यहॉ "सुन" के राजा की बेटी को उसके पति के साथ जाते देखा है?"

उन आदमी और स्त्री ने जवाब दिया — "हम तो यहॉ के ये पेड़ उखाड़ रहे हैं जब रात हो जायेगी तब चले जायेंगे।"

सिपाहियों ने अबकी बार कुछ ऊॅची आवाज में पूछा — "हमने तुमसे पूछा कि क्या तुम लोगों ने यहॉ "सुन" के राजा की बेटी को उसके पति के साथ जाते देखा है?"

वे आदमी और स्त्री बोले — "हॉ हॉ जब हमारी गाड़ी भर जायेगी तब हम यहॉ से चले जायेंगे। सुना नहीं तुमने?" नाउम्मीद से हो कर वे सिपाही राजा के पास लौट आये।

राजा ने पूछा — "क्या तुमको वे दोनों मिले?"

सिपाही बोले — "हम बस उनको पकड़ने ही वाले थे कि हमारे और उनके बीच में एक जंगल आ खड़ा हुआ और हम एक आदमी और एक स्त्री के सामने खड़े थे जिन्होंने हमें केवल बेवकूफी के जवाब दिये।"

राजा बोला — "तो तुमको उन्हीं को पकड़ लेना चाहिये था। वे ही मेरी बेटी और उसका पति थे।"

सो वे फिर चल दिये। अबकी बार भी सिपाहियों ने बस उनको पकड़ ही लिया था कि "सुन" के राजा की बेटी ने फिर से अपने सिर से एक कंघी निकाल कर अपने पीछे फेंक दी।

कंघी के वहाँ गिरते ही वहाँ एक बागीचा बन गया और उस बागीचे में एक आदमी और एक स्त्री चिकोरी[106] और मूली इकट्ठी कर रहे थे।

सिपाहियों ने उनसे पूछा — "क्या तुमने यहाँ "सुन" के राजा की बेटी को उसके पति के साथ जाते देखा है?"

वह स्त्री बोली — "ये मूलियाँ दस सैन्ट का एक गुच्छा है और यह चिकोरी पाँच सैन्ट की एक है।"

सिपाहियों ने अपना सवाल फिर से दोहराया पर वे आदमी और स्त्री केवल चिकोरी और मूली के बारे में ही बातें करते रहे। झक मार कर वे लोग फिर वापस घर चले गये।

राजा बोला — "तुमको उनको पकड़ लेना चाहिये था क्योंकि वे ही मेरी बेटी और दामाद थे।"

सो वे सिपाही बेचारे एक बार फिर उनके पीछे भागे। उन्होंने उनको फिर से पकड़ लिया होता पर "सुन" के राजा की बेटी ने एक बार फिर अपने सिर से एक कंघी निकाली और अपने पीछे फेंक दी।

---

[106] Chickory is a kind of leafy vegetable its roots are eaten like Indian Moolee or radish. See its picture above.

अबकी बार वह कंघी जहॉ गिरी वहॉ एक चर्च खड़ा हो गया। सिपाहियों ने उस चर्च के सामने एक आदमी और एक स्त्री को खड़ा पाया तो उन्होंने उनसे फिर पूछा — "क्या तुमने यहॉ "सुन" के राजा की बेटी को उसके पति के साथ जाते देखा है?"

दोनों ने जवाब दिया — "हम लोग अब दूसरी घंटी बजा रहे हैं। जब हम तीसरी घंटी बजायेंगे तब सब लोग "मास" के लिये यहॉ आयेंगे।"

इस बार भी वे सिपाही उनसे यह न कहलवा सके कि वे ही "सुन" के राजा के बेटी और दामाद थे सो वे फिर झक मार कर वापस आ गये।

राजा फिर चिल्लाया — "वे ही मुजरिम थे तुम्हें उनको पकड़ लेना चाहिये था।"

पर फिर उसने खुद ने भी उनको ढूँढने की कोशिश छोड़ दी और वे नौजवान और "सुन" के राजा की बेटी दोनों वहॉ से चुपचाप निकल गये।

20 जानवरों की भाषा[107]

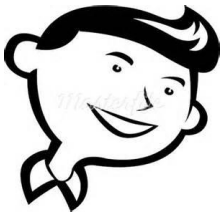

एक बार एक बहुत ही अमीर सौदागर था जिसके एक बेटा था। उस बेटे का नाम था बोबो[108]। बोबो बहुत ही तुरत बुद्धि मजाक करता था और सीखने के लिये हमेशा तैयार रहता था।

उसकी यह अक्लमन्दी देख कर उसके पिता ने उसको एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी की देखरेख में रख दिया था और उसको उसे सारी भाषाएँ सिखाने के लिये कह दिया।

जब बोबो की पढ़ाई खत्म हो गयी तो वह घर आ गया। एक दिन वह अपने पिता के साथ बगीचे में घूम रहा था। वहाँ बहुत सारी चिड़ियें एक पेड़ पर बैठी बैठी इतनी ज़ोर ज़ोर से चीं चीं चीं चीं कर रही थी कि कुछ भी सुनायी नहीं पड़ रहा था।

सौदागर अपने कानों में उँगलियाँ घुसाता हुआ बोला — "ये चिड़ियें हर शाम मेरे कानों का परदा फाड़ती हैं।"

बोबो ने पूछा — "क्या मैं आपको बताऊँ कि ये चिड़ियें क्या कह रही हैं?"

---

[107] Animal Speech. Tale No 23. A folktale from Italy from its Mantua area.

[108] Bobo – the name of the boy

उसके पिता ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा और पूछा — "तुम्हें कैसे पता कि ये चिड़ियें क्या कह रही हैं। तुम तो ज्योतिषी नहीं हो न, या हो?"

बोबो बोला — "नहीं नहीं, मैं ज्योतिषी तो नहीं हूँ पर मुझे मेरे गुरू ने मुझे कई जानवरों की भाषाएँ सिखायी हैं इसलिये मैं आपको यह बता सकता हूँ कि ये क्या कह रही हैं।"

सौदागर बोला — "अब तुम मुझसे यह मत कहना कि मेरा पैसा तुमको जानवरों की भाषा सिखाने में गया है। तुम्हारे उस गुरू ने क्या सोचा कि मैंने तुमको उसके पास जानवरों की भाषा सीखने के लिये भेजा था? मेरा मतलब तो यह था कि उसको तुमको आदमियों की भाषा सिखानी चाहिये थी न कि इन गूँगे जानवरों की।"

बोबो बोला — "क्योंकि जानवरों की भाषा समझना ज़्यादा मुश्किल होता है इसलिये उन्होंने मुझे उन्हीं की भाषा से सिखाना शुरू करने का विचार किया।"

उसी समय एक कुत्ता भौंकता हुआ भागा चला गया तो बोबो बोला — "क्या मैं आपको बताऊँ कि यह कुत्ता क्या कह रहा था?"

"नहीं नहीं। मुझे अब तुम्हारे इन गूँगे जानवरों के बारे में एक शब्द भी और नहीं सुनना। उफ, लगता है कि मैंने तो तुमको वहाँ पढ़ने के लिये भेज कर अपना पैसा ही बर्बाद किया।"

वे चलते रहे चलते रहे। चलते चलते वे एक खाई के किनारे आ गये। वहॉ कुछ मेंढक चिल्ला रहे थे। उनकी आवाज सुन कर पिता फिर दुखी हो कर बोला — "उफ, ये मेंढक भी मुझे बहुत तंग करते हैं।"

"पिता जी क्या मैं बताऊॅ कि ये मेंढक क्या....?"

पिता बोला — "भगवान करे शैतान तुमको और तुमको जिसने यह सिखाया है दोनों को उठा कर ले जाये।"

यह देख कर कि अपने बेटे के ऊपर उसका इतना पैसा बेकार गया सौदागर बहुत गुस्सा हो रहा था। उसको लग रहा था कि यह जानवरों की भाषा किसी जादू टोने से सम्बन्धित है।

यह सोच कर उसने अपने दो नौकरों को बुलाया और चुपचाप उनको अगली सुबह के लिये कुछ बता दिया।

बोबो को सुबह ही उठा दिया गया। एक नौकर ने उसको एक गाड़ी में बिठाया और वह खुद भी उसके साथ ही बैठ गया। दूसरा नौकर आगे बैठ गया और उसने घोड़े को चाबुक मार कर गाड़ी हॉक दी।

बोबो को पता ही नहीं था कि वे लोग कहॉ जा रहे थे। पर उसने देखा कि जो नौकर उसके पास बैठा था उसकी ऑखें सूजी हुई थीं और वह कुछ दुखी भी था।

बोबो ने उससे पूछा — "हम लोग कहॉ जा रहे हैं? और तुम इतने दुखी क्यों हो?" पर उस नौकर ने कोई जवाब नहीं दिया।

तभी घोड़ों ने हिनहिनाना शुरू किया तो बोबो समझ गया कि वे क्या कह रहे थे। वे कह रहे थे — "यह हमारा जाना अच्छा नहीं है कि हम अपने छोटे मालिक को मौत की तरफ ले कर जा रहे हैं।"

दूसरा घोड़ा बोला — "यह तो उसके पिता का बड़ा बेरहम हुक्म है।"

बोबो ने अपने पास बैठे वाले नौकर से कहा — "तो क्या तुम लोगों को मेरे पिता ने यह हुक्म दिया था कि तुम लोग मुझे बाहर ले जाओगे और मार डालोगे?"

नौकरों ने आश्चर्य से पूछा — "आपको कैसे मालूम?"

बोबो बोला — "इन घोड़ों ने मुझसे ऐसा कहा। ठीक है तो तुम मुझे अभी अभी मार दो देर तक इन्तजार करा के मुझे क्यों परेशान करते हो?"

नौकर बोले — "पर हमारा दिल नहीं करता कि हम आपको मार दें। हम उस पाप से छूटेंगे कैसे?"

जब वे यह बात कर रहे थे तो उनका अपना कुत्ता भौंकता हुआ उनके पीछे दौड़ा। असल में वह घर से ही उस गाड़ी के पीछे पीछे भागता हुआ चला आ रहा था।

बोबो ने उसकी भी सुनी कि वह क्या कह रहा था। वह कह रहा था कि मैं अपने छोटे मालिक को बचाने के लिये अपनी जान भी कुर्बान कर दूँगा।

बोबो बोला — "अगर मेरे पिता बेरहम हैं तो क्या हुआ कम से कम और दूसरे लोग तो हैं जो मेरे वफादार हैं जैसे तुम ओ वफादार नौकर और यह कुत्ता जो मेरे लिये अपनी जान तक देने को तैयार है।"

नौकर बोले — "अगर ऐसा है तो हम कुत्ते का दिल निकाल कर ले जायेंगे और जा कर बड़े मालिक को दे देंगे। छोटे मालिक, आप भाग जायें यहॉ से।"

बोबो ने अपने नौकरों को और अपने कुत्ते को गले से लगाया और वहॉ से चला गया। सारा दिन वह इधर उधर घूमता रहा। जब रात हुई तो वह एक किसान के घर आया और उससे रहने की जगह मॉगी। जब सब लोग मेज के चारों तरफ शाम का खाना खाने बैठे तो बाहर एक कुत्ता भौंकने लगा।

बोबो उसको सुनने के लिये खिड़की के पास गया और फिर आ कर बोला — "जल्दी करो। स्त्रियों और बच्चों को सोने के लिये भेज दो और तुम लोग अपने अपने हथियार सॅभाल लो और तैयार हो जाओ। कुछ डाकू आधी रात को यहॉ हमला करने वाले हैं।"

वहॉ बैठे सब लोगों को लगा कि यह आदमी पागल हो गया है। वे बोले — "तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? यह सब तुमसे किसने कहा?"

बोबो बोला — "मुझे यह सब इस कुत्ते ने बताया जो अभी यहॉ भौंक रहा था। बेचारा जानवर। अगर मैं यहॉ न होता तब तो

इस बेचारे का भौंकना बेकार ही जाता। तुम लोग मेरी बात मानोगे तो सुरक्षित रहोगे।"

किसानों ने अपनी बन्दूकें उठा लीं और छोटे पेड़ों की एक कतार के पीछे छिप गये और उनकी पत्नियॉ और बच्चे घर के अन्दर बन्द हो कर बैठ गये।

आधी रात को पहले एक सीटी की आवाज सुनायी दी, फिर दूसरी और फिर तीसरी और फिर उसके बाद दौड़ते हुए पैरों की।

ये आवाजें सुनते ही उन छोटे पेड़ों के पीछे से दनादन गोलियॉ चलने लगीं सो सारे चोर भाग गये। उनमें से दो चोर मारे भी गये। वे अपने हाथ में अपने चाकू पकड़े हुए कीचड़ में पड़े पाये गये।

बोबो की तो इसके बाद वहॉ बड़ी आवभगत हुई। हालॉकि किसान चाहते थे कि वह वहीं उन्हीं के साथ रहे पर उसने उनको बाई बाई कहा और अपने रास्ते चल दिया।

मीलों चलने के बाद शाम को वह एक और किसान के घर आया। वह यह सोच ही रहा था कि वह उसके घर दरवाजा खटखटाये या नहीं कि उसने पास में ही कुछ मेंढकों को टर्राते हुए सुना।

उसने उनको पास से सुना तो उनमें से एक मेंढक कह रहा था — "आओ और होस्ट[109] को यहॉ फेंको। उसे यहॉ मेरे पास

[109] Host is bread or wafer consecrated in the celebration of the Eucharist (a sacred ceremony in the Church)

फेंको। अगर तुम उसे मेरे पास नहीं फेंकोगे तो मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूँगा।"

"पर तुम उसे पकड़ नहीं पाओगे और उसके दो टुकड़े हो जायेंगे। हमने उसे कितने सालों से पूरा का पूरा बचा कर रखा है। हम उसको तोड़ना नहीं चाहते।"

बोबो तुरन्त ही उस गड्ढे के पास गया और उसके अन्दर झाँका। उसने उस गड्ढे में देखा कि मेंढक एक पवित्र पतली सी चौरस पत्ती से एक गेंद की तरह से खेल रहे थे। बोबो ने उसको देखते ही क्रास का निशान बनाया।

एक मेंढक बोला — "यह होस्ट छह साल से इस गड्ढे में है। छह साल पहले जब शैतान ने किसान की बेटी को बहकाया था तो कम्यूनियन[110] में होस्ट को निगलने की बजाय उस लड़की ने उस होस्ट को अपनी जेब में छिपा लिया था और फिर चर्च से घर जाते समय उसने उसको इस गड्ढे में फेंक दिया था।"

बोबो ने अब उस किसान के घर का दरवाजा खटखटाया तो उस किसान ने उसको शाम के खाने के लिये अन्दर बुला लिया।

वह जब किसान से बात कर रहा था तो उसको पता चला कि उसकी बेटी पिछले छह सालों से बीमार चली आ रही थी। कई

[110] Communion is a Christian worshipping activity in the Church in which the attendees eat bread and drink wine.

डाक्टरों को दिखाया पर कोई भी यह नहीं बता सका कि उसको बीमारी क्या है और अब वह मरने वाली हो रही है।

बोबो बाला — "मुझे लगता है कि भगवान उसको सजा दे रहा है। छह साल पहले उसने चर्च का पवित्र होस्ट एक गड्ढे में फेंक दिया था। तुम लोग उस होस्ट को ढूँढो और उससे कम्यूनियन करवाओ तो वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी।"

यह सुन कर उस किसान को बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला — "पर तुमसे यह सब किसने कहा?"

बोबो बोला — "मेंढकों ने।"

हालॉकि उस किसान को बोबो की बातों पर विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी उसने उस गड्ढे में उस होस्ट को ढूँढा तो होस्ट तो गड्ढे में ही था सो वह उसको मिल गया।

फिर उस किसान ने उस लड़की का ठीक से कम्यूनियन भी करवा दिया और वह ठीक हो गयी। वह किसान तो सोच ही नहीं सका कि बोबो ने जो कुछ भी उसके लिये किया वह बोबो को इसके बदले में क्या दे।

पर बोबो को तो उससे कुछ चाहिये नहीं था सो वह उसको गुड बाई कह कर आगे चल दिया।

एक दिन जब दिन बहुत गर्म हो रहा था तो बोबो को दो नौजवान मिले जो एक चेस्टनट के पेड़[111] के नीचे लेटे आराम कर रहे थे। उसने उनसे पूछा कि क्या वह भी वहॉ लेट सकता है। उन्होंने हॉ कर दी तो वह भी वहीं पैर फैला कर लेट गया।

उसने उनसे पूछा — "तुम लोग कहॉ जा रहे हो?"

"हम लोग रोम जा रहे हैं। क्या तुमको नहीं पता कि पहला पोप[112] मर गया है और अब नया पोप चुना जाने वाला है?"

तभी उनके सिरों के ऊपर उस चेस्टनट के पेड़ के ऊपर चिड़ियों का एक झुंड आ कर बैठ गया तो बोबो बोला — "ये चिड़ियें भी रोम जा रही हैं।"

उन दोनों नौजवानों ने पूछा — "तुमको कैसे मालूम?"

"मुझे इन चिड़ियों की भाषा आती है।" उसने उनको और ध्यान से सुना और बोला — "ज़रा सोचो तो कि वे और क्या कह रही हैं।"

"क्या कह रही हैं?"

"वे कह रही हैं कि हममें से एक को पोप चुन लिया जायेगा।"

---

[111] Chestnut is a kind of very dark brown color nut which is normally eaten after roasting on coal fire and then peeling it. It is very common in Italy but it is found in other places too. Hawkers sell them there as people sell hot roasted corn ears on streets in India. See the picture of its tree above.

[112] Pope is the Head of the Catholic Church, lives in Vatican City (a city country) where he has his everything – currency, army, administration etc, and he is the King of that city state.

उन दिनों पोप का चुनाव इस तरह से होता था कि एक फाख्ता को सेन्ट पीटर्स स्क्वायर[113] के ऊपर उड़ा दिया जाता था जहॉ बहुत सारी भीड़ इकट्ठी रहती थी और वह फाख्ता जिस किसी के सिर पर भी जा कर बैठ जाती थी वही पोप होता था।

सो वे तीनों रोम चल दिये और जा कर सेन्ट पीटर्स स्क्वायर में भीड़ के साथ खड़े हो गये। फाख्ता को छोड़ दिया गया और वह फाख्ता चारों तरफ घूम कर बोबो के सिर पर आ बैठी।

खुशी की तालियों और प्रार्थनाओं के बीच बोबो को ऊपर उठा लिया गया और पोप के कपड़े पहना कर उसके सिंहासन के ऊपर बिठा दिया गया।

फिर बोबो भीड़ को आशीर्वाद देने के लिये उठा तो भीड़ के शोर के बीच में एक चिल्लाहट उठी। भीड़ में एक बूढ़ा बेहोश हो कर गिर पड़ा था। वह बूढ़ा एक मरे हुए के बराबर सा पड़ा था।

नया पोप उसकी तरफ दौड़ा तो उसने उसको पहचान लिया। वह तो उसका अपना पिता था। वह बूढ़ा तो अपने आपको नफरत से देख रहा था और अपने बेटे की बॉहों में मरने से पहले उससे माफी मॉगना चाहता था।

बोबो ने उसे माफ कर दिया। बोबो बाद में चर्च का एक बहुत ही अच्छा पोप साबित हुआ।

[113] St Peter's Square – a part of Vatican City where Pope lectures and shows himself to the public.

List of Stories of “Folktales of Italy-1”

1. Dauntless Little John
2. The Ship With Three Decks
3. The Man Who Came Out Only at Night
4. And Seven
5. Body Without Soul
6. Money Can Do Everything
7. The Little Shepherd
8. The Little Girl Sold With the Pears
9. The Snake
10. Three Castles
11. The Prince Who Married a Frog
12. The Parrot
13. Twelve Bulls
14. Crack and Crook
15. The Canary Prince
16. King Krin
17. Those Stubborn Souls
18. The Pot of Marjoram
19. The Billiard's Player
20. Animal Speech

List of Stories of “Folktales of Italy-2”

1. The Three Cottages
2. The Peasant Astrologer
3. The Wolf and the Three Girls
4. The Land Where One Never Dies
5. The Devotee of St Joseph
6. Three Crones
7. The Crab Prince
8. Silent For Seven Years
9. Pome and Peel
10. Cloven Youth
11. The Happy Man's Shirt
12. One Night in Paradise
13. Jesus and Saint Peterin Friuli
14. The Magic Ring
15. The King's Daughter Who Could Never Get Figs
16. The Three Dogs
17. Uncle Wolf

18. The King of Animals
19. Dear As Salt
20. The Queen of the Three Mountains of Gold

List of Stories of "Folktales of Italy-3"

1. The Dragon With Seven Heads
2. The Sleeping Queen
3. The Son of the Merchant from Milan
4. Salmanna Grapes
5. Enchanted Castle
6. The Old Woman's Hide
7. Olive
8. Catherine Sly Country Lass
9. The Daughter of the Sun
10. The Golden Ball
11. The Milkmaid Queen

List of Stories of "Folktales of Italy-4"

1. The North Wind's Gifts
2. The Sorceror's Head
3. Apple Girl
4. The Palace of the Doomed Queen
5. Fourteen
6. Crystal Rooster
7. A Boat For Land and Water
8. Louse Hide
9. The Love of the Three Pomegranates
10. The Mangy One
11. Three Blind Queens
12. One Eye
13. False Grandmother
14. Shining Fish
15. Miss North Wind and Mr Zephir
16. The Palace Mouse and the Field Mouse
17. Crack, Crook and Hook
18. First Sword and the Last Broom
19. Mrs Fox and Mr Wolf
20. The Five Scapegraces
21. The Tale of the Cats
22. Chick

List of Stories of “Folktales of Italy-5”

1. The Princesses Wed to the First Passer By
2. The Thirteen Bandits
3. Three Orphans
4. Sleeping Beauty and Her Children
5. Three Chicory Gatherers
6. Beauty With the Seven Dresses
7. Serpent King
8. The Crab With the Golden Eggs
9. Nick Fish
10. Misfortune
11. Pippina Serpent
12. Catherine the Wise
13. Ismailian merchant
14. The Dove
15. Dealer in Peas and Beans
16. The Sultan With the Itch

List of Stories of “Folktales of Italy-6”

1. The Wife Who Lived on Wind
2. Wormwood
3. The King of Spain and the Engkish Milird
4. The Bejeweled Boot
5. Lame Devil
6. Three Tales by Three Sons of Three Merchants
7. The Dove Girl
8. Jesus and St Peter in Sicily
9. The Barber's Timepiece
10. The Marriage of a Queen and a Bandit
11. The Seven Lamb Heads
12. The Two Sea Merchants
13. A Boat Loded With…
14. The King's Son in Henhouse
15. The Mincing Princess
16. Animal Talk and the Nosy Wife
17. The Calf With the Golden Horns
18. The Captain and The General

List of Stories of “Folktales of Italy-7”

1. The Peacock Feather
2. The Garden Witch
3. The Mouse With the Long Tail
4. The Two Cousins
5. The Two Muleteers
6. Giovannuza Fox
7. The Child Who Fed the Crucifix
8. Steward Truth
9. The Foppish King
10. The Princess With Horns
11. Giufa
12. Fra Ignazio
13. Solomon's Advice
14. The Man Who Robbed the Robbers
15. The Lion's Grass
16. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
17. St Anthony's Gift
18. March and the Shepherd
19. John Balento
20. Jump into My Sack

Some Other Books of Italian Folktales in Hindi

1353 **Il Decamerone.** By Giovanni Boccaccio. 3 vols
1550 **Nights of Straparola** By Giovanni Francesco Straparola. 2 vols.
1634 **Il Pentamerone.** By Giambattista Basile. 50 tales. 3 vols
1885 **Italian Popular Tales.** By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आगयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022